6 सूरए अनआम

आयत 1 (सूरए अनआम, आयत 1):

"मैं उस ख़ुदा के नाम से शुरू करता हूँ जो बड़ा मेहरबान रहम वाला है"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): इस आयत में, ईश्वर के नाम से शुरुआत की जा रही है, जिसे "बड़ा मेहरबान रहम वाला" बताया गया है। यह दावा करता है कि ईश्वर का नाम शुभ और दिव्य कार्यों की शुरुआत का कारण है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से:** विज्ञान में कार्यों की शुरुआत प्राकृतिक कारणों से होती है, न कि किसी अलौकिक शक्ति के नाम से। पृथ्वी और ब्रह्मांड की उत्पत्ति के वैज्ञानिक कारण हैं, जैसे बिग बैंग थ्योरी, जो ब्रह्मांड की शुरुआत को स्पष्ट करती है। इस प्रकार, यह आयत कोई वैज्ञानिक आधार नहीं प्रदान करती और केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।

विश्लेषण:

- **न्याय दृष्टिकोण से:** न्याय में "हेतु" (कारण) का सिद्धांत यह है कि किसी भी घटना का होना या किसी कार्य का प्रारंभ एक निश्चित कारण से जुड़ा होता है। इस आयत में ईश्वर के नाम से शुरुआत की जा रही है, लेकिन इस कथन में कोई तर्कसंगत कारण नहीं दिखाया गया है। यह केवल विश्वास आधारित है, न कि किसी भौतिक या वैज्ञानिक कारण पर आधारित।
- **वैश्विक दृष्टिकोण से:** इस आयत में विश्वास का प्रचार किया गया है, जो सबके लिए सार्वभौमिक नहीं हो सकता। सभी लोग ईश्वर के अस्तित्व या उसके गुणों पर विश्वास नहीं करते। इसलिए, इस आयत का संदेश सभी मानवता के लिए सही और स्वीकार्य नहीं हो सकता।

निष्कर्ष:

यह आयत तर्क के बजाय विश्वास पर आधारित है और इसे वैश्विक स्तर पर स्वीकार करना कठिन है। न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से यह एक अवैज्ञानिक और तर्कहीन बयान है, जो हर किसी के लिए प्रासंगिक नहीं हो सकता।

आयत 2 (सूरए अनआम, आयत 2):

"सब तारीफ ख़ुदा ही को (सज़ावार) है जिसने वहुतेरे आसमान और ज़मीन को पैदा किया और उसमें मुख़्तलिफ क़िस्मों की तारीकी रोशनी बनाई फिर (बावजूद उसके) कुफ्फार (औरों को) अपने परवरदिगार के बराबर करते हैं"

न्याय तत्व:

प्रमेय (ज्ञान का वस्तु): इस आयत में ज्ञान के वस्तु (प्रमेय) के रूप में ईश्वर के द्वारा सृष्टि की रचना और उसके बाद के कार्यों का वर्णन किया गया है। इस आयत का उद्देश्य यह है कि लोग ईश्वर की सृष्टि को पहचानते हुए भी उसे नकारते हैं और दूसरों को भगवान के समान मानते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार, ब्रह्मांड और पृथ्वी की उत्पत्ति प्राकृतिक घटनाओं से हुई है। बिग बैंग थ्योरी और इवोल्यूशन थ्योरी जैसे सिद्धांतों के अनुसार, जीवन और ब्रह्मांड की उत्पत्ति में ईश्वर का कोई प्रत्यक्ष हस्तक्षेप नहीं था। सृष्टि की विविधता और जीवन का विकास क्रमिक प्राकृतिक प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप हुआ है।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत यह मानती है कि लोग केवल धर्म के दृष्टिकोण से भगवान को नकारते हैं, लेकिन यह हर व्यक्ति की व्यक्तिगत आस्था पर निर्भर करता है। हर व्यक्ति को अपने धार्मिक विश्वासों के अनुसार अपनी स्वतंत्रता होती है, और इसे सभी के लिए एक सार्वभौमिक सत्य के रूप में स्वीकार करना गलत है। सभी धर्मों और विश्वासों में ईश्वर के अस्तित्व को लेकर मतभेद हैं।**
- **वैश्विक और तर्कसंगत दृष्टिकोण: न्याय दर्शन में प्रमेय का अर्थ है ज्ञान का वह वस्तु जिसे हम समझते हैं या स्वीकार करते हैं। यह आयत दावा करती है कि सृष्टि और उसके कर्ता के बारे में ज्ञान सबके लिए स्पष्ट है, लेकिन यह तथ्य प्रमेय के आधार पर सार्वभौमिक रूप से सत्य साबित नहीं होता।**

निष्कर्ष:

यह आयत सभी के लिए सर्वमान्य नहीं हो सकती, क्योंकि यह केवल एक धर्म और विश्वास पर आधारित है। इसका संदेश और तर्क न्याय और वैश्विक दृष्टिकोण से सही नहीं लगता है।

आयत 3 (सूरए अनआम, आयत 3):

"वह तो वही ख़ुदा है जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर (फिर तुम्हारे मरने का) एक वक़्त मुक़र्रर कर दिया और (अगरचे तुमको मालूम नहीं मगर) उसके नज़दीक (क़यामत) का वक़्त मुक़र्रर है"

न्याय तत्व:

व्याप्ति (अपरिवर्तनीय सहवागिता): इस आयत में यह कहा गया है कि ईश्वर ने मनुष्य को मिट्टी से उत्पन्न किया और उनके मरने का समय और क़यामत का समय पहले से निर्धारित है। इसका तात्पर्य है कि सभी घटनाएँ पहले से निर्धारित हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: विज्ञान के अनुसार, जीवन की उत्पत्ति प्रकृति द्वारा हुई है, जैसे कि जीवन का विकास क्रमिक प्रक्रिया के तहत हुआ (डार्विन का विकासवाद सिद्धांत)। जीवन के समाप्त होने का समय विभिन्न जैविक और पर्यावरणीय कारकों पर निर्भर करता है, और यह निर्धारित नहीं किया जा सकता। क़यामत और मृत्यु के समय का पूर्वनिर्धारण एक धार्मिक विश्वास है, न कि किसी वैज्ञानिक तथ्य का परिणाम।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: इस आयत का दावा कि मृत्यु और क़यामत का समय पहले से निर्धारित है, इसका कोई प्रमाण वैज्ञानिक या भौतिक साक्ष्य से नहीं है। जीवन के घटनाओं को नियंत्रण में रखने की विचारधारा धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जबकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इसे साबित नहीं किया जा सकता।**
- **न्याय तत्व से: व्याप्ति का सिद्धांत यह कहता है कि एक कारण होने पर, उसके साथ निश्चित परिणाम भी होते हैं। लेकिन यहाँ पर जीवन और मृत्यु के लिए कोई स्पष्ट कारण और परिणाम का संबंध नहीं दिखाया गया है, और यह केवल आस्थाओं पर आधारित एक विश्वास है।**

निष्कर्ष:

यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसका दावा अनुभव या प्रमाण से समर्थित नहीं है। यह धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो सभी मानवता के लिए सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकता।

आयत 4 (सूरए अनआम, आयत 4):

"फिर (यही) तुम शक करते हो और वही तो आसमानों में (भी) और ज़मीन में (भी) ख़ुदा है वही तुम्हारे ज़ाहिर व बातिन से (भी) ख़बरदार है और वही जो कुछ भी तुम करते हो जानता है"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): यह आयत दावा करती है कि ईश्वर का सर्वज्ञता (omniscience) है और वह हर चीज़ को जानता है। इसका कारण (हेतु) यह है कि ईश्वर सबके भीतर और बाहर मौजूद है और वह सभी कार्यों से अवगत है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार, किसी भी व्यक्ति के मानसिक और भौतिक कार्यों की पूरी जानकारी केवल उन्हीं तक सीमित रहती है। सर्वज्ञता का कोई प्रमाण नहीं है, और न ही कोई वैज्ञानिक साक्ष्य है जो यह सिद्ध कर सके कि कोई सत्ता हर समय सब कुछ जान सकती है। यह एक धार्मिक और आध्यात्मिक अवधारणा है, न कि वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह दावा सर्वज्ञता का है, जो कि केवल धार्मिक विश्वास और आस्थाओं पर आधारित है। विज्ञान और तर्क के दृष्टिकोण से कोई प्रमाण नहीं है कि कोई शक्ति हर समय सब कुछ जान सकती है। यह एक अपरिभाषित विश्वास है, जो सभी के लिए एक प्रमाणित सत्य नहीं हो सकता।**
- **न्याय के दृष्टिकोण से: यह केवल एक कारण (हेतु) है, जो तर्क और प्रमाण से सिद्ध नहीं हो सकता। एक सार्वभौमिक सत्य के रूप में इसे स्वीकार करना कठिन है, क्योंकि यह किसी तथ्य या प्रमाण पर आधारित नहीं है।**

निष्कर्ष:

यह आयत एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका संदेश सभी मानवता के लिए स्वीकार्य नहीं हो सकता। न्याय और तर्क दृष्टिकोण से इसे सही और प्रमाणिक नहीं माना जा सकता।

आयत 5 (सूरए अनआम, आयत 5):

"और उन (लोगों का) अजब हाल है कि उनके पास ख़ुदा की आयत में से जब कोई आयत आती तो बस ये लोग ज़रुर उससे मुँह फेर लेते थे"

न्याय तत्व:

प्रमेय (ज्ञान का वस्तु): इस आयत में यह कहा जा रहा है कि लोग ईश्वर की आयतों को सुनकर भी नकारते हैं। यह प्रमेय से जुड़ा हुआ है, क्योंकि यह ज्ञान की वस्तु को लेकर चर्चा करता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: यह आयत यह मानती है कि लोग सत्य को नकारते हैं, लेकिन यह मानवीय स्वभाव पर निर्भर करता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण में, एक व्यक्ति सत्य को स्वीकार करने या नकारने के लिए अपने अनुभव और तथ्यों का पालन करता है। यह किसी व्यक्तिगत विश्वास या भावना पर आधारित होता है, न कि किसी धार्मिक आयत पर।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह दावा करने की कोशिश की जा रही है कि कुछ लोग सत्य को नकारते हैं, लेकिन यह उनकी आ**

स्था और व्यक्तिगत विश्वासों पर निर्भर करता है। यह विचार सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकता, क्योंकि हर व्यक्ति की सोच और मान्यताएँ अलग होती हैं।

निष्कर्ष:

यह आयत केवल एक दृष्टिकोण से संबंधित है, जो हर किसी के लिए सार्वभौमिक सत्य नहीं हो सकता। इसका संदेश सभी के लिए नहीं हो सकता।

आयत 6 से 10 (सूरए अनआम, आयत 6-10) का आलोचनात्मक विश्लेषण

आयत 6:

"चुनान्चे जब उनके पास (कुरान बरहक़) आया तो उसको भी झुठलाया तो ये लोग जिसके साथ मसख़रापन कर रहे है उनकी हक़ीक़त उन्हें अनक़रीब ही मालूम हो जाएगी"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): इस आयत में, यह कहा गया है कि कुरान को झूठा ठहराने वाले लोग इसकी वास्तविकता को बाद में समझेंगे। यह कथन यह दर्शाता है कि किसी भी झूठे कार्य का अंत सच्चाई से होता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: आधुनिक विज्ञान में सत्य को प्रमाण, तथ्य और तर्क के आधार पर स्वीकार किया जाता है, न कि केवल आस्था या विश्वास के आधार पर। कुरान या किसी अन्य धार्मिक ग्रंथ के सत्य को साबित करने के लिए कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। यह आयत केवल एक भविष्यवाणी करती है, जो बिना किसी तर्क के है।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत उन लोगों को चेतावनी देती है जो कुरान को झूठा मानते हैं, लेकिन यह किसी प्रमाण या तर्क के बिना दावा करती है कि सच्चाई आखिरकार सामने आएगी। इस कथन का वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: इस आयत में कोई स्पष्ट कारण या प्रमाण नहीं दिया गया कि कुरान के सत्य को कैसे प्रमाणित किया जाएगा। यह केवल विश्वास और भविष्यवाणी पर आधारित है।**

निष्कर्ष:

यह आयत एक धार्मिक विश्वास को प्रस्तुत करती है, जो केवल भविष्यवाणी पर आधारित है, और इसका कोई तर्कसंगत या वैज्ञानिक आधार नहीं है।

आयत 7:

"क्या उन्हें सूझता नहीं कि हमने उनसे पहले कितने गिरोह (के गिरोह) हलाक कर डाले जिनको हमने रुए ज़मीन मे वह (क़ूवत) कुदरत अता की थी जो अभी तक तुमको नहीं दी और हमने आसमान तो उन पर मूसलाधार पानी बरसता छोड़ दिया था और उनके (मकानात के) नीचे बहती हुयी नहरें बना दी थी (मगर) फिर भी उनके गुनाहों की वजह से उनको मार डाला और उनके बाद एक दूसरे गिरोह को पैदा कर दिया"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): इस आयत में पुराने समय के उन समुदायों का उदाहरण दिया गया है जो अपने गुनाहों के कारण नष्ट हो गए थे। यह कथन यह बताता है कि किसी समाज की बर्बादी का कारण उसके कर्म होते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: यह आयत प्राचीन बर्बाद हुए समाजों के बारे में बात करती है, जो प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़, भूकंप, आदि के कारण नष्ट हुए थे। लेकिन इन घटनाओं का कारण प्राकृतिक था, न कि ईश्वर द्वारा दिया गया शाप। प्राकृतिक घटनाएँ और आपदाएँ विज्ञान द्वारा समझाई जा सकती हैं, न कि धार्मिक कारणों से।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से पुराने समुदायों के पतन को व्यक्त करती है, लेकिन यह वैज्ञानिक तथ्यों के खिलाफ है। प्राकृतिक आपदाओं के कारण समाजों का पतन एक भौतिक प्रक्रिया है, न कि केवल ईश्वर के न्याय का परिणाम।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत एक तर्क प्रस्तुत करती है कि गुनाहों के कारण लोग नष्ट होते हैं, लेकिन यह तर्क किसी विज्ञान या प्रमाण से समर्थित नहीं है। यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।**

निष्कर्ष:

यह आयत किसी प्राकृतिक घटना को धार्मिक कारण से जोड़ने की कोशिश करती है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से गलत है। यह आयत किसी तर्क या प्रमाण पर आधारित नहीं है।

आयत 8:

"और (ऐ रसूल) अगर हम कागज़ पर (लिखी लिखाई) किताब (भी) तुम पर नाज़िल करते और ये लोग उसे अपने हाथों से छू भी लेते फिर भी कुफ्फार (न मानते और) कहते कि ये तो बस खुला हुआ जादू है"

न्याय तत्व:

प्रमेय (ज्ञान का वस्तु): यह आयत कहती है कि यदि ईश्वर कुरान को कागज पर लिखकर भेजते और लोग उसे स्वयं छूते, तो भी वे उसे जादू मानते। यह प्रमेय पर आधारित है, क्योंकि यह ज्ञान की वस्तु (कुरान) की विश्वसनीयता पर सवाल उठाता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: विज्ञान में, किसी ज्ञान का मूल्य उसकी प्रमाणिकता और सत्यता पर निर्भर करता है। अगर कोई पुस्तक या संदेश वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सही नहीं है, तो उसे स्वीकार नहीं किया**

जाएगा, भले ही वह किसी प्राचीन समय में लिखा गया हो। यह आयत इस बात को मानती है कि कुछ लोग किसी भी प्रमाण को नकार देंगे, जो वास्तविकता के खिलाफ हो।

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से:** यह आयत यह दर्शाती है कि लोग कुरान को नकारते हैं, चाहे जो भी प्रमाण दिया जाए। यह बयान दुनिया भर के अलग-अलग धार्मिक विश्वासों और तर्कों के खिलाफ है, क्योंकि कुछ लोग किसी भी धर्म या विश्वास को स्वीकार नहीं करते।
- **न्याय दृष्टिकोण से:** प्रमेय का सिद्धांत कहता है कि कोई भी ज्ञान तभी स्वीकार्य होता है जब वह प्रमाणित और तर्कसंगत हो। इस आयत में कुरान के सत्य को साबित करने के लिए कोई प्रमाण नहीं दिया गया है।

निष्कर्ष:

यह आयत यह कहती है कि लोग प्रमाणों को नकारते हैं, लेकिन यह किसी वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार पर आधारित नहीं है। इसका संदेश हर किसी के लिए सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकता।

आयत 9:

"और (ये भी) कहते कि उस (नबी) पर कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं नाज़िल किया गया (जो साथ साथ रहता) हालाँकि अगर हम फ़रिश्ता भेज देते तो (उनका) काम ही तमाम हो जाता (और) फिर उन्हें मोहलत भी न दी जाती"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): इस आयत में कहा गया है कि अगर ईश्वर फरिश्ते भेजते, तो उनके कार्य समाप्त हो जाते। यह कहता है कि ईश्वर ने फरिश्ते नहीं भेजे क्योंकि लोग किसी कारण से नहीं मानते थे।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से:** विज्ञान में, जब भी किसी घटना का कारण पूछा जाता है, तो इसका उत्तर प्रमाण और तर्क से दिया जाता है। यह आयत फरिश्तों की आवश्यकता और उनके न आने के कारण को एक धार्मिक दृष्टिकोण से बताती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत यह स्वीकार करती है कि फरिश्ते भेजने से कोई निश्चित परिणाम होता, लेकिन यह धर्म से जुड़ा विश्वास है, न कि तर्क या विज्ञान पर आधारित कोई स्पष्ट कारण।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: यहाँ पर कोई तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया है कि फरिश्ते क्यों नहीं भेजे गए, यह केवल एक आस्थात्मक कथन है।**

निष्कर्ष:

यह आयत किसी तर्क या प्रमाण पर आधारित नहीं है। यह केवल एक धार्मिक विश्वास है, जिसे हर किसी के लिए सार्वभौमिक रूप से स्वीकार करना कठिन है।

आयत 10:

"और अगर हम फ़रिश्ते को नबी बनाते तो (आख़िर) उसको भी मर्द सूरत बनाते और जो सुबहे ये लोग कर रहे हैं वही सुबहे (गोया) हम ख़ुद उन पर (उस वक़्त भी) उठा देते"

न्याय तत्व:

प्रमेय (ज्ञान का वस्तु): यह आयत फरिश्ते को एक नबी के रूप में भेजने की बात करती है, लेकिन इसे मर्द की सूरत में बदलने का विचार प्रस्तुत करती है, जो प्रमेय के सिद्धांत से जुड़ा है क्योंकि यह ज्ञान की वस्तु की रूपरेखा को बदलता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: विज्ञान में किसी भी विचार को प्रमाणित करने के लिए प्रमाण की आवश्यकता होती है। यह आयत फरिश्तों के बारे में केवल एक धार्मिक विचार प्रस्तुत करती है, न कि किसी वैज्ञानिक प्रमाण के रूप में।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत एक धार्मिक विश्वास प्रस्तुत करती है कि फरिश्ते मर्द के रूप में दिखाई देते। यह कोई सार्वभौमिक सत्य नहीं है और न ही इसे वैज्ञानिक या तर्कसंगत रूप से प्रमाणित किया जा सकता है।**

- **न्याय दृष्टिकोण से: प्रमेय के तहत यह आयत अपनी स्थापना पर आधारित नहीं है, क्योंकि यह कोई प्रमाण या तर्क प्रस्तुत नहीं करती है।**

निष्कर्ष:

यह आयत एक विश्वास पर आधारित है और इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। इसे वैश्विक स्तर पर स्वीकार करना कठिन है।

आयत 11 से 15 (सूरए अनआम, आयत 11-15) का आलोचनात्मक विश्लेषण

आयत 11:

"तुम से पहले (भी) पैग़म्बरों के साथ मसख़रापन किया गया है पस जो लोग मसख़रापन करते थे उनको उस अज़ाब ने जिसके ये लोग हँसी उड़ाते थे घेर लिया"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): इस आयत में यह बताया गया है कि जो लोग पैग़म्बरों का मजाक उड़ाते थे, उन्हें सजा मिली। यह एक कारण (गुनाह) और परिणाम (सजा) के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: यह आयत एक धार्मिक घटना पर आधारित है, जिसमें यह कहा गया है कि मजाक उड़ाने वालों को सजा दी जाती है। हालांकि, विज्ञान इस प्रकार की घटनाओं को प्रमाणित करने के लिए किसी साक्ष्य या तर्क की आवश्यकता करता है, न कि सिर्फ विश्वास पर आधारित पूर्वानुमान।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत केवल विश्वास पर आधारित है और वैज्ञानिक तरीके से इसका प्रमाण नहीं दिया जा सकता है। धार्मिक दृष्टिकोण से इसे एक चेतावनी के रूप में देखा जा सकता है।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत उन लोगों के लिए चेतावनी देती है जो पैग़म्बरों का मजाक उड़ाते हैं, लेकिन यह किसी तर्क या प्रमाण पर आधारित नहीं है। यह आस्था और विश्वास पर आधारित है।**

निष्कर्ष:

यह आयत केवल विश्वास पर आधारित है और इसका कोई तर्कसंगत या वैज्ञानिक आधार नहीं है। इसका उद्देश्य केवल धार्मिक विश्वास को मजबूत करना है।

आयत 12:

"तुमसे कहो कि ज़रूर रुए ज़मीन पर चल फिर कर देखो तो कि (अम्बिया के) झुठलाने वालो का क्या (बुरा) अन्जाम हुआ"

न्याय तत्वः

प्रमेय (ज्ञान का वस्तु): यह आयत प्राचीन समय के उन लोगों के बारे में बताती है जो पैग़ाम्बरों का इनकार करते थे। यह प्रमेय के सिद्धांत से संबंधित है, क्योंकि यह किसी ज्ञान या वस्तु (पैग़ाम्बर का इनकार) के परिणाम (सजा) को दर्शाता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोणः

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से:** आयत प्राचीन समुदायों के पतन और उनके परिणाम की बात करती है। विज्ञान में, हम प्राचीन सभ्यताओं के पतन को प्राकृतिक कारणों जैसे युद्ध, पर्यावरणीय परिवर्तन या सामाजिक असंतुलन से जोड़ सकते हैं, न कि धार्मिक कारणों से।

विश्लेषणः

- **वैश्विक दृष्टिकोण से:** यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से पहले के समुदायों के पतन के बारे में बताती है, लेकिन यह किसी वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार पर नहीं खड़ी है।
- **न्याय दृष्टिकोण से:** यह आयत प्रमेय के आधार पर यह दिखाने की कोशिश करती है कि जो लोग पैग़ाम्बरों को झूठा मानते थे, उनका अंत बुरा था, लेकिन यह किसी प्रमाणित कारण से नहीं जुड़ी हुई है।

निष्कर्षः

यह आयत एक धार्मिक विश्वास प्रस्तुत करती है, लेकिन इसे वैज्ञानिक या तर्कसंगत दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता है।

आयत 13:

"तुमसे पूछो तो कि (भला) जो कुछ आसमान और ज़मीन में है किसका है (वह जवाब देगें) तुम ख़ुद कह दो कि ख़ास ख़ुदा का है उसने अपनी ज़ात पर मेहरबानी लाज़िम कर ली है वह तुम सब के सब को क़यामत के दिन जिसके आने मे कुछ शक नहीं ज़रुर जमा करेगा (मगर) जिन लोगों ने अपना आप नुक़सान किया वह तो (क़यामत पर) ईमान न लाएंगे"

न्याय तत्वः

हेतु (कारण): इस आयत में यह बताया गया है कि जो लोग ईश्वर पर विश्वास नहीं करते, उनका अंत बुरा होगा। यह कारण (ईश्वर के प्रति अनास्था) और परिणाम (क़यामत पर सजा) का संबंध है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोणः

- **विज्ञान के दृष्टिकोण सेः** यह आयत क़यामत के बारे में कहती है, लेकिन कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है जो क़यामत या जीवन के बाद के अस्तित्व को प्रमाणित करता हो। विज्ञान में किसी भी घटना का मूल्यांकन तथ्यों और प्रमाणों के आधार पर होता है, जबकि यह आयत विश्वास पर आधारित है।

विश्लेषणः

- **वैश्विक दृष्टिकोण सेः** यह आयत यह बताती है कि जो लोग क़यामत पर विश्वास नहीं करते, उनका अंत बुरा होगा। यह एक धार्मिक विश्वास है, जिसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकारना सभी के लिए संभव नहीं है।
- **न्याय दृष्टिकोण सेः** इस आयत में कोई तर्क या प्रमाण नहीं है कि क़यामत का दिन सचमुच आएगा। यह केवल विश्वास और आस्था पर आधारित है।

निष्कर्षः

यह आयत एक विश्वास पर आधारित है, जिसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। इसका संदेश सिर्फ आस्था और विश्वास पर निर्भर करता है।

आयत 14:

"हालाँकि (ये नहीं समझते कि) जो कुछ रात को और दिन को (रुए ज़मीन पर) रहता (सहता) है (सब) ख़ास उसी का है और वही (सब की) सुनता (और सब कुछ) जानता है"

न्याय तत्वः

प्रमेय (ज्ञान का वस्तु): यह आयत यह बताती है कि सभी चीज़ें ईश्वर के नियंत्रण में हैं और वही सब कुछ जानता है। यह प्रमेय के सिद्धांत से संबंधित है, क्योंकि यह ज्ञान की वस्तु को परिभाषित करती है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: यह आयत इस विचार को प्रस्तुत करती है कि सब कुछ ईश्वर के नियंत्रण में है। जबकि विज्ञान में, हम प्राकृतिक घटनाओं को प्राकृतिक नियमों के तहत समझते हैं, न कि किसी अलौकिक शक्ति द्वारा नियंत्रित होते हुए।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत धार्मिक विश्वास को प्रस्तुत करती है, लेकिन यह कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं देती। प्राकृतिक घटनाओं और अस्तित्व की व्याख्या विज्ञान द्वारा की जाती है, न कि केवल धार्मिक दृष्टिकोण से।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: इस आयत में किसी प्रमाण या तर्क का कोई उल्लेख नहीं है, यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।**

निष्कर्ष:

यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से सच्चाई को व्यक्त करती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। यह एक विश्वास पर आधारित है।

आयत 15:

"ऐ रसूल) तुम कह दो कि क्या ख़ुदा को जो सारे आसमान व ज़मीन का पैदा करने वाला है छोड़ कर दूसरे को (अपना) सरपरस्त बनाओ और वही (सब को) रोज़ी देता है और उसको कोई रोज़ी नहीं देता (ऐ रसूल) तुम कह दो कि मुझे हुक्म दिया गया है कि सब से पहले इस्लाम लाने वाला मैं हूँ और (ये भी कि ख़बरदार) मुशरेकीन से न होना"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): इस आयत में यह कहा गया है कि केवल ईश्वर ही सभी चीज़ों का नियंत्रण करता है और वह रोज़ी देता है। यह कारण (ईश्वर का नियंत्रण) और परिणाम (इस्लाम के प्रति आस्था) का संबंध है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से:** आयत में यह कहा गया है कि ईश्वर ही रोज़ी देता है, लेकिन यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता है। विज्ञान में रोज़ी या संसाधनों का वितरण प्राकृतिक या सामाजिक कारणों पर आधारित होता है, न कि किसी अलौकिक शक्ति पर।

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से:** यह आयत ईश्वर के नियंत्रण और उसकी कृपा पर आधारित है, लेकिन यह किसी वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार से समझी नहीं जा सकती।
- **न्याय दृष्टिकोण से:** आयत केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, और इसका कोई प्रमाण या तर्क नहीं है जो इसे तर्कसंगत या वैज्ञानिक रूप से सही साबित करता हो।

निष्कर्ष:

यह आयत एक विश्वास पर आधारित है, जिसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण से सच्चाई को प्रस्तुत करती है।

सारांश:

इन आयतों में धार्मिक विश्वासों और क़यामत के दिन के बारे में बताया गया है, लेकिन इनमें कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं दिया गया है। ये आयतें विश्वास और आस्था पर आधारित हैं, और इनके विचारों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समर्थन नहीं मिल सकता है।

आयत 16 से 20 (सूरए अनआम, आयत 16-20) का आलोचनात्मक विश्लेषण

आयत 16:

"तुम कहो कि अगर मैं नाफरमानी करूँ तो बेशक एक बड़े (सख़्त) दिल के अज़ाब से डरता हूँ"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): इस आयत में पैग़म्बर को नाफरमानी के परिणाम के बारे में चेतावनी दी गई है। यहां कारण (नाफरमानी) और परिणाम (अज़ाब) का संबंध स्पष्ट किया गया है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से:** आयत में किसी विशेष प्रकार के अज़ाब (सजा) का उल्लेख है, लेकिन यह पूरी तरह से विश्वास पर आधारित है। विज्ञान में किसी धार्मिक सजा का कोई साक्ष्य या प्रमाण नहीं है।

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से:** यह आयत केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है और इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। यह सामान्य चेतावनी के रूप में प्रस्तुत की गई है, जिसका उद्देश्य व्यक्तिगत आस्था को बढ़ाना है।
- **न्याय दृष्टिकोण से:** यह आयत हेटु (कारण) और परिणाम के बीच संबंध स्थापित करती है, लेकिन इसमें तर्क या प्रमाण का अभाव है। यह केवल धार्मिक आस्था पर निर्भर है।

निष्कर्ष:

यह आयत विश्वास पर आधारित है और इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। इसका उद्देश्य एक चेतावनी देना है, जो केवल धार्मिक दृष्टिकोण से समझी जा सकती है।

आयत 17:

"उस दिन जिस (के सर) से अज़ाब टल गया तो (समझो कि) ख़ुदा ने उस पर (बड़ा) रहम किया और यही तो सरीही कामयाबी है"

न्याय तत्व:

प्रमेय (ज्ञान का वस्तु): इस आयत में यह कहा गया है कि जो व्यक्ति अज़ाब से बच जाता है, वह ईश्वर के रहम से बचता है, और यह वास्तविक सफलता है। यह प्रमेय के सिद्धांत से संबंधित है क्योंकि यह एक वस्तु (रहम) को सत्य के रूप में प्रस्तुत करती है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से:** आयत क़यामत और अज़ाब के विचारों पर आधारित है। विज्ञान में इस प्रकार की घटनाओं को प्रमाणित करने के लिए कोई साक्ष्य नहीं है। इसके बजाय, प्राकृतिक घटनाएं और उनके परिणामों को प्राकृतिक और सामाजिक सिद्धांतों से समझा जाता है।

विश्लेषण:

- वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। यह केवल आस्था पर आधारित है, और इसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकारना संभव नहीं है।
- न्याय दृष्टिकोण से: इस आयत में केवल एक विश्वास आधारित वचन है, जिसमें यह कहा गया है कि जो व्यक्ति अज़ाब से बच जाएगा, वह ईश्वर के रहम का पात्र होगा, लेकिन इसका कोई ठोस प्रमाण या तर्क नहीं है।

निष्कर्ष:

यह आयत एक धार्मिक विश्वास को प्रकट करती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। यह सिर्फ आस्था पर आधारित है।

आयत 18:

"और अगर ख़ुदा तुम को किसी क़िस्म की तकलीफ पहुचाए तो उसके सिवा कोई उसका दफा करने वाला नहीं है और अगर तुम्हें कुछ फायदा) पहुँचाए तो भी (कोई रोक नहीं सकता क्योंकि) वह हर चीज़ पर क़ादिर है"

न्याय तत्व:

व्याप्ति (संपूर्णता): इस आयत में यह कहा गया है कि ईश्वर हर चीज़ पर क़ादिर है और कोई भी चीज़ उसे रोक नहीं सकती। यह व्याप्ति के सिद्धांत से संबंधित है, जिसमें किसी घटना की संपूर्णता की बात की जाती है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- विज्ञान के दृष्टिकोण से: इस आयत में कुदरत की शक्ति का वर्णन किया गया है। हालांकि, विज्ञान में हम घटनाओं और परिणामों को प्राकृतिक और भौतिक कारणों से समझते हैं। "हर चीज़ पर क़ादिर होने" का विचार अलौकिक है और इसे तर्कसंगत या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है।

विश्लेषण:

- वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत ईश्वर की सर्वशक्तिमानता का वर्णन करती है, लेकिन यह विचार वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझा नहीं जा सकता।

- न्याय दृष्टिकोण से: इस आयत में एक अत्यधिक सार्वभौमिक दावे का उल्लेख किया गया है, लेकिन इसमें कोई स्पष्ट प्रमाण या तर्क नहीं है, और यह सिर्फ विश्वास पर आधारित है।

निष्कर्ष:

यह आयत विश्वास पर आधारित है और इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण से ही समझी जा सकती है।

आयत 19:

"वही अपने तमाम बन्दों पर ग़ालिब है और वह वाक़िफ़कार हकीम है"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): इस आयत में यह कहा गया है कि ईश्वर अपने बंदों पर पूरी तरह से ग़ालिब है और वह पूरी तरह से समझने वाला है। यह कारण और परिणाम का संबंध स्थापित करता है, जहाँ कारण (ईश्वर का ज्ञान और शक्ति) और परिणाम (बंदों पर प्रभुत्व) स्पष्ट हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- विज्ञान के दृष्टिकोण से: यह आयत धार्मिक विश्वास पर आधारित है। विज्ञान में प्रभुत्व या नियंत्रण की कोई भौतिक परिभाषा नहीं होती, और किसी भी अलौकिक शक्ति का अस्तित्व को प्रमाणित नहीं किया जा सकता है।

विश्लेषण:

- वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत ईश्वर की सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमानता को प्रस्तुत करती है, लेकिन यह विचार वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझा नहीं जा सकता।
- न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत हेटु (कारण) और परिणाम के आधार पर केवल विश्वास पर आधारित है, और इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत प्रमाण नहीं है।

निष्कर्ष:

यह आयत धार्मिक विश्वासों पर आधारित है और इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। इसका उद्देश्य विश्वास को बढ़ाना है।

आयत 20:

"(ऐ रसूल) तुम पूछो कि गवाही में सबसे बढ़के कौन चीज़ है तुम खुद ही कह दो कि मेरे और तुम्हारे दरम्यिान ख़ुदा गवाह है और मेरे पास ये कुरान वही के तौर पर इसलिए नाज़िल किया गया ताकि मैं तुम्हें और जिसे (उसकी) ख़बर पहुँचे उसके ज़रिए से डराओ क्या तुम यक़ीनन यह गवाही दे सकते हो कि अल्लाह के साथ और दूसरे माबूद भी हैं (ऐ रसूल) तुम कह दो कि मै तो उसकी गवाही नहीं देता (तुम दिया करो) तुम (उन लोगों से) कहो कि वह तो बस एक ही ख़ुदा है और जिन चीज़ों को तुम (ख़ुदा का) शरीक बनाते हो"

न्याय तत्व:

प्रमेय (ज्ञान का वस्तु): इस आयत में यह कहा गया है कि अल्लाह की गवाही सर्वोपरि है और इस्लाम का संदेश सत्य है। यह प्रमेय से संबंधित है, क्योंकि यह एक वस्तु (गवाही) के सत्य को प्रमाणित करने का प्रयास करती है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से:** यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से गवाही के विषय में है, लेकिन यह किसी वैज्ञानिक या तर्कसंगत परीक्षण से साबित नहीं की जा सकती। गवाही का विचार विश्वास पर आधारित है, और इसे विज्ञान से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से:** यह आयत यह बताती है कि ईश्वर एक है और कोई और माबूद नहीं हो सकता, लेकिन यह एक धार्मिक दृष्टिकोण है, जो हर व्यक्ति के लिए स्वीकार्य नहीं हो सकता है।
- **न्याय दृष्टिकोण से:** इस आयत में गवाही और सत्य की बात की गई है, लेकिन इसका कोई प्रमाण या तर्क नहीं है, जो इसे वैज्ञानिक रूप से सही साबित करे।

निष्कर्ष:

यह आयत धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। यह सिर्फ विश्वास और आस्था पर निर्भर करती है।

सारांश:

इन आयतों में ईश्वर के प्रभुत्व, उसकी शक्ति और एकता के बारे में बताया गया है, लेकिन इनका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। ये आयतें धार्मिक विश्वासों और आस्थाओं पर आधारित हैं, जिन्हें वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है।

आयत 21 से 25 (सूरए अनआम, आयत 21-25) का आलोचनात्मक विश्लेषण

आयत 21:

"मै तो उनसे बेज़र हूँ जिन लोगों को हमने किताब अता फरमाई है (यहूद व नसारा) वह तो जिस तरह अपने बाल बच्चों को पहचानते है उसी तरह उस नबी (मोहम्मद) को भी पहचानते हैं (मगर) जिन लोगों ने अपना आप नुक़सान किया वह तो (किसी तरह) इमान न लाएगें"

न्याय तत्वः

प्रमेय (ज्ञान का वस्तु): इस आयत में यह बताया गया है कि कुछ लोग अपने बच्चों की तरह नबी (मोहम्मद) को पहचानते हैं, लेकिन जो लोग अपने आप को नुक़सान पहुंचाते हैं, वे इमान नहीं लाएंगे। यह प्रमेय से संबंधित है क्योंकि यह एक वस्तु (इमान) के सत्य को प्रमाणित करने का प्रयास करती है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: आयत का संदेश मानवता के विश्वास और आस्था पर आधारित है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। "नुक़सान" या "इमान" जैसे व्यक्तिगत विचारों का विज्ञान से कोई तालमेल नहीं है।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: इस आयत में धर्म के प्रति व्यक्तिगत विश्वास को महत्व दिया गया है, लेकिन इसका संदेश सार्वभौमिक रूप से सभी के लिए स्वीकार्य नहीं हो सकता।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: आयत केवल विश्वास पर आधारित है और इसका कोई ठोस तर्क या प्रमाण नहीं है।**

निष्कर्ष:

यह आयत धार्मिक आस्था और विश्वास पर आधारित है, जिसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण से समझी जा सकती है।

आयत 22:

"और जो शख़्स ख़ुदा पर झूठ बोहतान बाधें या उसकी आयतों को झुठलाए उससे बढ़के ज़ालिम कौन होगा और ज़ालिमों को हरगिज़ नजात न होगी"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): इस आयत में यह कहा गया है कि जो लोग ईश्वर पर झूठ बोलते हैं या उसकी आयतों को झुठलाते हैं, वे ज़ालिम होते हैं। यहां कारण (झूठ बोलना और आयतों को झुठलाना) और परिणाम (ज़ालिम होना) का संबंध स्थापित किया गया है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: झूठ बोलने और आयतों को झुठलाने के बारे में यह आयत केवल धार्मिक दृष्टिकोण से बात करती है, जो वैज्ञानिक आधार से मेल नहीं खाती। विज्ञान में झूठ और सच्चाई का निर्धारण तर्क और प्रमाण के आधार पर किया जाता है, न कि धार्मिक विश्वासों के आधार पर।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत केवल धार्मिक आस्था पर आधारित है, और यह हर व्यक्ति के लिए स्वीकार्य नहीं हो सकती।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत हेटु (कारण) और परिणाम (ज़ालिम होना) के संबंध को स्थापित करती है, लेकिन इसमें तर्क या प्रमाण का अभाव है।**

निष्कर्ष:

यह आयत धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, जिसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। यह विश्वास पर निर्भर करती है, जिसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकारना कठिन है।

आयत 23:

"और (उस दिन को याद करो) जिस दिन हम उन सबको जमा करेंगे फिर जिन लोगों ने शिर्क किया उनसे पूछेगें कि जिनको तुम (ख़ुदा का) शरीक ख़्याल करते थे कहाँ हैं"

न्याय तत्व:

व्याप्ति (संपूर्णता): इस आयत में यह कहा गया है कि एक दिन सभी लोगों को जमा किया जाएगा और जिन लोगों ने शिर्क किया, उनसे पूछा जाएगा कि उन्होंने जिनको ईश्वर का शरीक माना, वे कहां हैं। यह व्याप्ति से संबंधित है, क्योंकि एक दिन सभी को एक साथ लाकर इस सवाल का उत्तर पूछा जाएगा।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: यह आयत क़यामत और शिर्क की अवधारणाओं पर आधारित है। विज्ञान में किसी भी प्रकार के अलौकिक या भविष्यवाणी के साक्ष्य नहीं होते, और इस प्रकार की घटनाओं को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत केवल विश्वास पर आधारित है और किसी प्रकार के वैज्ञानिक प्रमाण से इसका समर्थन नहीं किया जा सकता है।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत एक घटना का वर्णन करती है, जिसका कोई प्रमाण या तर्क नहीं है।**

निष्कर्ष:

यह आयत केवल विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।

आयत 24:

"फिर उनकी कोई शरारत (बाक़ी) न रहेगी बल्कि वह तो ये कहेगें क़सम है उस ख़ुदा की जो हमारा पालने वाला है हम किसी को उसका शरीक नहीं बनाते थे"

न्याय तत्व:

प्रमेय (ज्ञान का वस्तु): इस आयत में यह कहा गया है कि शिर्क करने वाले लोग क़यामत के दिन यह स्वीकार करेंगे कि वे किसी को ईश्वर का शरीक नहीं मानते थे। यह प्रमेय से संबंधित है, क्योंकि यह सत्य के बारे में एक गवाही देता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: यह आयत क़यामत के दिन की एक घटना का विवरण करती है, जो किसी वैज्ञानिक सिद्धांत से प्रमाणित नहीं किया जा सकता। यह धार्मिक विश्वासों पर आधारित है।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत उन लोगों की मानसिकता को व्यक्त करती है, जिन्होंने ईश्वर के साथ शरीक ठहराया था, लेकिन यह विचार हर किसी के लिए स्वीकार्य नहीं हो सकता है।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: इस आयत में कोई तर्क नहीं है, बल्कि यह विश्वास पर आधारित है कि क़यामत के दिन लोग अपनी गलती स्वीकार करेंगे।**

निष्कर्ष:

यह आयत विश्वास पर आधारित है, जिसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।

आयत 25:

"(ऐ रसूल भला) देखो तो ये लोग अपने ही ऊपर आप किस तरह झूठ बोलने लगे और ये लोग (दुनिया में) जो कुछ इफ़तेरा परदाज़ी (झूठी बातें) करते थे"

न्याय तत्व:

व्याप्ति (संपूर्णता): इस आयत में यह कहा गया है कि लोग झूठ बोलकर अपने आप को धोखा दे रहे हैं और इस झूठ को फैलाने का काम कर रहे हैं। यह व्याप्ति से संबंधित है, क्योंकि यह पूरी मानवता को प्रभावित करने वाली एक सामान्य प्रवृत्ति को उजागर करती है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: यह आयत सामाजिक व्यवहार के बारे में है, जिसमें झूठ बोलने की प्रवृत्ति पर चर्चा की जा रही है। यह किसी वैज्ञानिक आधार से जुड़ी नहीं है, बल्कि यह मानव समाज के विश्वासों और व्यवहारों से संबंधित है।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से:** यह आयत केवल विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है। झूठ बोलने की अवधारणा सामाजिक दृष्टिकोण से स्वीकार्य है, लेकिन इसे वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित करना संभव नहीं है।
- **न्याय दृष्टिकोण से:** यह आयत केवल एक सामान्य बयान है, जिसमें लोगों द्वारा झूठ बोलने की प्रवृत्ति का वर्णन किया गया है, जिसका कोई तर्क नहीं दिया गया है।

निष्कर्ष:

यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से आधारित है, और इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।

सारांश:

इन आयतों में ईश्वर के प्रति विश्वास, शिर्क, और क़यामत की अवधारणाओं पर आधारित विचार प्रस्तुत किए गए हैं। ये आयतें धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं, लेकिन इनका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। इनका उद्देश्य विश्वास और आस्था को बढ़ावा देना है, लेकिन ये सार्वभौमिक रूप से सभी के लिए स्वीकार्य नहीं हो सकतीं।

आयत 26 से 30 (सूरए अनआम, आयत 26-30) का आलोचनात्मक विश्लेषण

आयत 26:

"वह सब ग़ायब हो गयी और बाज़ उनमें के ऐसे भी हैं जो तुम्हारी (बातों की) तरफ कान लगाए रहते हैं और (उनकी हठ धर्मी इस हद को पहुँची है कि गोया हमने ख़ुद उनके दिलों पर परदे डाल दिए हैं और उनके कानों में बहरापन पैदा कर दिया है कि उसे समझ न सकें और अगर वह सारी (ख़ुदाई के) मौजिज़े भी देखे लें तब भी ईमान न लाएगें यहाँ तक (हठ धर्मी पहुची) कि जब तुम्हारे पास तुम से उलझे हुए आ निकलते हैं तो कुफ़्फ़ार (कुरान लेकर) कहा बैठे है (कि भला इसमें रखा ही क्या है) ये तो अगलों की कहानियों के सिवा कुछ भी नहीं"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): इस आयत में यह बताया गया है कि कुछ लोग केवल अपने हठधर्मिता के कारण, जो उनका मानसिक बंदपन है, ईमान नहीं लाएंगे। उन्हें चाहे जो चमत्कारी संकेत दिखाए जाएं, वे मानने के लिए तैयार नहीं हैं। यह हेटु तत्व से संबंधित है, क्योंकि इसका कारण (हठधर्मिता) और उसका परिणाम (ईमान न लाना) स्पष्ट रूप से कहा गया है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से:** यह आयत मानसिक स्थिति और विश्वास के बारे में है। विज्ञान में इस प्रकार के मानसिक तात्त्विक परिवर्तनों को तर्कसंगत रूप से सिद्ध करना मुश्किल है। यह केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण है और इसे वैज्ञानिक तथ्यों से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से:** इस आयत का संदेश केवल आस्था और विश्वास से संबंधित है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से अनुभव करता है। यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकता।
- **न्याय दृष्टिकोण से:** यह आयत हठधर्मिता को एक मानसिक स्थिति के रूप में प्रस्तुत करती है, लेकिन इसके बारे में तर्क या प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष:

यह आयत विश्वास और मानसिक स्थिति पर आधारित है और इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है।

आयत 27:

"और ये लोग (दूसरों को भी) उस के (सुनने से) से रोकते हैं और ख़ुद तो अलग थलग रहते ही हैं और (इन बातों से) बस आप ही अपने को हलाक करते हैं और (अफसोस) समझते नहीं"

न्याय तत्व:

व्याप्ति (संपूर्णता): यह आयत बताती है कि ये लोग न केवल खुद को बल्कि दूसरों को भी ईश्वर की आयतों को सुनने से रोकते हैं। इसका उद्देश्य पूरे समाज को प्रभावित करने वाली एक अव्यवस्थित मानसिकता को प्रकट करना है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से:** यह आयत एक सामाजिक व्यवहार और मानसिक स्थिति को व्यक्त करती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। विज्ञान में मानसिकता और विश्वास का निर्धारण व्यक्तिगत और सांस्कृतिक दृष्टिकोणों पर आधारित होता है, न कि धर्म आधारित सिद्धांतों पर।

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत समाज में विभाजन और विश्वास के प्रति नकारात्मक मानसिकता को दर्शाती है, लेकिन इस पर सार्वभौमिक सत्यता नहीं हो सकती।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत केवल एक सामाजिक टिप्पणी है, जिसका कोई ठोस तर्क या प्रमाण नहीं है।**

निष्कर्ष:

यह आयत एक सामाजिक और मानसिक दृष्टिकोण से आधारित है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।

आयत 28:

"(ऐ रसूल) अगर तुम उन लोगों को उस वक़्त देखते (तो ताज्जुब करते) जब जहन्नुम (के किनारे) पर लाकर खड़े किए जाओगे तो (उसे देखकर) कहेगें ऐ काष हम (दुनिया में) फिर (दुबारा) लौटा भी दिए जाते और अपने परवरदिगार की आयतों को न झुठलाते और हम मोमिनीन से होते (मगर उनकी आरज़ू पूरी न होगी)"

न्याय तत्व:

व्याप्ति (संपूर्णता): यह आयत क़यामत के दिन के दृश्य को बयान करती है और उन लोगों का पछतावा दिखाती है जिन्होंने जीवन में सही विश्वास नहीं अपनाया। यह व्याप्ति से संबंधित है क्योंकि यह पूरे समाज के अनुभव को प्रभावित करने वाली एक दृश्यात्मक स्थिति का वर्णन करती है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: यह आयत एक धार्मिक घटना का वर्णन करती है जो किसी भी प्रकार के वैज्ञानिक प्रमाण से प्रमाणित नहीं की जा सकती। क़यामत और जीवन के बाद के घटनाओं का वैज्ञानिक आधार नहीं है।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत एक धार्मिक कथा के रूप में प्रस्तुत की गई है, जिसे सभी लोग स्वीकार नहीं कर सकते।**

- **न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत एक भविष्यवाणी का रूप लेती है, जिसमें वास्तविकता का कोई प्रमाण नहीं दिया गया है।**

निष्कर्ष:

यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।

आयत 29:

"बल्कि जो (बेइमानी) पहले से छिपाते थे आज (उसकी हक़ीक़त) उन पर खुल गयी और (हम जानते हैं कि) अगर ये लोग (दुनिया में) लौटा भी दिए जाए तो भी जिस चीज़ की मनाही की गयी है उसे करें और ज़रुर करें और इसमें शक नहीं कि ये लोग ज़रुर झूठे हैं"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): इस आयत में यह बताया गया है कि जो लोग पहले सच को छिपाते थे, वे अंततः क़यामत के दिन अपनी गलती स्वीकार करेंगे। लेकिन यदि उन्हें फिर से जीवन दिया जाए, तो वे वही गलतियां फिर से करेंगे। यह हेतु तत्व से संबंधित है, क्योंकि इसके कारण (झूठ और छुपाना) और परिणाम (सच का खुलासा होना) को बयान किया गया है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: यह आयत एक भविष्यवाणी का रूप धारण करती है, जो एक धार्मिक दृष्टिकोण से उत्पन्न हुई है। हालांकि, यह घटनाएँ वैज्ञानिक रूप से सिद्ध नहीं की जा सकतीं।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत आस्था और विश्वास के आधार पर है, और इसका कोई सार्वभौमिक प्रमाण नहीं है।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत केवल विश्वास और भविष्यवाणी पर आधारित है, जिसमें कोई ठोस प्रमाण नहीं दिया गया है।**

निष्कर्ष:

यह आयत भविष्यवाणी पर आधारित है, और इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।

आयत 30:

"और कुफ्फार ये भी तो कहते हैं कि हमारी इस दुनिया ज़िन्दगी के सिवा कुछ भी नहीं और (क़यामत वग़ैरह सब ढकोसला है) हम (मरने के बाद) भी उठाए ही न जायेंगे"

न्याय तत्व:

प्रमेय (ज्ञान का वस्तु): इस आयत में कुफ्फार के दृष्टिकोण का वर्णन किया गया है, जो मानते हैं कि मृत्यु के बाद कुछ नहीं होता। यह प्रमेय तत्व से संबंधित है, क्योंकि यह एक वस्तु (विश्वास) के सत्य को प्रमाणित करने का प्रयास करती है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: यह आयत जीवन के बाद के अस्तित्व के बारे में बात करती है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता। यह एक धार्मिक विचार है, जिसका कोई साक्ष्य नहीं है।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत जीवन के बाद के अस्तित्व पर विश्वास करने वालों और न करने वालों के दृष्टिकोण में भेद करती है, और इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत विश्वास पर आधारित है, और इसमें तर्क या प्रमाण का अभाव है।**

निष्कर्ष:

यह आयत धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, जिसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।

सारांश:

इन आयतों में क़यामत, विश्वास, और हठधर्मिता पर आधारित विचार प्रस्तुत किए गए हैं। ये आयतें केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं, लेकिन इनका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। ये आयतें विश्वास और आस्था पर निर्भर करती हैं, जिन्हें सार्वभौमिक रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता।

आयत 31 से 35 (सूरए अनआम, आयत 31-35) का आलोचनात्मक विश्लेषण

आयत 31:

"और (ऐ रसूल) अगर तुम उनको उस वक़्त देखते (तो ताज्जुब करते) जब वे लोग ख़ुदा के सामने खड़े किए जाएगें और ख़ुदा उनसे पूछेगा कि क्या ये (क़यामत का दिन) अब भी सही नहीं है वह (जवाब में) कहेगें कि (दुनिया में) इससे इन्कार करते थे"

न्याय तत्वः

व्याप्ति (संपूर्णता): इस आयत में क़यामत के दिन के दृश्य को चित्रित किया गया है, जब लोग अपने किए गए कर्मों का परिणाम भुगतेंगे। यह व्याप्ति से संबंधित है क्योंकि यह पूरे मानव समाज को प्रभावित करने वाली एक घटना को बयान करती है, जिसमें सब लोग सहभागी होंगे।

वैज्ञानिक दृष्टिकोणः

- **विज्ञान के दृष्टिकोण सेः** क़यामत का यह दृश्य एक धार्मिक विश्वास है। विज्ञान के पास ऐसी घटनाओं का कोई प्रमाण नहीं है, और यह केवल आस्था पर आधारित है।
- **मानवाधिकार और न्यायः** क़यामत के दिन से जुड़ी घटनाओं को सच्चाई के रूप में प्रस्तुत करना मानवता की विविधता और विश्वासों का सम्मान नहीं करता। यह विचार केवल एक विशिष्ट धार्मिक परिप्रेक्ष्य से लिया गया है और सार्वभौमिक सत्य नहीं हो सकता।

विश्लेषणः

- **वैश्विक दृष्टिकोण सेः** यह आयत एक धार्मिक विश्वास को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसमें कोई तर्कसंगत या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। यह केवल एक विशेष समुदाय की आस्थाओं पर आधारित है।
- **न्याय दृष्टिकोण सेः** यह आयत न्याय के सिद्धांतों से संबंधित है, क्योंकि यह क़यामत के दिन की स्थिति को न्यायिक निर्णय के रूप में प्रस्तुत करती है। हालांकि, इसका कोई तर्कसंगत या साक्ष्य आधारित आधार नहीं है।

निष्कर्षः

यह आयत धार्मिक विश्वासों और क़यामत के दिन के दृश्य पर आधारित है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।

आयत 32:

"उसकी सज़ा में अज़ाब (के मज़े) चखो बेषक जिन लोगों ने क़यामत के दिन ख़ुदा की हुज़ूरी को झुठलाया वह बड़े घाटे में हैं यहाँ तक कि जब उनके सर पर क़यामत नागहा (एक दम आ) पहँचेगी तो कहने लगेगें ऐ है अफसोस हम ने तो इसमें बड़ी कोताही की (ये कहते जाएगे) और अपने गुनाहों का पुश्तारा अपनी अपनी पीठ पर लादते जाएगे देखो तो (ये) क्या बुरा बोझ है जिसको ये लादे (लादे फिर रहे) हैं"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): यह आयत क़यामत के दिन के परिणाम (अज़ाब) के बारे में बताती है, जो उन लोगों के कारण (हठधर्मिता और झूठ) के आधार पर होगा। यह हेतु से संबंधित है क्योंकि इसके परिणामों का कारण स्पष्ट रूप से दिया गया है (ईश्वर के आदेशों को न मानना और क़यामत को नकारना)।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: क़यामत और उसके परिणाम (अज़ाब) का कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। यह केवल एक धार्मिक विश्वास है और इसे विज्ञान द्वारा प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत उन लोगों के लिए एक चेतावनी के रूप में प्रस्तुत की जाती है जो क़यामत को नकारते हैं, लेकिन यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से साक्ष्य रहित है।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत क़यामत के दिन न्याय की बात करती है, लेकिन इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं है।**

निष्कर्ष:

यह आयत धार्मिक न्याय के बारे में बात करती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।

आयत 33:

"और (ये) दुनियावी ज़िन्दगी तो खेल तमाषे के सिवा कुछ भी नहीं और ये तो ज़ाहिर है कि आख़िरत का घर (बेहिष्त) परहेज़गारो के लिए उसके बदर व (कई गुना) बेहतर है तो क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते"

न्याय तत्व:

प्रमेय (ज्ञान का वस्तु): इस आयत में दुनियावी जीवन और आख़िरत के जीवन का तुलनात्मक मूल्यांकन किया गया है। यह प्रमेय से संबंधित है, क्योंकि यह उन लोगों के लिए एक तर्क प्रस्तुत करती है जो केवल वर्तमान जीवन को महत्व देते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- विज्ञान के दृष्टिकोण से: यह आयत दुनियावी जीवन की अस्थिरता और आख़िरत के जीवन की स्थिरता की बात करती है, लेकिन इन दोनों के बारे में वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कोई प्रमाण नहीं है।
- मानवाधिकार: यह आयत एक विशेष धार्मिक विश्वास को बढ़ावा देती है, जो सभी को स्वीकार्य नहीं हो सकता। यह मानवता की विविधता और विश्वासों का सम्मान नहीं करती।

विश्लेषण:

- वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत एक विशेष धार्मिक परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत करती है, जिसे सार्वभौमिक सत्य के रूप में नहीं लिया जा सकता।
- न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत केवल विश्वास पर आधारित है और इसका कोई तर्कसंगत आधार नहीं है।

निष्कर्ष:

यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।

आयत 34:

"हम खूब जानते हैं कि उन लोगों की बकबक तुम को सदमा पहुँचाती है तो (तुम को समझना चाहिए कि) ये लोग तुम को नहीं झुठलाते बल्कि (ये) ज़ालिम (हक़ीक़तन) ख़ुदा की आयतों से इन्कार करते हैं"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): यह आयत बताती है कि लोग न केवल पैगंबर को बल्कि खुदा की आयतों को भी नकारते हैं। इसका कारण (झूठ और हठधर्मिता) स्पष्ट रूप से दिया गया है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से:** यह आयत एक धार्मिक आलोचना है, जिसमें उन लोगों के दृष्टिकोण को गलत ठहराया गया है जो कुरान को नकारते हैं। यह केवल एक धार्मिक विश्वास है, जिसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सिद्ध नहीं किया जा सकता।

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से:** यह आयत एक धार्मिक आलोचना है, लेकिन यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकती।
- **न्याय दृष्टिकोण से:** यह आयत यह बताती है कि नकारात्मक व्यवहार का कारण (झूठ और हठधर्मिता) होता है, लेकिन इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं है।

निष्कर्ष:

यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।

आयत 35:

"और (कुछ तुम ही पर नहीं) तुमसे पहले भी बहुतेरे रसूल झुठलाए जा चुके हैं तो उन्होनें अपने झुठलाए जाने और अज़ीयत (व तकलीफ) पर सब्र किया यहाँ तक कि हमारी मदद उनके पास आयी और (क्यों न आती) ख़ुदा की बातों का कोई बदलने वाला नहीं है और पैग़म्बर के हालात तो तुम्हारे पास पहुँच ही चुके हैं"

न्याय तत्व:

व्याप्ति (संपूर्णता): यह आयत न केवल इस समय के पैगंबर की कठिनाई को दर्शाती है, बल्कि पहले के पैगंबरों की स्थिति का भी जिक्र करती है। यह व्याप्ति से संबंधित है, क्योंकि यह इतिहास और वर्तमान की घटनाओं को जोड़ती है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से:** यह आयत धार्मिक इतिहास को संबोधित करती है और इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से:** यह आयत एक ऐतिहासिक और धार्मिक परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका कोई सार्वभौमिक प्रमाण नहीं है।
- **न्याय दृष्टिकोण से:** यह आयत समय की निरंतरता और धार्मिक संदेश के स्थायित्व को बताती है, लेकिन इसका कोई तर्कसंगत आधार नहीं है।

निष्कर्ष:

यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।

सारांश:

इन आयतों में क़यामत, ईश्वर की सहायता, और धार्मिक विश्वासों के महत्व पर जोर दिया गया है। ये आयतें केवल आस्था और विश्वास पर आधारित हैं, जिनका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। इनका उद्देश्य धार्मिक विश्वासों को बढ़ावा देना है, लेकिन इनका सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्यता नहीं हो सकती।

आयत 36 से 40 (सूरए अनआम, आयत 36-40) का आलोचनात्मक विश्लेषण

आयत 36:

"अगरचे उन लोगों की रदगिरदानी (मुँह फेरना) तुम पर याक ज़रुर है (लेकिन) अगर तुम्हारा बस चले तो ज़मीन के अन्दर कोई सुरगं ढूढ निकालो या आसमान में सीढ़ी लगाओ और उन्हें कोई मौजिज़ा ला दिखाओ (तो ये भी कर देखो) अगर ख़ुदा चाहता तो उन सब को राहे रास्त पर इकट्ठा कर देता (मगर वह तो इम्तिहान करता है) बस (देखो) तुम हरगिज़ ज़ालिमों में (शामिल) न होना"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): इस आयत में यह बताया गया है कि मुहम्मद (स.) के द्वारा चमत्कारों का न दिखाना (जैसा कि विरोधी चाहते हैं) एक परीक्षा है और इसका कारण (हेतु) ईश्वर की इच्छा और इम्तिहान है। यह हेटु से संबंधित है, क्योंकि यहाँ एक कारण (ईश्वर का इम्तिहान) प्रस्तुत किया गया है, क्यों इन चमत्कारों को नहीं दिखाया जा सकता।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- विज्ञान के दृष्टिकोण से: इस आयत में किसी प्रकार के प्राकृतिक या भौतिक प्रमाण नहीं दिए गए हैं, बल्कि यह धार्मिक विश्वास पर आधारित है कि ईश्वर चाहता है कि लोग विश्वास और परीक्षण में रहें। विज्ञान किसी ईश्वर की इच्छा को नहीं प्रमाणित कर सकता।
- मानवाधिकार और न्याय: यह आयत मानवों के स्वतंत्र विचार और विश्वास पर सवाल उठाती है, क्योंकि यह मान्यता देती है कि यदि लोग विश्वास नहीं करते, तो उनकी परीक्षा होती है। यह सिद्धांत सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकता क्योंकि यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता और तर्क की अवहेलना करता है।

विश्लेषण:

- वैश्विक दृष्टिकोण से: इस आयत में चमत्कारों के बारे में विचार किया गया है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। यह केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है।
- न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत न्याय के सिद्धांतों पर आधारित नहीं है, क्योंकि इसका कोई तर्कसंगत आधार नहीं है कि क्यों ईश्वर चमत्कार दिखाने के बजाय लोगों को परीक्षा में डाले।

निष्कर्ष:

यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका कोई तर्कसंगत या वैज्ञानिक आधार नहीं है।

आयत 37:

"(तुम्हारा कहना तो) सिर्फ वही लोग मानते हैं जो (दिल से) सुनते हैं और मुर्दों को तो ख़ुदा क़यामत ही में उठाएगा फिर उसी की तरफ लौटाए जाएगें"

न्याय तत्व:

प्रमेय (ज्ञान का वस्तु): इस आयत में क़यामत के दिन मरे हुए लोगों के पुनर्जीवन का वर्णन किया गया है। यह प्रमेय से संबंधित है, क्योंकि यह एक वस्तु (मुर्दों का पुनर्जीवन) को प्रस्तुत करती है, जो एक विश्वसनीय ज्ञान का स्रोत नहीं है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- विज्ञान के दृष्टिकोण से: मरे हुए लोगों के पुनर्जीवित होने का कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। यह एक धार्मिक विश्वास है, और विज्ञान इसे प्रमाणित नहीं कर सकता।

- मानवाधिकार और न्याय: यह आयत एक विशेष विश्वास को प्रस्तुत करती है, जो सभी लोगों द्वारा स्वीकार्य नहीं हो सकता।

विश्लेषण:

- वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, लेकिन इसका कोई साक्ष्य आधारित या वैज्ञानिक समर्थन नहीं है।
- न्याय दृष्टिकोण से: पुनर्जीवन का विचार न्याय और तर्क से परे है, क्योंकि यह केवल विश्वास और आस्था पर आधारित है।

निष्कर्ष:

यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, और इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।

आयत 38:

"और कुफ़्फ़ार कहते हैं कि (आख़िर) उस नबी पर उसके परवरदिगार की तरफ से कोई मौजिज़ा क्यों नहीं नाज़िल होता तो तुम (उनसे) कह दो कि ख़ुदा मौजिज़े के नाज़िल करने पर ज़रुर क़ादिर है मगर उनमें के अक्सर लोग (ख़ुदा की मसलहतों को) नहीं जानते"

न्याय तत्व:

व्याप्ति (संपूर्णता): इस आयत में ईश्वर की शक्ति और मसलहत (इच्छा) पर चर्चा की जा रही है। यह व्याप्ति से संबंधित है क्योंकि इसमें यह कहा गया है कि ईश्वर मौजिज़ा न दिखाने के लिए पूरी तरह सक्षम है, लेकिन लोगों की समझ (या उसका अभाव) के कारण ऐसा नहीं किया जाता।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- विज्ञान के दृष्टिकोण से: इस आयत में जो मौजिज़े का उल्लेख किया गया है, वह किसी प्रकार का भौतिक प्रमाण नहीं है। मौजिज़े को किसी वैज्ञानिक सिद्धांत या साक्ष्य से नहीं जोड़ा जा सकता।
- मानवाधिकार और न्याय: यह आयत लोगों की समझ और ईश्वर की मसलहत को स्पष्ट करने की कोशिश करती है, लेकिन इसमें यह नहीं बताया गया कि क्यों यह सब लोगों के लिए स्पष्ट नहीं किया जाता।

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत केवल धार्मिक विश्वास और ईश्वर की इच्छा पर आधारित है, और यह किसी प्रकार का सार्वभौमिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं देती।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत मानती है कि ईश्वर की इच्छा और मसलहत सर्वोपरि है, लेकिन इसमें यह नहीं बताया गया कि लोगों को चमत्कारी प्रमाणों की आवश्यकता क्यों नहीं है।**

निष्कर्ष:

यह आयत धार्मिक विश्वास और ईश्वर की इच्छा के बारे में बताती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।

आयत 39:

"ज़मीन में जो चलने फिरने वाला (हैवान) या अपने दोनों परों से उड़ने वाला परिन्दा है उनकी भी तुम्हारी तरह जमाअतें हैं और सब के सब लौह महफ़ूज़ में मौजूद (हैं) हमने किताब (कुरान) में कोई बात नहीं छोड़ी है फिर सब के सब (चरिन्द हों या परिन्द) अपने परवरदिगार के हुज़ूर में लाए जायेंगे।"

न्याय तत्व:

प्रमेय (ज्ञान का वस्तु): इस आयत में जीवों की जमातों और उनके परवरदिगार के पास लौटने का वर्णन किया गया है। यह प्रमेय से संबंधित है, क्योंकि यह ज्ञान का एक स्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है, लेकिन इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: यह आयत जीवों के जीवन और उनके द्वारा ईश्वर की तरफ लौटने के विचार को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**
- **मानवाधिकार और न्याय: यह आयत विश्वास पर आधारित है और इसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण से महत्व रखती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत धार्मिक न्याय पर आधारित है, लेकिन इसका कोई सार्वभौमिक प्रमाण नहीं है।**

निष्कर्ष:

यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।

आयत 40:

"और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठला दिया गोया वह (कुफ्र के घटाटोप) अंधेरों में गुगें बहरे (पड़े हैं) ख़ुदा जिसे चाहे उसे गुमराही में छोड़ दे और जिसे चाहे उसे सीधे ढर्रे पर लगा दे"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): यह आयत बताती है कि क्यों लोग धर्म का पालन नहीं करते और क्यों कुछ लोग मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं और कुछ नहीं। इसका कारण (हेतु) ईश्वर की इच्छा और न्याय है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: इस आयत में किसी व्यक्ति की गुमराही या मार्गदर्शन के लिए ईश्वर के कार्यों को जिम्मेदार ठहराया गया है, लेकिन विज्ञान के पास इसका कोई प्रमाण नहीं है।**
- **मानवाधिकार और न्याय: यह आयत उन लोगों के लिए न्याय की बात करती है जो ईश्वर की आस्थाओं को स्वीकार नहीं करते, लेकिन इसका कोई सार्वभौमिक या वैज्ञानिक आधार नहीं है।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत उन लोगों के लिए एक धार्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत यह बताती है कि मार्गदर्शन और गुमराही का कारण ईश्वर की इच्छा होती है, लेकिन इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं है।**

निष्कर्ष:

यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, और इसका कोई तर्कसंगत या वैज्ञानिक आधार नहीं है।

सारांश:

इन आयतों में क़यामत, मार्गदर्शन, और ईश्वर के कार्यों के बारे में विचार किया गया है। इनका कोई वैज्ञानिक या तर्क

संगत आधार नहीं है और ये धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं। इन आयतों में ईश्वर की इच्छा और मसलहत को सर्वोपरि माना गया है, लेकिन यह दृष्टिकोण मानवता, न्याय और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विवादास्पद हो सकता है।

आयत 41 से 45 (सूरए अनआम, आयत 41-45) का आलोचनात्मक विश्लेषण

आयत 41:

" (ऐ रसूल उनसे) पूछो तो कि क्या तुम यह समझते हो कि अगर तुम्हारे सामने ख़ुदा का अज़ाब आ जाए या तुम्हारे सामने क़यामत ही आ खड़ी मौजूद हो तो तुम अगर (अपने दावे में) सच्चे हो तो (बताओ कि मदद के वास्ते) क्या ख़ुदा को छोड़कर दूसरे को पुकारोगे?"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): यह आयत यह प्रश्न करती है कि अगर लोग अपने दावे में सही हैं, तो क़यामत या अज़ाब के समय वे किसे पुकारेंगे, यह उनका तर्क है। यहाँ पर इस प्रश्न का कारण (हेतु) यह है कि क्या लोग वास्तविकता को स्वीकार करेंगे या केवल आस्था पर आधारित भ्रमों में रहेंगे।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: क़यामत और अज़ाब के परिदृश्य भौतिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं हैं। यह केवल धार्मिक विश्वासों और विचारों पर आधारित हैं।**
- **मानवाधिकार और न्याय: इस प्रकार के विचारों में एक परोक्ष तरीके से यह कहा गया है कि जब संकट आता है, तो व्यक्ति को अपनी आस्थाओं का परीक्षण करना चाहिए। लेकिन यह दृष्टिकोण सार्वभौमिक रूप से सभी के लिए लागू नहीं हो सकता।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत धार्मिक परिप्रेक्ष्य से महत्वपूर्ण हो सकती है, लेकिन इसके विचार वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मान्य नहीं हैं।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत इस बात की जांच करती है कि लोग किस हद तक अपने धार्मिक विश्वासों पर टिके रहते हैं, लेकिन यह तर्कसंगत रूप से यह नहीं स्पष्ट करती कि संकट के समय कौन सही रास्ता चुनता है।**

निष्कर्ष:

यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। संकट के समय मानव का रुख आस्थाओं से प्रेरित होता है, और इसका प्रमाण नहीं है कि क़यामत और अज़ाब का अस्तित्व सत्य है।

आयत 42:

" (दूसरों को तो क्या) बल्कि उसी को पुकारोगे फिर अगर वह चाहेगा तो जिस के वास्ते तुमने उसको पुकारा है उसे दफा कर देगा और (उस वक़्त) तुम दूसरे माबूदों को जिन्हे तुम (ख़ुदा का) शरीक समझते थे भूल जाओगे"

न्याय तत्व:

व्याप्ति (संपूर्णता): इस आयत में यह बताया गया है कि जब क़यामत या अज़ाब आएगा तो लोग अपने सभी अन्य देवताओं को भूलकर सिर्फ एक ईश्वर को ही पुकारेंगे। यह व्याप्ति तत्व से संबंधित है, क्योंकि इसमें बताया गया है कि संकट के समय लोग अपने सभी विश्वासों को छोड़ देते हैं और केवल उस शक्ति को पुकारते हैं जिसे वे सर्वोपरि मानते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: इस आयत में बताया गया है कि संकट के समय लोग किसे पुकारते हैं, लेकिन इस पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कोई ठोस प्रमाण नहीं है। यह एक धार्मिक विश्वास है।**
- **मानवाधिकार और न्याय: यह आयत मानवीय विश्वासों और आस्थाओं की विविधता को नकारती है, क्योंकि यह कहती है कि संकट के समय केवल एक ईश्वर को पुकारा जाएगा।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से तो महत्वपूर्ण हो सकती है, लेकिन यह सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं होती क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति का विश्वास अलग हो सकता है।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत व्यक्तिगत स्वतंत्रता और विश्वास के अधिकार पर प्रश्न उठाती है, क्योंकि यह दूसरे विश्वासों को अस्वीकार करती है।**

निष्कर्ष:

यह आयत विश्वासों की विविधता और स्वतंत्रता के खिलाफ हो सकती है, और इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।

आयत 43:

" और (ऐ रसूल) जो उम्मतें तुमसे पहले गुज़र चुकी हैं हम उनके पास भी बहुतेरे रसूल भेज चुके हैं फिर (जब नाफ़रमानी की) तो हमने उनको सख़्ती (और तकलीफ़ में गिरफ़्तार किया ताकि वह लोग (हमारी बारगाह में) गिड़गिड़ाए"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): यहाँ पर यह कारण बताया गया है कि क्यों पूर्व की उम्मतों पर सख़्ती और तकलीफ़ आई थी - यह उनकी नाफ़रमानी का परिणाम था। यह हेटु तत्व से संबंधित है, क्योंकि यह घटना (सख़्ती और तकलीफ़) के कारण (नाफ़रमानी) को स्पष्ट करता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- विज्ञान के दृष्टिकोण से: यहाँ पर यह नहीं बताया गया है कि ये सख़्ती और तकलीफ़ किस प्रकार के थे और उनका भौतिक या मानसिक प्रभाव क्या था। यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से है और विज्ञान के दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं हो सकती।
- मानवाधिकार और न्याय: यह आयत दिखाती है कि कुदरती घटनाएँ मानवता के खिलाफ हो सकती हैं, जो मानव अधिकारों और न्याय की अवहेलना कर सकती हैं।

विश्लेषण:

- वैश्विक दृष्टिकोण से: इस आयत का तर्क केवल धार्मिक दृष्टिकोण से समर्थित है, जबकि इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता।
- न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत उन लोगों के लिए न्याय का निर्धारण करती है जिन्होंने नाफ़रमानी की, लेकिन इसमें न्याय की सार्वभौमिकता पर सवाल उठते हैं।

निष्कर्ष:

यह आयत नाफ़रमानी के परिणामस्वरूप सख़्ती की बात करती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। यह विश्वास पर आधारित है।

आयत 44:

"फिर (जब) उनके सर पर हमारा अज़ाब आ खड़ा हुआ तो वह लोग क्यों नहीं गिड़गिड़ाए (कि हम अज़ाब दफा कर देते) मगर उनके दिल तो सख़्त हो गए थे ओर उनकी कारस्तानियों को शैतान ने आरास्ता कर दिखाया था (फिर क्योंकर गिड़गिड़ाते)"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): इस आयत में बताया गया है कि क्यों लोग अपनी स्थिति पर पछताने के बजाय अज़ाब को स्वीकार करते हैं - इसका कारण शैतान और दिल की कठोरता है। यह हेटु तत्व से संबंधित है, क्योंकि यह कारण (शैतान और दिल की कठोरता) बताता है कि क्यों लोग बाद में गिड़गिड़ाते नहीं हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: यह आयत धार्मिक विश्वासों और मानसिक स्थिति (दिल की कठोरता) को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**
- **मानवाधिकार और न्याय: यह आयत एक दैवीय न्याय का सिद्धांत प्रस्तुत करती है, लेकिन यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सोच को दबाती है।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत मानसिक और धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हो सकती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत मानवीय स्वतंत्रता और स्वतंत्र विचारों को अस्वीकार करती है, क्योंकि इसे शैतान और कठोर दिल की वजह से स्पष्ट किया गया है।**

निष्कर्ष:

यह आयत एक दैवीय न्याय के सिद्धांत पर आधारित है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।

आयत 45:

"फिर जिसकी उन्हें नसीहत की गयी थी जब उसको भूल गए तो हमने उन पर (ढील देने के लिए) हर तरह की (दुनियावी) नेअमतों के दरवाज़े खोल दिए यहाँ तक कि जो नेअमते उनको दी गयी थी जब उनको पाकर ख़ुश हुए तो हमने उन्हें नागाहाँ (एक दम) ले डाला तो उस वक़्त वह नाउम्मीद होकर रह गए"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): इस आयत में बताया गया है कि क्यों लोग अपनी नेअमतों के लिए आभारी नहीं होते, और परिणामस्वरूप उन्हें अचानक दुखी कर दिया जाता है। इसका कारण (हेतु) उनकी नासमझी और उपेक्षा है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: यह आयत भौतिक और मानसिक संदर्भ में किसी प्रकार के तात्कालिक कारण को स्पष्ट नहीं करती। यह एक धार्मिक दृष्टिकोण है, और इसका कोई ठोस वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**
- **मानवाधिकार और न्याय: यह आयत एक सख्त दैवीय न्याय प्रणाली का उदाहरण प्रस्तुत करती है, लेकिन यह मानव स्वतंत्रता और सोच के अधिकारों को सीमित करती है।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत केवल धार्मिक परिप्रेक्ष्य से महत्वपूर्ण हो सकती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।**
- ****न्याय**

दृष्टिकोण से: यह आयत दैवीय न्याय के सिद्धांत को प्रस्तुत करती है, लेकिन यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता को दबाती है।**

निष्कर्ष:

यह आयत भी एक धार्मिक न्याय पर आधारित है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।

आयत 46 से 50 (सूरए अनआम, आयत 46-50) का आलोचनात्मक विश्लेषण

आयत 46:

"फिर ज़ालिम लोगों की जड़ काट दी गयी और सारे जहाँन के मालिक ख़ुदा का शुक्र है"

न्याय तत्वः

प्रमेय (ज्ञान का विषय): इस आयत में ज़ालिम लोगों की जड़ काटने का संदर्भ दिया गया है, जो एक दैवीय न्याय का विषय है। यहाँ प्रमेय (ज्ञान का विषय) यह है कि ज़ालिमों को उनके कर्मों के अनुसार दंड दिया जाता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोणः

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: यह आयत एक दैवीय क़ानून पर आधारित है, जिसका कोई ठोस भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। यह धार्मिक आस्थाओं का हिस्सा है और इसका कोई भौतिक आधार नहीं है।**
- **मानवाधिकार और न्याय: यह आयत इस विचार को प्रस्तुत करती है कि दैवीय न्याय ज़ालिमों को सजा देने के रूप में कार्य करता है, लेकिन यह न्याय का केवल एक धार्मिक परिप्रेक्ष्य है, न कि सार्वभौमिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्थापित।**

विश्लेषणः

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत धार्मिक न्याय पर आधारित है और इसका वैज्ञानिक या तर्कसंगत समर्थन नहीं है।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत दैवीय न्याय की अवधारणा प्रस्तुत करती है, लेकिन यह मानवता के सार्वभौमिक न्याय सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि न्याय को मानवीय परिप्रेक्ष्य से समझा जाना चाहिए।**

निष्कर्षः

यह आयत एक धार्मिक न्याय का परिपेक्ष्य प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।

आयत 47:

" (कि क़िस्सा पाक हुआ) (ऐ रसूल) उनसे पूछो तो कि क्या तुम ये समझते हो कि अगर ख़ुदा तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखे लें ले और तुम्हारे दिलों पर मोहर कर दे तो ख़ुदा के सिवा और कौन मौजूद है जो (फिर) तुम्हें ये नेअमतें (वापस) दे (ऐ रसूल) देखो तो हम किस किस तरह अपनी दलीले बयान करते हैं इस पर भी वह लोग मुँह मोड़े जाते हैं"

न्याय तत्व:

व्याप्ति (संपूर्णता): इस आयत में यह दिखाया गया है कि जब अल्लाह अपनी नेअमतें ले लेता है, तो कोई और उसे वापस नहीं दे सकता, और इसका उद्देश्य यह है कि लोग ईश्वर की शक्ति को समझे। यह व्याप्ति तत्व से संबंधित है क्योंकि यह पूरे ब्रह्मांड में ईश्वर की शक्ति की अनिवार्यता को दर्शाता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: यह आयत जीवन के विभिन्न पहलुओं को दैवीय शक्ति से जोड़ती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। यह केवल धार्मिक विश्वास और आस्था पर आधारित है।**
- **मानवाधिकार और न्याय: यहाँ यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि केवल ईश्वर ही जीवन की नेअमतों को देने और लेने का अधिकार रखते हैं, लेकिन यह विचार व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सोच को सीमित कर सकता है।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत किसी व्यक्ति की स्वतंत्रता को दबा सकती है क्योंकि यह उनके कर्मों और विचारों को पूरी तरह से ईश्वर के हाथों में मानती है।**

निष्कर्ष:

यह आयत दैवीय शक्ति का प्रदर्शन करती है, लेकिन इसका कोई तर्कसंगत और वैज्ञानिक आधार नहीं है।

आयत 48:

" (ऐ रसूल) उनसे पूछो कि क्या तुम ये समझते हो कि अगर तुम्हारे सर पर ख़ुदा का अज़ाब बेख़बरी में या जानकारी में आ जाए तो क्या गुनाहगारों के सिवा और लोग भी हलाक़ किए जाएगें (हरगिज़ नहीं)"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): इस आयत में यह सवाल किया गया है कि क्या जब अल्लाह का अज़ाब आ जाता है तो केवल गुनाहगारों को ही सजा दी जाती है या अन्य लोग भी प्रभावित होते हैं। इसका कारण यह है कि हर किसी को उनके कर्मों के अनुसार दंड दिया जाएगा।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: यह आयत दैवीय अज़ाब की अवधारणा पर आधारित है, जो भौतिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं है।**
- **मानवाधिकार और न्याय: यह विचार व्यक्तिगत क़दमों पर आधारित है और यह स्पष्ट करता है कि सिर्फ़ गुनाहगारों को दंडित किया जाएगा, लेकिन इसका कोई सार्वभौमिक आधार नहीं है।**

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हो सकती है, लेकिन इसका कोई तर्कसंगत या वैज्ञानिक समर्थन नहीं है।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत एक दैवीय न्याय प्रणाली को प्रस्तुत करती है, जो केवल गुनाहगारों को दंडित करती है, लेकिन इसमें न्याय की सार्वभौमिकता पर सवाल उठते हैं।**

निष्कर्ष:

यह आयत दैवीय न्याय पर आधारित है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।

आयत 49:

"और हम तो रसूलों को सिर्फ इस ग़रज़ से भेजते हैं कि (नेको को जन्नत की) खुशख़बरी दें और (बदो को अज़ाबे जहन्नुम से) डराए फिर जिसने इमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए तो ऐसे लोगों पर (क़यामत में) न कोई ख़ौफ होगा और न वह ग़मग़ीन होगें"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): इस आयत में यह स्पष्ट किया गया है कि रसूलों का उद्देश्य लोगों को खुशख़बरी देना और डराना है। इसका कारण (हेतु) यह है कि वे उन्हें सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित कर सकें, ताकि वे क़यामत में सुरक्षित रहें।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से: यह आयत एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। यह केवल आस्था पर आधारित है।**

- **मानवाधिकार और न्याय:** यह आयत व्यक्तिगत आस्थाओं और विश्वासों के आधार पर न्याय की अवधारणा प्रस्तुत करती है, जो हर व्यक्ति के लिए मान्य नहीं हो सकती।

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से:** यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो वैश्विक मानवता और विज्ञान से मेल नहीं खाती।
- **न्याय दृष्टिकोण से:** यह आयत एक विशेष धार्मिक मान्यता पर आधारित न्याय प्रणाली को प्रस्तुत करती है, जो सार्वभौमिक नहीं हो सकती।

निष्कर्ष:

यह आयत धार्मिक आस्थाओं और विश्वासों पर आधारित है, और इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।

आयत 50:

"और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया तो चूकि बदकारी करते थे (हमारा) अज़ाब उनको पलट जाएगा"

न्याय तत्व:

हेतु (कारण): इस आयत में यह बताया गया है कि जिन्होंने आयतों को झुठलाया और बुराई की, उन पर अज़ाब (सजा) आएगी। इसका कारण (हेतु) उनकी बुराई और नाफ़रमानी है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण:

- **विज्ञान के दृष्टिकोण से:** यह आयत दैवीय सजा की अवधारणा प्रस्तुत करती है, जिसका कोई ठोस भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। यह केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है।
- **मानवाधिकार और न्याय:** यह आयत बुराई और नाफ़रमानी को दैवीय सजा का कारण मानती है, लेकिन यह दृष्टिकोण सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकता।

विश्लेषण:

- **वैश्विक दृष्टिकोण से: यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।**
- **न्याय दृष्टिकोण से: यह आयत व्यक्तिगत कर्मों पर आधारित दैवीय न्याय को प्रस्तुत करती है, लेकिन यह न्याय का सार्वभौमिक सिद्धांत नहीं हो सकता।**

निष्कर्ष:

यह आयत दैवीय न्याय पर आधारित है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है।

विश्लेषण का परिचय:

इस विश्लेषण में हम कुरआन की आयतों (51-55) को आलोचनात्मक दृष्टिकोण से देखेंगे और इनमें प्रयुक्त तर्कों, तात्त्विकता और संदेश की तार्किकता का मूल्यांकन करेंगे। हम इस विश्लेषण में न्याय दर्शन के विभिन्न तत्वों का उपयोग करेंगे और यह दिखाने की कोशिश करेंगे कि प्रत्येक आयत क्यों और कैसे मानवता के लिए गलत संदेश देती है, साथ ही हम आयतों के साथ संबंधित हिन्दू दर्शन के तत्वों का भी उपयोग करेंगे।

आयत 51:

कुरआनी आयत: (ऐ रसूल) उनसे कह दो कि मैं तो यह नहीं कहता कि मेरे पास ख़ुदा के ख़ज़ाने हैं (कि इमान लाने पर दे दूंगा) और न मैं ग़ैब के (कुल हालात) जानता हूँ और न मैं तुमसे यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ मैं तो बस जो (ख़ुदा की तरफ से) मेरे पास वही की जाती है उसी का पाबन्द हूँ (उनसे पूछो तो) कि अन्धा और आँख वाला बराबर हो सकता है तो क्या तुम (इतना भी) नहीं सोचते

न्याय तत्व (Hetu - कारण):

प्रश्नों का मार्गदर्शन:

1. **इस आयत में 'Hetu' (कारण) के सिद्धांत के साथ आयत का मेल कैसे है?**
2. **क्या इस आयत में दी गई तर्कशीलता न्याय दर्शन के आधार पर सही है?**
3. **आयत में दी गई तर्कशक्ति क्या है और क्या वह तार्किक रूप से उचित है?**

विश्लेषण:

- **यह आयत अंधे और देखने वाले व्यक्ति के बीच तुलना करती है, जो एक रूपक के माध्यम से यह बताने का प्रयास करती है कि जो लोग भगवान के मार्ग पर नहीं चलते, वे अंधे हैं और जो चल रहे हैं, वे**

दृष्टि वाले हैं। हालांकि, न्याय दर्शन में 'Hetu' का प्रयोग तब किया जाता है जब कारण स्पष्ट और तार्किक रूप से प्रासंगिक हो।

- यह रूपक, हालांकि दिलचस्प है, लेकिन न्याय के दृष्टिकोण से यह तर्कपूर्ण नहीं है। अंधे और देखने वाले की तुलना केवल एक संज्ञा है, जो वास्तविकता की ओर संकेत नहीं करती। 'धार्मिक अंधापन' और 'शारीरिक अंधापन' के बीच बहुत फर्क है, और इस प्रकार का रूपक निष्कलंक कारण प्रस्तुत नहीं करता।

निष्कर्ष: यह आयत न्याय के 'Hetu' तत्व के अनुसार पूरी तरह से तर्कसंगत नहीं है। यह रूपक केवल धार्मिक दृष्टिकोण से सही हो सकता है, लेकिन इसे सार्वभौमिक रूप से सिद्‌ध करने के लिए कोई ठोस कारण या तर्क नहीं दिया गया है।

आयत 52:

कुरआनी आयत: और इस कुरान के ज़रिए से तुम उन लोगों को डराओ जो इस बात का ख़ौफ रखते हैं कि वह (मरने के बाद) अपने ख़ुदा के सामने जमा किये जायेंगे (और यह समझते है कि) उनका ख़ुदा के सिवा न कोई सरपरस्त है और न कोई सिफारिष करने वाला ताकि ये लोग परहेज़गार बन जाएं

न्याय तत्व (Prameya - ज्ञान का विषय):

प्रश्नों का मार्गदर्शन:

1. क्या यह आयत ज्ञान के विषय (Prameya) के सिद्‌धांत से मेल खाती है?
2. क्या आयत में दिया गया विषय सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य और तर्कसंगत है?
3. क्या यह आयत केवल विश्वास पर आधारित है, या इसमें प्रमाणिक ज्ञान का आधार है?

विश्लेषण:

- आयत का उद्देश्य उन लोगों को डराना है जो मृत्यु के बाद न्याय के दिन के बारे में डरते हैं। इसमें यह माना गया है कि व्यक्ति के जीवन का उद्देश्य केवल डर से शुद्‌धता और परहेज़गारिता प्राप्त करना है।
- न्याय दर्शन में 'Prameya' का मतलब है कि किसी चीज़ को ज्ञान का विषय माना जाए, जो प्रमाणिक रूप से सिद्‌ध हो। यहाँ, आयत में जो विषय प्रस्तुत किया गया है, वह विश्वास और धर्म पर आधारित है, लेकिन इसका कोई ठोस वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं दिया गया है। यह केवल विश्वास पर निर्भर करता है, जो न्याय के दृष्टिकोण से सार्वभौमिक नहीं हो सकता।

निष्कर्ष: यह आयत 'Prameya' के सिद्धांत के अनुसार पूरी तरह से तर्कसंगत नहीं है। यह विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, लेकिन इसका सार्वभौमिक ज्ञान से कोई साक्ष्य नहीं है।

आयत 53:

कुरआनी आयत: और (ऐ रसूल) जो लोग सुबह व शाम अपने परवरदिगार से उसकी ख़ुशनूदी की तमन्ना में दुआएं माँगा करते हैं- उन्हें अपने पास से न धुत्कारो-न उनके (हिसाब किताब की) जवाब देही कुछ उनके जिम्मे है ताकि तुम उन्हें (इस ख़्याल से) धुत्कार बताओ तो तुम ज़ालिम (के शुमार) में हो जाओगे

न्याय तत्व (Vyapti - अनिवार्य सम्बन्ध):

प्रश्नों का मार्गदर्शन:

1. **क्या इस आयत में 'Vyapti' (अनिवार्य सम्बन्ध) का सिद्धांत सही तरीके से लागू होता है?**
2. **क्या आयत में जो संबंध स्थापित किया गया है वह तार्किक रूप से उचित और सार्वभौमिक है?**
3. **क्या यह आयत हर व्यक्ति के लिए समान है या इसमें कुछ विषमताएँ हैं?**

विश्लेषण:

- **आयत में यह कहा गया है कि जो लोग भगवान की कृपा चाहते हैं, उन्हें न तो नकारा जाए और न ही अपमानित किया जाए। यह एक तरह का 'Vyapti' (अनिवार्य सम्बन्ध) स्थापित करने का प्रयास करती है कि व्यक्ति का ईश्वर से जुड़ा संबंध नकारा नहीं जा सकता।**
- **हालांकि, यह विचार सही हो सकता है यदि हम इसे धर्म की दृषटिकोन से देखें, लेकिन न्याय दर्शन में 'Vyapti' का सिद्धांत यह कहता है कि किसी घटना के हर पहलू का विश्लेषण अनिवार्य रूप से तर्कसंगत तरीके से किया जाना चाहिए। यह आयत सार्वभौमिक रूप से यह सिद्ध नहीं कर पाती कि सभी लोग बिना भेदभाव के ईश्वर से जुड़ने के योग्य हैं, क्योंकि यह एक धार्मिक विचार पर आधारित है।**

निष्कर्ष: यह आयत 'Vyapti' के सिद्धांत के अनुसार पूरी तरह से तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि इसमें धार्मिक विश्वास का दबाव है, जो सभी के लिए समान नहीं हो सकता।

आयत 54:

कुरआनी आयत: और इसी तरह हमने बाज़ आदमियों को बाज़ से आज़माया ताकि वह लोग कहें कि हाए क्या ये लोग हममें से हैं जिन पर ख़ुदा ने अपना फ़जल व करम किया है (यह तो समझते की) क्या ख़ुदा शुक्र गुज़ारों को भी नहीं जानता

न्याय तत्व (Upamana - तुलना):

प्रश्नों का मार्गदर्शन:

1. **क्या आयत में 'Upamana' (तुलना) का प्रयोग उचित है?**
2. **क्या इसका उपयोग उचित तर्कों के साथ किया गया है?**
3. **क्या यह तुलना तार्किक रूप से सही है?**

विश्लेषण:

- **इस आयत में यह कहा गया है कि भगवान अपने चयनित लोगों को ही अपनी कृपा देता है, और यह एक प्रकार की तुलना है उन लोगों से जो इसकी कमी महसूस करते हैं। हालांकि, 'Upamana' का प्रयोग तब किया जाता है जब दो वस्तुओं के बीच तुलना की जाती है ताकि उनका सार्थक अंतर स्पष्ट किया जा सके।**
- **यहाँ पर यह तुलना पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है क्योंकि यह मानवता की तुलना खुदा की कृपा से कर रही है। यह सही नहीं कहा जा सकता कि जो लोग भगवान की कृपा से वंचित हैं वे उसे महसूस करेंगे, क्योंकि यह मामला निजी विश्वासों और सामाजिक स्थितियों पर निर्भर है।**

निष्कर्ष: यह आयत 'Upamana' के सिद्धांत के तहत तर्कसंगत नहीं है क्योंकि तुलना की गई वस्तुएं पूर्णतः अलग हैं, और यह universally समझ में नहीं आती।

आयत 55:

कुरआनी आयत: और जो लोग हमारी आयतों पर ईमान लाए हैं तुम्हारे पास आएं तो तुम सलामुन अलैकुम (तुम पर ख़ुदा की सलामती हो) कहो तुम्हारे परवरदिगार ने अपने ऊपर रहमत लाज़िम कर ली है बेषक तुम में से जो शख़्स नादानी से कोई गुनाह कर बैठे उसके बाद फिर तौबा करे और अपनी हालत की (असलाह करे ख़ुदा उसका गुनाह बख़्श देगा क्योंकि) वह यक़ीनी बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

न्याय तत्व (Pramana - प्रमाण):

प्रश्नों का मार्गदर्शन:

1. **क्या इस आयत में 'Pramana' (प्रमाण) का सिद्धांत सही है?**
2. **क्या यह आयत प्रमाणिक रूप से उचित है?**
3. **क्या इस आयत में दी गई जानकारी किसी साक्ष्य पर आधारित है?**

विश्लेषण:

- **यह आयत तौबा और सच्ची निष्ठा की आवश्यकता को बताती है, जो इस बात को प्रमाणित करती है कि हर व्यक्ति के पापों को क्षमा किया जा सकता है। यह विचार धर्म के संदर्भ में स्वीकार्य हो सकता है, लेकिन न्याय दर्शन में किसी प्रमाण की आवश्यकता होती है जो तर्क और वास्तविकता के साथ जुड़ा हो।**
- **इस आयत में जो दावा किया गया है, वह धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, लेकिन इसका कोई प्रमाण या निष्कलंक तार्किक आधार नहीं है। इसे केवल आस्था से जोड़ा गया है, जो सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं माना जा सकता।**

निष्कर्ष: यह आयत 'Pramana' के सिद्धांत के तहत प्रमाणिक नहीं मानी जा सकती, क्योंकि इसमें कोई ठोस तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया है, बल्कि यह एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है।

कुल निष्कर्ष:

हर आयत को आलोचनात्मक दृष्टिकोण से देखा गया और न्याय दर्शन के विभिन्न तत्वों के माध्यम से इस बात को सिद्ध किया गया कि इनमें कई तर्कों की कमी है जो इन आयतों को सार्वभौ

मिक रूप से सही ठहराने में बाधक बनती हैं। ये आयतें धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हो सकती हैं, लेकिन तर्क और प्रमाण के स्तर पर कई खामियाँ हैं जो इनको सार्वभौमिक मानवता के लिए गलत संदेश देती हैं।

विश्लेषण का परिचय:

इस विश्लेषण में हम कुरआन की आयतों (56-60) को तार्किक, दार्शनिक, और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखेंगे। हम इन आयतों का मूल्यांकन न्याय दर्शन के तत्वों के माध्यम से करेंगे और यह समझने की कोशिश करेंगे कि ये आयतें मानवता के लिए क्या संदेश देती हैं। इन आयतों में जो संदेश है, उसे सार्वभौमिक तर्क, मानवाधिकार, और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कैसे देखा जा सकता है, इसका विश्लेषण करेंगे।

आयत 56:

कुरआनी आयत: और हम (अपनी) आयतों को यू तफ़सील से बयान करते हैं ताकि गुनाहगारों की राह (सब पर) खुल जाए और वह इस पर न चले।

न्याय तत्व (Hetu - कारण):

प्रश्नों का मार्गदर्शन:

1. **इस आयत में दी गई बात में 'Hetu' (कारण) का क्या उपयोग है?**
2. **क्या आयत का उद्देश्य तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्वीकार्य है?**
3. **क्या यह आयत सही कारण प्रदान करती है, जिससे गुनाहगारों के मार्ग को बंद किया जा सके?**

विश्लेषण:

- **इस आयत में यह कहा गया है कि आयतों को विस्तार से बताया गया है ताकि गुनाहगारों की राह पर न चलने की चेतावनी दी जा सके। इसका उद्देश्य गुनाहगारों को सही रास्ते पर लाना है। लेकिन 'Hetu' (कारण) का स्पष्ट तार्किक सिद्धांत इस आयत में स्पष्ट नहीं है। अगर गुनाहगारों को सही रास्ता दिखाना है, तो इसके लिए केवल चेतावनी देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन्हें समझाने और तर्क देने की आवश्यकता है। यह आयत केवल एक आदेश देती है, जो तार्किक कारणों की बजाय विश्वास और भय पर आधारित है।**

निष्कर्ष: यह आयत 'Hetu' के सिद्धांत के तहत पूरी तरह से तर्कसंगत नहीं है। यह एक आदेश देती है, लेकिन इसमें गुनाहगारों को समझाने के लिए कोई ठोस कारण या तार्किक सिद्धांत नहीं दिया गया है।

आयत 57:

कुरआनी आयत: (ऐ रसूल) तुम कह दो कि मुझसे उसकी मनाही की गई है कि मैं ख़ुदा को छोड़कर उन माबूदों की इबादत करुं जिनको तुम पूजा करते हो (ये भी) कह दो कि मै तो तुम्हारी (नफसानी) ख़्वाहिश पर चलने का नहीं (वरना) फिर तो मै गुमराह हो जाऊँगा और हिदायत याफता लोगों में न रहूँगा।

न्याय तत्व (Prameya - ज्ञान का विषय):

प्रश्नों का मार्गदर्शन:

1. **क्या इस आयत में ज्ञान का विषय (Prameya) ठीक से परिभाषित किया गया है?**
2. **क्या आयत में दी गई जानकारी ज्ञान के सिद्धांत के अनुरूप है?**
3. **क्या इस आयत में दी गई चेतावनी और तर्क वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सत्य हैं?**

विश्लेषण:

- **इस आयत में कहा गया है कि रसूल को केवल एक ही माबूद की पूजा करनी है और नफसानी इच्छाओं से बचना है, वरना वह गुमराह हो जाएंगे। यह आयत ज्ञान का विषय (Prameya) स्थापित करती है, जिसमें अल्लाह के अलावा किसी अन्य देवता की पूजा की अनुमति नहीं दी गई है। हालांकि, यह ज्ञान किसी विशेष धर्म की सीमा में रहकर दिया गया है। यह ज्ञान सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकता, क्योंकि अन्य धर्मों और विश्वासों में अन्य देवी-देवताओं की पूजा की जाती है।**
- **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, आयत में कोई ठोस प्रमाण नहीं दिया गया कि केवल एक ईश्वर की पूजा करना सही है, जबकि अन्य धार्मिक विश्वासों और विज्ञान में बहुदेववाद को पूरी तरह से खारिज नहीं किया गया है।**

निष्कर्ष: यह आयत 'Prameya' के सिद्धांत के अनुसार सार्वभौमिक ज्ञान का विषय नहीं बन सकती, क्योंकि यह केवल एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है।

आयत 58:

कुरआनी आयत: तुम कह दो कि मै तो अपने परवरदिगार की तरफ से एक रौशन दलील पर हूँ और तुमने उसे झुठला दिया (तो) तुम जिस की जल्दी करते हो (अज़ाब) वह कुछ मेरे पास (एख़्तियार में) तो है नहीं हुकूमत तो बस ज़रुर ख़ुदा ही के लिए है वह तो (हक़) बयान करता है और वह तमाम फैसला करने वालों से बेहतर है।

न्याय तत्व (Vyapti - अनिवार्य सम्बन्ध):

प्रश्नों का मार्गदर्शन:

1. **क्या इस आयत में 'Vyapti' (अनिवार्य सम्बन्ध) का प्रयोग सही है?**
2. **क्या इस आयत में दी गई जानकारी तर्कसंगत और सुसंगत है?**

3. **क्या यह आयत सार्वभौमिक रूप से सही साबित हो सकती है?**

विश्लेषण:

- **आयत में यह कहा गया है कि रसूल के पास ईश्वर की ओर से एक "रोशन दलील" है, और वह उसे झुठला दिए जाने पर किसी भी प्रकार के दंड के बारे में बोलते हैं। यहाँ 'Vyapti' का अर्थ है कि किसी विशेष कारण (दलील) के कारण सभी को एक जैसा परिणाम मिलेगा (अज़ाब)। हालांकि, इस आयत में जो अनिवार्य सम्बन्ध स्थापित किया गया है, वह केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इसे वैज्ञानिक या तार्किक दृष्टिकोण से सामान्यीकृत करना कठिन है।**
- **न्याय दर्शन में 'Vyapti' का सिद्धांत यह है कि किसी घटना का हर पहलू अनिवार्य रूप से तर्कसंगत और सुसंगत होना चाहिए, लेकिन यह आयत केवल विश्वास और डर के आधार पर एक अनिवार्य सम्बन्ध प्रस्तुत करती है, जो सार्वभौमिक नहीं हो सकता।**

निष्कर्ष: यह आयत 'Vyapti' के सिद्धांत के तहत पूरी तरह से तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि यह केवल एक विशेष विश्वास पर आधारित है और इसका सार्वभौमिक रूप से प्रमाण नहीं दिया जा सकता।

आयत 59:

कुरआनी आयत: (उन लोगों से) कह दो कि जिस (अज़ाब) की तुम जल्दी करते हो अगर वह मेरे पास (एख़्तियार में) होता तो मेरे और तुम्हारे दरम्यिान का फैसला कब का चुक गया होता और ख़ुदा तो ज़ालिमों से खूब वाक़िफ है।

न्याय तत्व (Upamana - तुलना):

प्रश्नों का मार्गदर्शन:

1. **क्या इस आयत में 'Upamana' (तुलना) का सही प्रयोग किया गया है?**
2. **क्या इसमें दी गई तुलना तार्किक रूप से न्यायसंगत है?**
3. **क्या यह तुलना सार्वभौमिक दृष्टिकोण से सही है?**

विश्लेषण:

- **आयत में कहा गया है कि यदि अज़ाब (दंड) रसूल के पास होता, तो वह पहले ही निर्णय ले चुके होते। यहाँ पर एक तुलना की जा रही है, जिसमें रसूल को अज़ाब का अधिकार नहीं दिया गया है। यह**

तुलना एक धार्मिक रूपक के रूप में दी जा रही है, जो केवल एक विश्वास पर आधारित है। न्याय दर्शन में 'Upamana' का प्रयोग तब किया जाता है जब दो वस्तुओं के बीच समानता को सिद्ध किया जाता है, लेकिन यहाँ दो अलग-अलग सिद्धांतों के बीच तुलना की जा रही है, जो सार्वभौमिक रूप से सही नहीं मानी जा सकती।

निष्कर्ष: यह आयत 'Upamana' के सिद्धांत के अनुसार तार्किक रूप से सही नहीं है, क्योंकि इसमें तुलना दो अलग-अलग तत्वों के बीच की जा रही है जो सार्वभौमिक रूप से मान्य नहीं हो सकती।

आयत 60:

कुरआनी आयत: और उसके पास ग़ैब की कुन्जियाँ हैं जिनको उसके सिवा कोई नहीं जानता और जो कुछ खुश्की और तरी में है उसको (भी) वही जानता है और कोई पत्ता भी नहीं खटकता मगर वह उसे ज़रुर जानता है और ज़मीन की तारिक़ियों में कोई दाना और न कोई ख़ुष्क चीज़ है मगर वह नूरानी किताब (लौहे महफ़ूज़) में मौजूद है।

न्याय तत्व (Pramana - प्रमाण):

प्रश्नों का मार्गदर्शन:

1. क्या इस आयत में 'Pramana' (प्रमाण) का सिद्धांत सही है?
2. क्या इसमें दी गई जानकारी प्रमाणिक और तर्कसंगत है?
3. क्या यह आयत वैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्वीकार्य है?

विश्लेषण:

- इस आयत में अल्लाह के पास ग़ैब (अज्ञेय) ज्ञान की बात की गई है, और यह कहा गया है कि वह सभी घटनाओं को जानता है, चाहे वह जमीन पर हो या आकाश में। यह आयत एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं दिया गया। 'Pramana' के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी दावे का सत्य प्रमाणित किया जाना चाहिए, और यह आयत इस तरह का कोई प्रमाण प्रदान नहीं करती।
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, ग़ैब की जानकारी का होना सिद्धांतों और प्रमाणों पर आधारित नहीं है, और इसे केवल विश्वास के तौर पर माना जा सकता है।

निष्कर्ष: यह आयत 'Pramana' के सिद्धांत के अनुसार वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणिक नहीं मानी जा सकती, क्योंकि इसमें किसी प्रकार का ठोस प्रमाण या व्याख्या नहीं दी गई है।

कुल निष्कर्ष:

इन आयतों में जिन तात्त्विकताओं और दार्शनिक तत्वों की चर्चा की गई है, वे मुख्य रूप से विश्वास पर आधारित हैं, और इनका वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण से विश्लेषण करना कठिन है। न्याय दर्शन के विभिन्न तत्वों का उपयोग करते हुए यह दिखाया गया कि इन आयतों में बहुत सारे तार्किक, दार्शनिक, और प्रमाणिक अंतर हैं जो इनको सार्वभौमिक रूप से सही सिद्ध करने में विफल रहते हैं।

आयत 61 का विश्लेषण

कुरआन आयत 61:
"वह वही (ख़ुदा) है जो तुम्हें रात को (नींद में एक तरह पर दुनिया से) उठा लेता है और जो कुछ तूने दिन को किया है जानता है फिर तुम्हें दिन को उठा कर खड़ा करता है ताकि (ज़िन्दगी की) (वह) मियाद जो (उसके इल्म में) मुअय्युन है पूरी की जाए फिर (तो आख़िर) तुम सबको उसी की तरफ लौटना है फिर जो कुछ तुम (दुनिया में भला बुरा) करते हो तुम्हें बता देगा।"

Nyaya Darshan तत्व: Pramana (सत्य का प्रमाण)

प्रश्नों का मार्गदर्शन:

1. **क्या इस आयत में प्रस्तुत जानकारी सत्य के प्रमाण के रूप में स्वीकृत की जा सकती है?**
2. **क्या यह आयत सत्य को प्रमाणित करने के लिए वैध ज्ञान के साधनों पर आधारित है?**
3. **क्या आयत में वर्णित घटनाएँ और तथ्य वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सत्य हैं?**

विश्लेषण:

यह आयत कहती है कि अल्लाह जानता है कि हम दिन में क्या करते हैं और रात को हमें उसकी उपस्थिति का एहसास कराता है, जिससे जीवन की मियाद पूरी हो सके। इसमें गहरे विश्वास की बात की जा रही है कि हमारा जीवन एक निश्चित समय में समाप्त होगा और हम सब को अल्लाह के पास लौटना है। यह आयत सामान्य ज्ञान और मानसिक रूप से सत्य के प्रति विश्वास पर आधारित है, परंतु इसका वैज्ञानिक आधार और सत्यापन का कोई ठोस प्रमाण नहीं दिया गया है।

सत्य के प्रमाण (Pramana) की दृष्टि से, इस आयत में दी गई जानकारी को केवल धार्मिक विश्वास माना जा सकता है, जिसका कोई अनुभवात्मक, निरीक्षणीय या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। जबकि अल्लाह के द्वारा उठाए जाने की बात की जाती है, यह एक अदृश्य और आध्यात्मिक घटना मानी जाती है, जिसे न तो भौतिक विज्ञान से प्रमाणित किया जा सकता है और न ही इसे व्यावहारिक तरीके से देखा जा सकता है।

निष्कर्ष:

यह आयत प्रामाणिक सत्य (Pramana) की दृष्टि से स्वीकार्य नहीं है, क्योंकि इसमें दी गई घटनाएँ और तथ्यों का कोई ठोस और प्रमाणित आधार नहीं है। यह केवल विश्वास और धर्म पर आधारित जानकारी है, जिसे सार्वभौमिक सत्य के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता।

आयत 62 का विश्लेषण

कुरआन आयत 62:
"वह अपने बन्दों पर ग़ालिब है वह तुम लोगों पर निगेहबान (फ़रिश्ते तैनात करके) भेजता है-यहाँ तक कि जब तुम में से किसी की मौत आए तो हमारे भेजे हुये फ़रिश्ते उसको (दुनिया से) उठा लेते हैं और वह (हमारे तामीले हुक्म में ज़रा भी) कोताही नहीं करते।"

Nyaya Darshan तत्व: Vyapti (अनिवार्य सहसंबंध)

प्रश्नों का मार्गदर्शन:

1. **क्या इस आयत में 'Vyapti' (अनिवार्य सहसंबंध) का सिद्धांत सही तरीके से लागू किया गया है?**
2. **क्या आयत में यह दावा किया गया है कि मौत के समय फरिश्तों द्वारा जीवन की समाप्ति हमेशा होती है, और यह सत्य है?**
3. **क्या यह आयत सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य है?**

विश्लेषण:

इस आयत में यह कहा गया है कि फरिश्ते मौत के समय इंसान को उठा लेते हैं और किसी भी प्रकार की कोताही नहीं करते। यहाँ एक अनिवार्य सहसंबंध (Vyapti) स्थापित किया गया है कि हर मौत का कारण और तरीका फरिश्तों के हाथ में है। हालांकि, यह दावा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से असंगत है, क्योंकि मृत्यु के प्राकृतिक कारणों की व्याख्या की जा सकती है और इन्हें स्वतंत्र रूप से प्रमाणित किया जा सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, मृत्यु के कारण प्राकृतिक होते हैं, जैसे शारीरिक विफलता, बीमारी, दुर्घटनाएँ, आदि। इन सभी घटनाओं में किसी "फरिश्ते" की भूमिका का प्रमाण नहीं मिलता, जो इसे तार्किक रूप से अस्वीकार्य बनाता है। यह तर्क यह भी सिद्ध करता है कि मृत्यु एक प्रकृति-नियमित घटना है, जिसे बाहरी शक्तियाँ नियंत्रित नहीं करतीं।

निष्कर्ष:

यह आयत Vyapti (अनिवार्य सहसंबंध) के दृष्टिकोण से गलत है, क्योंकि इसमें मृत्यु के प्राकृतिक कारणों को नजरअंदाज किया गया है और इसे बिना प्रमाणित तर्क के आध्यात्मिक दृष्टिकोण से जोड़ दिया गया है। यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं है और इसे केवल धार्मिक विश्वास के रूप में देखा जा सकता है।

आयत 63 का विश्लेषण

कुरआन आयत 63:
"फिर ये लोग अपने सच्चे मालिक ख़ुदा के पास वापस बुलाए गए-आगाह रहो कि हुकूमत ख़ास उसी के लिए है और वह सबसे ज़्यादा हिसाब लेने वाला है।"

Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)

प्रश्नों का मार्गदर्शन:

1. **क्या इस आयत में प्रस्तुत किया गया कारण (Hetu) तार्किक रूप से स्वीकार्य है?**
2. **क्या यह आयत किसी ठोस तर्क या प्रमाण पर आधारित है?**
3. **क्या यह आयत सार्वभौमिक रूप से सभी मनुष्यों पर लागू होती है?**

विश्लेषण:

यह आयत कहती है कि सब लोग अंत में अल्लाह के पास लौटेंगे और वह सबसे बड़ा हिसाब लेने वाला है। इसका कारण यह बताया गया है कि अल्लाह के पास पूरी हुकूमत है। यह आध्यात्मिक दृष्टिकोण है, जिसे वैज्ञानिक या तर्कसंगत रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जो पूरे जीवन के बाद के हिसाब-किताब की बात करती है। इस दृष्टिकोण में कोई ठोस या प्रमाणित तर्क नहीं दिया गया है, जिससे यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य न हो सके।

निष्कर्ष:

यह आयत Hetu (कारण) के दृष्टिकोण से भी अव्यवस्थित है, क्योंकि इसमें दिया गया कारण धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।

आयत 64 और 65 का विश्लेषण

कुरआन आयत 64:
"(ऐ रसूल) उनसे पूछो कि तुम खुश्की और तरी के (घटाटोप) अॅधेरों से कौन छुटकारा देता है जिससे तुम गिड़ गिड़ाकर और (चुपके) दुआए माँगते हो कि अगर वह हमें (अब की दफ़ा) उस (बला) से छुटकारा दे तो हम ज़रुर उसके शुक्र गुज़ार (बन्दे होकर) रहेगें।"

कुरआन आयत 65:
"तुम कहो उन (मुसीबतों) से और हर बला में ख़ुदा तुम्हें नजात देता है (मगर अफसोस) उस पर भी तुम शिर्क करते ही जाते हो।"

Nyaya Darshan तत्व: Prameya (ज्ञान का विषय)

प्रश्नों का मार्गदर्शन:

1. **क्या इन आयतों में ज्ञान का विषय (Prameya) सही और प्रमाणित किया गया है?**
2. **क्या यह आयतें दुआ और मुसीबत के बारे में सार्वभौमिक साक्ष्य प्रदान करती हैं?**
3. **क्या आयतें किसी ठोस और प्रमाणित ज्ञान पर आधारित हैं?**

विश्लेषण:

इन आयतों में यह कहा गया है कि हर मुसीबत से छुटकारा देने वाला केवल अल्लाह है, और फिर भी लोग उस पर विश्वास नहीं करते। यह ज्ञान का विषय (Prameya) प्रस्तुत करता है कि अल्लाह के अलावा किसी अन्य से मदद नहीं मिल सकती। हालांकि, इसे वैज्ञानिक या तर्कसंगत दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है।

इस आयत का विषय केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और इसका कोई वास्तविक प्रमाण नहीं है कि मुसीबतों से केवल अल्लाह ही नजात दिला सकता है। प्रायोगिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो

अनेक प्राकृतिक और चिकित्सा कारणों से भी मुसीबतों से छुटकारा पाया जा सकता है, जो इस धार्मिक दृष्टिकोण को कमजोर बनाता है।

निष्कर्ष:

यह आयत Prameya (ज्ञान का विषय) के दृष्टिकोण से भी अव्यवस्थित है, क्योंकि इसका विषय केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो सार्वभौमिक रूप से सभी व्यक्तियों के लिए स्वीकार्य नहीं हो सकता।

आयत 66 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 66:**
   "(ऐ रसूल) तुम कह दो कि वही उस पर अच्छी तरह क़ाबू रखता है कि अगर (चाहे तो) तुम पर अज़ाब तुम्हारे (सर के) ऊपर से नाज़िल करे या तुम्हारे पाव के नीचे से (उठाकर खड़ा कर दे) या एक गिरोह को दूसरे से भिड़ा दे और तुम में से कुछ लोगों को बाज़ आदमियों की लड़ाई का मज़ा चखा दे ज़रा ग़ौर तो करो हम किस किस तरह अपनी आयतों को उलट पुलट के बयान करते हैं ताकि लोग समझे।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**
   - **आयत में अज़ाब के तीन प्रकार बताए गए हैं, लेकिन कोई ठोस तर्क नहीं दिया गया है।**
   - **अज़ाब का कारण धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, न कि तर्क या वैज्ञानिक प्रमाण पर।**
   - **यह दावा एक सांस्कृतिक दृष्टिकोण है, जो सार्वभौमिक रूप से सही या गलत नहीं ठहराया जा सकता।**
3. **निष्कर्ष:**
   - **आयत में प्रस्तुत अज़ाब के कारणों का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है।**
   - **यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण है, जिसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता।**

आयत 67 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 67:**
   "और उसी (कुरान) को तुम्हारी क़ौम ने झुठला दिया हालाँकि वह बरहक़ है (ऐ रसूल) तुम उनसे कहो कि मैं तुम पर कुछ निगेहबान तो हूँ नहीं हर ख़बर (के पूरा होने) का एक ख़ास वक़्त मुक़र्रर है और

अनक़रीब (जल्दी) ही तुम जान लोगे।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Vyapti (अनिवार्य सहसंबंध)**
    - **आयत भविष्य के बारे में दावा करती है, लेकिन इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं दिया गया है।**
    - **"जल्दी ही तुम जान लोगे" एक काल्पनिक भविष्यवाणी है, जिसे अनिवार्य सहसंबंध से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
    - **यह केवल एक विश्वास है, जो सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकता।**
3. **निष्कर्ष:**
    - **यह आयत एक भविष्यवाणी करती है, जो प्रमाणिक रूप से साबित नहीं की जा सकती।**
    - **इसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता।**

आयत 68 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 68:**
"और जब तुम उन लोगों को देखो जो हमारी आयतों में बेहूदा बहस कर रहे हैं तो उन (के पास) से टल जाओ यहाँ तक कि वह लोग उसके सिवा किसी और बात में बहस करने लगें और अगर (हमारा ये हुक्म) तुम्हें शैतान भुला दे तो याद आने के बाद ज़ालिम लोगों के साथ हरगिज़ न बैठना।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**
    - **आयत कहती है कि बेहूदा बहस से दूर रहना चाहिए, लेकिन इसका कोई ठोस तर्क नहीं दिया गया है।**
    - **यह केवल एक धार्मिक या नैतिक दृष्टिकोण है, न कि किसी तर्कसंगत या वैज्ञानिक कारण पर आधारित।**
    - **यह दृष्टिकोण सार्वभौमिक रूप से चुनौतीपूर्ण हो सकता है।**
3. **निष्कर्ष:**
    - **यह आयत एक नैतिक अनुशासन के बारे में बात करती है, लेकिन इसका कोई तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया है।**
    - **इसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं माना जा सकता।**

आयत 69 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 69:**
   "और ऐसे लोगों (के हिसाब किताब) का जवाब देही कुछ परहेज़गारो पर तो है नहीं मगर (सिर्फ नसीहतन) याद दिलाना (चाहिए) ताकि ये लोग भी परहेज़गार बनें।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**

   - **आयत कहती है कि केवल परहेज़गार लोग ही दूसरों को नसीहत दे सकते हैं, लेकिन इसका कोई स्पष्ट कारण नहीं दिया गया है।**
   - **यह एक धार्मिक दृष्टिकोण है, लेकिन इसका कोई तर्क या वैज्ञानिक कारण नहीं है।**
   - **यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकता।**

3. **निष्कर्ष:**

   - **यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से आधारित है और इसका कोई तर्क नहीं दिया गया है।**
   - **इसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं माना जा सकता।**

आयत 70 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 70:**
   "और जिन लोगों ने अपने दीन को खेल और तमाषा बना रखा है और दुनिया की ज़िन्दगी ने उन को धोके में डाल रखा है ऐसे लोगों को छोड़ो और कुरान के ज़रिए से उनको नसीहत करते रहो (ऐसा न हो कि कोई) शख्स़ अपने करतूत की बदौलत मुब्तिलाए बला हो जाए (क्योंकि उस वक़्त) तो ख़ुदा के सिवा उसका न कोई सरपरस्त होगा न सिफारिषी और अगर वह अपने गुनाह के ऐवज़ सारे (जहाँन का) बदला भी दे तो भी उनमें से एक न लिया जाएगा जो लोग अपनी करनी की बदौलत मुब्तिलाए बला हुए है उनको पीने के लिए खौलता हुआ गर्म पानी (मिलेगा) और (उन पर) दर्दनाक अज़ाब होगा क्योंकर वह कुफ्ऱ किया करते थे।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**

   - **आयत में कहा गया है कि जो लोग अपने धर्म को मजाक बनाते हैं, उन्हें अज़ाब मिलेगा, लेकिन इसका कोई प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया।**
   - **यह केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है और इसका कोई तर्क या कारण नहीं है।**

- इसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक आधार नहीं है।

3. **निष्कर्ष:**

   - **यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इसका कोई प्रमाणिक तर्क नहीं दिया गया है।**
   - **इसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता।**

आयत 71 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 71:**
   "(ऐ रसूल) उनसे पूछो तो कि क्या हम लोग ख़ुदा को छोड़कर उन (माबूदों) से मुनाज़ात (दुआ) करे जो न तो हमें नफ़ा पहुचा सकते हैं न हमारा कुछ बिगाड़ ही सकते हैं- और जब ख़ुदा हमारी हिदायत कर चुका) उसके बाद उल्टे पावँ कुफ्र की तरफ उस शख़्स की तरह फिर जाए जिसे शैतानों ने जंगल में भटका दिया हो और वह हैरान (परेषान) हो (कि कहा जाए क्या करें) और उसके कुछ रफीक़ हो कि उसे राहे रास्त (सीधे रास्ते) की तरफ पुकारते रह जाए कि (उधर) हमारे पास आओ और वह एक न सुने (ऐ रसूल) तुम कह दो कि हिदायत तो बस ख़ुदा की हिदायत है और हमें तो हुक्म ही दिया गया है कि हम सारे जहाँन के परवरदिगार ख़ुदा के फरमाबरदार हैं।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**

   - **आयत में दावा किया गया है कि केवल ख़ुदा की हिदायत से ही सही रास्ते पर चला जा सकता है और किसी और की मदद से नहीं। लेकिन यह तर्क पूर्ण रूप से व्यक्ति की स्वतंत्रता और निर्णय क्षमता की अनदेखी करता है।**
   - **तर्क का अभाव: आयत में कोई तर्क नहीं दिया गया है कि क्यों केवल ख़ुदा के मार्गदर्शन पर निर्भर रहना चाहिए और क्यों अन्य स्रोतों से हिदायत लेना असंभव है। यह मानवीय स्वतंत्रता और विवेक का उल्लंघन करता है, जिसे अन्य दार्शनिक दृष्टिकोणों में स्वीकार किया जाता है।**

3. **Purva Mimamsa संदर्भ:**

   - **स्वतंत्रता और कर्मों की स्वीकृति: पुरवा मीमांसा में व्यक्ति के कर्मों की स्वायत्तता और धार्मिक कर्तव्यों के पालन की स्वतंर्तता को महत्व दिया गया है। यह आयत उस दृष्टिकोण से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें व्यक्ति की स्वतंत्रता और निर्णय क्षमता पर सवाल उठाया जाता है।**

4. **निष्कर्ष:**
    - **आयत का संदेश व्यक्ति की स्वतंत्रता और विवेक पर जोर देने वाले दर्शन के खिलाफ है। यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकता।**

आयत 72 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 72:**
   "और ये (भी हुक्म हुआ है) कि पाबन्दी से नमाज़ पढ़ा करो और उसी से डरते रहो और वही तो वह (ख़ुदा) है जिसके हुज़ूर में तुम सब के सब हाज़िर किए जाओगे।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Prama (ज्ञान का प्रमाण)**
    - **आयत में यह दावा किया गया है कि सभी लोग अंततः ख़ुदा के सामने प्रस्तुत होंगे, लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं दिया गया।**
    - **यह दावा केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, न कि भौतिक या अनुभवात्मक प्रमाणों पर।**
    - **यह ज्ञान का प्रमाण और तर्क संगत आधार नहीं प्रस्तुत करता, इसलिए इसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार करना कठिन है।**
3. **Vaisheshika संदर्भ:**
    - **वैशेषिक दर्शन के अनुसार प्रमाण: वैशेषिक दर्शन में किसी भी सत्य को प्रमाणित करने के लिए भौतिक और आंतरिक प्रमाण की आवश्यकता होती है। आयत में दिए गए दावे का कोई ठोस भौतिक प्रमाण नहीं है, जो इसे वैशेषिक दर्शन के दृष्टिकोण से साबित किया जा सके।**
4. **निष्कर्ष:**
    - **आयत का दावा बिना किसी प्रमाण के है, और यह सार्वभौमिक रूप से सभी मानवता के लिए स्वीकार्य नहीं हो सकता।**

आयत 73 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 73:**
   "वह तो वह (ख़ुदा है) जिसने ठीक ठीक बहुतेरे आसमान व ज़मीन पैदा किए और जिस दिन (किसी चीज़ को) कहता है कि हो जा तो (फौरन) हो जाती है।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Vyapti (अनिवार्य सहसंबंध)**

   - **आयत में यह दावा किया गया है कि ख़ुदा के शब्दों से ब्रह्मांड की उत्पत्ति होती है, लेकिन इसका कोई ठोस वैज्ञानिक आधार नहीं है।**
   - **यह दावा अनिवार्य सहसंबंध के सिद्धांत से मेल नहीं खाता, क्योंकि यह भौतिक प्रक्रियाओं और घटनाओं का वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित कारण नहीं प्रस्तुत करता।**

3. **Sankhya Yoga संदर्भ:**

   - **सांख्य दर्शन के अनुसार: सांख्य दर्शन में सृष्टि की उत्पत्ति और घटनाओं के पीछे प्राकृतिक नियमों और कारणों का विश्लेषण किया जाता है। आयत में दिए गए दावे के अनुसार प्रकृति और सृष्टि की घटनाओं को केवल ख़ुदा के आदेश से जोड़ा गया है, जो सांख्य के तर्क के खिलाफ है।**

4. **निष्कर्ष:**

   - **आयत का दावा भौतिक घटनाओं और उनके कारणों को केवल धार्मिक दृष्टिकोण से जोड़ता है, जो सांस्कृतिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अस्वीकार्य है।**

आयत 74 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 74:**
   "उसका क़ौल सच्चा है और जिस दिन सूर फूका जाएगा (उस दिन) ख़ास उसी की बादशाहत होगी (वही) ग़ायब हाज़िर (सब) का जानने वाला है और वही दाना वाक़िफकार है।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Pramana (ज्ञान का प्रमाण)**

   - **आयत में दावा किया गया है कि सूर फूके जाने पर सभी लोग ख़ुदा के सामने होंगे, लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं दिया गया।**
   - **यह धार्मिक विश्वास पर आधारित है, न कि वास्तविक प्रमाणों पर।**

   - यह दावा भौतिक या अनुभवात्मक प्रमाण पर आधारित नहीं है, जो इसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं बनाता।
3. **Uttara Mimamsa (Vedanta) संदर्भ:**
   - उत्तरा मीमांसा (वेदांत) के अनुसार: वेदांत में आत्मा और परमात्मा के ज्ञान पर जोर दिया जाता है, लेकिन इसके साथ साथ भौतिक और सापेक्षिक दृष्टिकोण को भी समझा जाता है। आयत में जो दावे किए गए हैं, वे केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं, जो वैज्ञानिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण से मेल नहीं खाते।
4. **निष्कर्ष:**
   - आयत में दिए गए दावे बिना किसी प्रमाण के हैं और यह एक विश्वास के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह सार्वभौमिक रूप से सभी मानवता के लिए स्वीकार्य नहीं हो सकता।

आयत 75 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 75:**
   "(ऐ रसूल) उस वक़्त का याद करो) जब इबराहीम ने अपने (मुँह बोले) बाप आज़र से कहा क्या तुम बुतों को ख़ुदा मानते हो-मै तो तुमको और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में देखता हूँ।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**
   - आयत में इब्राहीम का यह कथन है कि वह अपने पिता को गुमराही में देखते हैं, लेकिन इसमें कोई ठोस तर्क नहीं है कि क्यों बुतों की पूजा गलत है।
   - यह दावा केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, न कि किसी तर्कसंगत कारण पर।
3. **Manusmriti संदर्भ:**
   - मनुस्मृति में धार्मिक भिन्नताओं का आदान-प्रदान: मनुस्मृति में विभिन्न धार्मिक विश्वासों का आदान-प्रदान और सम्मान किया गया है, जबकि आयत का संदेश उन विश्वासों को गलत ठहराता है। यह दृष्टिकोण सार्वभौमिक रूप से भिन्न धार्मिक विचारों का सम्मान करने से संबंधित नहीं है।
4. **निष्कर्ष:**

- **आयत का दावा धार्मिक विचारों की विविधता को नकारता है और इसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता।**

आयत 76 से 80 का विश्लेषण

आयत 76 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 76:**
   "और (जिस तरह हमने इबराहीम को दिखाया था कि बुत क़ाबिले परसतिश (पूजने के क़ाबिल) नहीं) उसी तरह हम इबराहीम को सारे आसमान और ज़मीन की सल्तनत का (इन्तज़ाम) दिखाते रहे ताकि वह (हमारी वहदानियत का) यक़ीन करने वालों से हो जाए।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**
   - **आयत में दावा किया गया है कि इब्राहीम को आसमान और ज़मीन की सल्तनत दिखाने का कारण यह था कि वह यकीन करने वालों से हो जाएं। यह तर्क बिना स्पष्ट कारण के है कि क्यों सिर्फ दिखाने से विश्वास स्थापित होगा।**
   - **यह तर्क सतही है क्योंकि यकीन केवल दिखाए गए प्रमाणों पर नहीं, बल्कि व्यक्तिगत अनुभव और विवेक पर आधारित होता है।**
3. **Purva Mimamsa संदर्भ:**
   - **पुरवा मीमांसा के अनुसार: इस दर्शन में विश्वास और कर्मों का तात्कालिक प्रभाव महत्वपूर्ण होता है। केवल बाहरी प्रदर्शनों से विश्वास स्थापित करना भ्रामक हो सकता है, क्योंकि सही और गलत का निर्धारण व्यक्ति के आंतरिक अनुभव और संज्ञान पर आधारित होना चाहिए।**
4. **निष्कर्ष:**
   - **यह आयत विश्वसनीयता के निर्माण के लिए बाहरी प्रमाणों को प्राथमिकता देती है, लेकिन यह आयत तात्त्विक सत्य को स्थापित करने में नाकाम रहती है। इसलिए यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकती।**

आयत 77 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 77:**
   "तो जब उन पर रात की तारीक़ी (अंधेरा) छा गयी तो एक सितारे को देखा तो दफअतन बोल उठे (हाए क्या) यही मेरा ख़ुदा है फिर जब वह डूब गया तो कहने लगे ग़ुरुब (डूब) हो जाने वाली चीज़ को तो मै (ख़ुदा बनाना) पसन्द नहीं करता।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Pramana (ज्ञान का प्रमाण)**

   - **आयत में इब्राहीम को एक सितारे को देखकर उसे भगवान मानने की प्रक्रिया दिखाई गई है, लेकिन यह ज्ञान का प्रमाण नहीं है।**
   - **इब्राहीम का विचार यह दर्शाता है कि वह वास्तविक प्रमाण की तलाश में थे, लेकिन सितारा किसी स्थिर या सत्य प्रमाण के रूप में कार्य नहीं कर सकता था। यह ज्ञान की विश्वसनीयता के सिद्धांत के खिलाफ है।**

3. **Vaisheshika संदर्भ:**

   - **वैशेषिक दर्शन के अनुसार: सभी प्राकृतिक घटनाओं के पीछे निश्चित कारण और सिद्धांत होते हैं, जिन्हें वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित किया जा सकता है। यह घटना, जिसमें इब्राहीम एक सितारे को भगवान मानते हैं, वैशेषिक दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है, क्योंकि इसे भौतिक प्रमाण या तर्कसंगत कारणों के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है।**

4. **निष्कर्ष:**

   - **यह आयत बिना किसी भौतिक प्रमाण के, एक तात्कालिक दिखावे पर आधारित विश्वास को बढ़ावा देती है, जो वैशेषिक और न्यायिक दृष्टिकोण से गलत है।**

आयत 78 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 78:**
   "फिर जब चाँद को जगमगाता हुआ देखा तो बोल उठे (क्या) यही मेरा ख़ुदा है फिर जब वह भी ग़ुरुब हो गया तो कहने लगे कि अगर (कहीं) मेरा (असली) परवरदिगार मेरी हिदायत न करता तो मैं ज़रुर गुमराह लोगों में हो जाता।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Prameya (ज्ञान का उद्देश्य)**

- ○ **आयत में इब्राहीम के द्वारा चाँद को भगवान मानने की प्रक्रिया को दर्शाया गया है, लेकिन यह ज्ञान का उद्देश्य और प्रमाण से अनजान है।**
- ○ **यह केवल एक शंका या भ्रम की स्थिति का परिचायक है, जिसमें ज्ञान और समझ का स्पष्ट उद्देश्य और परिभाषा नहीं है।**

3. **Sankhya Yoga संदर्भ:**

   - ○ **सांख्य योग के अनुसार: योग और आत्मज्ञान में ध्यान और आत्मा की पहचान पर जोर दिया गया है, न कि बाहरी दुनिया की अस्थायी घटनाओं पर आधारित विश्वासों पर। आयत का संदेश तात्कालिक भौतिक घटनाओं के आधार पर विश्वास की स्थापना का प्रयास करता है, जो सांख्य योग के दृष्टिकोण से अस्वीकार्य है।**

4. **निष्कर्ष:**

   - ○ **यह आयत बाहरी घटनाओं पर आधारित भ्रमित विश्वास को बढ़ावा देती है, जो साक्षात प्रमाण और आत्मज्ञान की खोज के मुकाबले निराधार है।**

आयत 79 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 79:**
   "फिर जब आफताब को दमकता हुआ देखा तो कहने लगे (क्या) यही मेरा ख़ुदा है ये तो सबसे बड़ा (भी) है फिर जब ये भी ग़ुरुब हो गया तो कहने लगे ऐ मेरी क़ौम जिन जिन चीज़ों को तुम लोग (ख़ुदा का) शरीक बनाते हो उनसे मैं बेज़ार हूँ।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Vyapti (अनिवार्य सहसंबंध)**

   - ○ **इस आयत में इब्राहीम को सूरज को भगवान मानने का विचार आता है, लेकिन जब सूरज डूब जाता है तो वह उसे भी अस्वीकार कर देते हैं। यह घटनाओं के बीच अनिवार्य सहसंबंध का अभाव दिखाता है।**
   - ○ **सूरज और भगवान के बीच कोई स्थिर और अनिवार्य संबंध नहीं है, और इसलिए यह तर्क क़ायम नहीं रहता।**

3. **Uttara Mimamsa (Vedanta) संदर्भ:**

- वेदांत दर्शन के अनुसार: आत्मा और परमात्मा का अद्वितीय और निराकार रूप है, न कि यह बाहर की दुनिया की अस्थायी चीजों पर आधारित है। आयत में जो विचार प्रस्तुत किया गया है, वह वेदांत के तात्त्विक सिद्धांत से मेल नहीं खाता।

4. **निष्कर्ष:**

    - यह आयत अस्थायी और भौतिक चीजों को भगवान मानने के विचार को प्रस्तुत करती है, जो वेदांत और न्यायिक दृष्टिकोण से गलत है।

आयत 80 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 80:**
   "(ये हरगिज़ नहीं हो सकते) मैने तो बातिल से कतराकर उसकी तरफ से मुँह कर लिया है जिसने बहुतेरे आसमान और ज़मीन पैदा किए और मैं मुशरेकीन से नहीं हूँ।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**

    - आयत में इब्राहीम ने यह दावा किया है कि वह केवल उस भगवान की पूजा करते हैं जिसने आकाश और पृथ्वी को उत्पन्न किया।
    - हालांकि, यह तर्क बाहरी साक्ष्य और प्रमाण से असंपुष्ट है, और केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।

3. **Manusmriti संदर्भ:**

    - मनुस्मृति में विविधताओं का सम्मान: मनुस्मृति में विभिन्न धार्मिक विचारों और विश्वासों का सम्मान किया गया है, जबकि आयत में केवल एक ही पंथ को सही ठहराया गया है और अन्य विश्वासों को अस्वीकार किया गया है।

4. **निष्कर्ष:**

    - यह आयत धार्मिक भिन्नताओं और विश्वासों का सम्मान नहीं करती और इसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता।

समग्र निष्कर्ष

इन आयतों में इब्राहीम के द्वारा दिखाई गई प्रक्रिया और विश्वास का आधार केवल बाहरी चीजों और घटनाओं पर आधारित है, जो अन्य दार्शनिक दृष्टिकोणों से वैज्ञानिक, तर्कसंगत और प्रमाण आधारित नहीं हैं। आयतें धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं और इनका संदेश सार्वभौमिक रूप से सभी मानवता के लिए स्वीकार्य नहीं हो सकता।

आयत 81 से 85 का विश्लेषण

आयत 81 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 81:**
   "और उनकी क़ौम के लोग उनसे हुज्जत करने लगे तो इबराहीम ने कहा था क्या तुम मुझसे ख़ुदा के बारे में हुज्जत करते हो हालाँकि वह यक़ीनी मेरी हिदायत कर चुका और तुम मे जिन बुतों को उसका शरीक मानते हो मै उनसे डरता (वरता) नहीं (वह मेरा कुछ नहीं कर सकते) मगर हा मेरा ख़ुदा खुद (करना) चाहे तो अलबत्ता कर सकता है मेरा परवरदिगार तो बाएतबार इल्म के सब पर हावी है तो क्या उस पर भी तुम नसीहत नहीं मानते।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**
   - **इब्राहीम अपनी क़ौम के लोगों से कह रहे हैं कि वह उन बुतों से नहीं डरते, जिनका कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं है। वह इस आधार पर तर्क कर रहे हैं कि उनका भगवान, जो सर्वशक्तिमान है, उन पर ज्ञान के कारण हावी है।**
   - **यह तर्क एक तरह से निष्कलंक है, क्योंकि इब्राहीम के द्वारा प्रस्तुत किए गए "ख़ुदा" का अस्तित्व और उसकी विशेषताएं बिना स्पष्ट प्रमाण और तर्क के हैं। यहाँ पर केवल विश्वास और व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित तर्क दिया गया है।**
3. **Vaisheshika संदर्भ:**
   - **वैशेषिक दर्शन के अनुसार: यह दर्शन भौतिक घटनाओं और उनके कारणों का विश्लेषण करता है। इस आयत में भगवान के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए कोई भौतिक या तात्त्विक कारण प्रस्तुत नहीं किया गया है।**
4. **निष्कर्ष:**
   - **यह आयत ज्ञान के आधार पर तर्क नहीं करती, बल्कि एक विश्वास पर आधारित है, जो वैशेषिक दर्शन के दृष्टिकोण से स्वीकार्य नहीं है।**

आयत 82 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 82:**
   "और जिन्हें तुम ख़ुदा का शरीक बताते हो मैं उन से क्यों डरुँ जब तुम इस बात से नहीं डरते कि तुमने ख़ुदा का शरीक ऐसी चीज़ों को बनाया है जिनकी ख़ुदा ने कोई सनद तुम पर नहीं नाज़िल की फिर अगर तुम जानते हो तो (भला बताओ तो सही कि) हम दोनों फरीक़ (गिरोह) में अमन क़ायम रखने का ज़्यादा हक़दार कौन है।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Pramana (ज्ञान का प्रमाण)**

   - **इब्राहीम की बात यह है कि वह उन चीजों से क्यों डरेंगे जो उनके हिसाब से बेमानी और बिना प्रमाण के हैं। यह तर्क ज्ञान के प्रमाण पर आधारित है, लेकिन यह प्रमाण न तो भौतिक है, न ही प्रमाणिकता के अनुसार सही है।**
   - **यहाँ पर इब्राहीम ने यह दावा किया है कि जो लोग बुतों की पूजा करते हैं, उनका कोई वैध प्रमाण नहीं है, लेकिन यह बात बिना किसी सुसंगत प्रमाण के कही गई है।**

3. **Sankhya Yoga संदर्भ:**

   - **सांख्य योग के अनुसार: हर व्यक्ति को अपने स्वयं के आत्मज्ञान और विवेक का अनुसरण करना चाहिए, न कि बाहरी अंधविश्वासों और बुतों पर निर्भर होना चाहिए। इब्राहीम का दृष्टिकोण यह दर्शाता है कि वह व्यक्तिगत विवेक और आत्मज्ञान को प्राथमिकता देते हैं। हालांकि, बिना वैध प्रमाण के इस प्रकार का दावा सांख्य योग के सिद्धांतों के अनुरूप नहीं है।**

4. **निष्कर्ष:**

   - **यह आयत प्रमाण के अभाव में तर्क करती है और उसे प्रमाणिकता के सिद्धांत से नहीं जोड़ा जा सकता, इसलिए इसे सुसंगत नहीं माना जा सकता।**

आयत 83 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 83:**
   "जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अपने ईमान को ज़ुल्म (शिर्क) से आलूदा नहीं किया उन्हीं

लोगों के लिए अमन (व इतमिनान) है और यही लोग हिदायत याफ़ता हैं।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Vyapti (अनिवार्य सहसंबंध)**
    - **इस आयत में दावा किया गया है कि जो लोग अपने विश्वास को शिर्क से बचाए रखते हैं, उन्हें अमन और शांति मिलती है। यह एक प्रकार का अनिवार्य सहसंबंध है, लेकिन यह सही नहीं हो सकता क्योंकि शिर्क से बचने का मतलब यह नहीं हो सकता कि किसी व्यक्ति को स्वचालित रूप से शांति मिल जाएगी।**
    - **शांति और सुख का अनुभव कई अन्य कारकों पर निर्भर करता है, जैसे कि व्यक्ति का आंतरिक विकास, सामूहिक सामंजस्य, और सामाजिक न्याय।**
3. **Purva Mimamsa संदर्भ:**
    - **पुरवा मीमांसा के अनुसार, व्यक्ति के कर्म और उनके परिणामों का विश्लेषण किया जाता है, न कि केवल विश्वास के आधार पर। आयत में शिर्क से बचने को शांति के लिए पर्याप्त बताया गया है, जबकि पुरवा मीमांसा इस विचार से असहमत होगी।**
4. **निष्कर्ष:**
    - **यह आयत अमन के प्राप्त होने के लिए केवल शिर्क से बचने को पर्याप्त मानती है, जो नैतिक और तात्त्विक दृष्टिकोण से गलत है, क्योंकि शांति के लिए कई अन्य तत्व भी आवश्यक हैं।**

आयत 84 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 84:**
   "और ये हमारी (समझाई बुझाई) दलीलें हैं जो हमने इबराहीम को अपनी क़ौम पर (ग़ालिब आने के लिए) अता की थी हम जिसके मरतबे चाहते हैं बुलन्द करते हैं बेशक तुम्हारा परवरदिगार हिक़मत वाला बाख़बर है।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**
    - **आयत में इब्राहीम को अपनी क़ौम पर ग़ालिब आने के लिए दलीलें दी गई हैं, और यह तर्क किया गया है कि जो भी व्यक्ति योग्य होता है, उसे ऊँचा दर्जा दिया जाता है। यह तर्क सही है,**

लेकिन केवल ऊँचा दर्जा प्राप्त करना किसी की वास्तविक समझ और ज्ञान का प्रमाण नहीं हो सकता।

3. **Vaisheshika संदर्भ:**
   - **वैशेषिक दर्शन के अनुसार, व्यक्ति की समझ और ज्ञान को भौतिक रूप में साबित किया जा सकता है, न कि केवल उच्च स्थान पाने से ही ज्ञान का स्तर निर्धारित किया जा सकता है।**
4. **निष्कर्ष:**
   - **यह आयत यह मानती है कि उच्च दर्जा प्राप्त करना ज्ञान का प्रमाण है, लेकिन वैशेषिक दर्शन के दृष्टिकोण से यह गलत है क्योंकि ज्ञान को भौतिक रूप से प्रमाणित किया जाना चाहिए।**

आयत 85 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 85:**
   "और हमने इबराहीम को इसहाक़ वा याक़ूब (सा बेटा पोता) अता किया हमने सबकी हिदायत की और उनसे पहले नूह को (भी) हम ही ने हिदायत की और उन्हीं (इबराहीम) को औलाद से दाऊद व सुलेमान व अय्यूब व यूसुफ व मूसा व हारुन (सब की हमने हिदायत की) और नेकों कारों को हम ऐसा ही इल्म अता फरमाते हैं।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Prameya (ज्ञान का उद्देश्य)**
   - **इस आयत में इब्राहीम और अन्य पैगम्बरों को हिदायत देने का दावा किया गया है, लेकिन इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं दिया गया।**
   - **यह ज्ञान के उद्देश्य की ओर इंगीत करता है, लेकिन इसे व्यक्तिगत अनुभव और विश्वास से बाहर निकालकर प्रमाणिक तरीके से प्रस्तुत नहीं किया गया है।**
3. **Sankhya Yoga संदर्भ:**
   - **सांख्य योग में तात्त्विक सिद्धांत और आत्मज्ञान पर बल दिया जाता है। यह आयत बाहरी घटनाओं और व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित है, जो सांख्य योग के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।**
4. **निष्कर्ष:**

- यह आयत हिदायत देने के लिए विश्वास पर आधारित है, न कि प्रमाणित ज्ञान पर, जो इसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं बनाता।

समग्र निष्कर्ष

इन आयतों में इब्राहीम के तर्क और विश्वासों का आधार सिर्फ व्यक्तिगत अनुभव और विश्वास पर आधारित है, जिसमें कोई ठोस तात्त्विक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं दिया गया है। यह दृष्टिकोण न्याय, वैशेषिक, सांख्य योग और अन्य दार्शनिक दृष्टिकोणों से मेल नहीं खाता, और इसलिए यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकता।

आयत 86 से 90 का विश्लेषण

आयत 86 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 86:**
   "और ज़करिया व यहया व ईसा व इलियास (सब की हिदायत की (और ये) सब (ख़ुदा के) नेक बन्दों से हैं।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Vyapti (अनिवार्य सहसंबंध)**

   - इस आयत में यह कहा गया है कि यह पैगम्बर नेक बंदों के रूप में हिदायत पाए थे। हालांकि, इस कथन को एक सार्वभौमिक रूप से सुसंगत तर्क नहीं माना जा सकता क्योंकि किसी व्यक्ति की हिदायत को सीधे तौर पर उसकी नेकाई से जोड़ना एक सामान्यीकृत दृष्टिकोण है।
   - Vyapti सिद्धांत में कहा जाता है कि हर घटना का एक निश्चित कारण और प्रभाव होता है। यदि किसी व्यक्ति की नेकाई का कारण और उसकी हिदायत का कारण स्पष्ट नहीं किया गया हो, तो यह सामान्यीकृत दावा अनुपयुक्त हो सकता है।
3. **Sankhya Yoga संदर्भ:**

   - सांख्य योग में आत्मज्ञान और तात्त्विक विश्लेषण पर बल दिया गया है। यहाँ पर हिदायत का कोई तात्त्विक कारण या गहन आत्मज्ञान का प्रसंग नहीं दिखता, केवल धार्मिक विश्वास और अनुभव पर आधारित है।

4. **निष्कर्ष:**
    - **यह आयत हिदायत और नेकाई को सीधे तौर पर जोड़कर प्रस्तुत करती है, जबकि Nyaya Darshan और Sankhya योग के सिद्धांतों में तात्त्विक कारणों और गहन विश्लेषण की आवश्यकता होती है।**

आयत 87 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 87:**
   "और इसमाइल व इलियास व युनूस व लूत (की भी हिदायत की) और सब को सारे जहाँन पर फ़ज़ीलत अता की।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**
    - **इस आयत में यह कहा गया है कि इन सभी पैगम्बरों को 'फ़ज़ीलत' (श्रेष्ठता) दी गई है। इसका कोई तात्त्विक कारण नहीं बताया गया है कि इन्हें इस श्रेष्ठता का हक़ क्यों मिला।**
    - **Hetu के सिद्धांत के अनुसार, हर घटना के पीछे एक निश्चित कारण होना चाहिए, और यहाँ यह कारण अस्पष्ट है।**
3. **Vaisheshika संदर्भ:**
    - **वैशेषिक दर्शन के अनुसार, हर गुण का एक भौतिक और तात्त्विक कारण होता है। यहाँ पर पैगम्बरों को दी गई श्रेष्ठता को कोई भौतिक या प्रमाणिक कारण नहीं दिया गया है, जिससे यह दृष्टिकोण वैज्ञानिक दृष्टि से अव्यवस्थित लगता है।**
4. **निष्कर्ष:**
    - **यह आयत बिना किसी कारण या तर्क के श्रेष्ठता का दावा करती है, जो Nyaya और Vaisheshika दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।**

आयत 88 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 88:**
   "और (सिर्फ उन्हीं को नहीं बल्कि) उनके बाप दादाओं और उनकी औलाद और उनके भाई बन्दों में

से (बहुतेरों को) और उनके मुन्तख़ब किया और उन्हें सीधी राह की हिदायत की।”

2. **Nyaya Darshan तत्व: Pramana (ज्ञान का प्रमाण)**
    - यहाँ पर यह दावा किया गया है कि पैगम्बरों के परिवार के सदस्य भी हिदायत पर थे। यह दावा बिना किसी प्रमाण के किया गया है, जबकि Nyaya दर्शन के अनुसार, ज्ञान और तर्क प्रमाण पर आधारित होना चाहिए।
    - यह दावा व्यक्तिगत विश्वास पर आधारित है, और इसे प्रमाणित किया जाना चाहिए था, ताकि इसे सही माना जा सके।
3. **Purva Mimamsa संदर्भ:**
    - पुरवा मीमांसा के अनुसार, कर्म और उसके परिणामों का विश्लेषण किया जाता है। इस आयत में कर्म के परिणाम के तौर पर हिदायत दी गई है, लेकिन इसका कोई स्पष्ट तात्त्विक आधार या प्रमाण नहीं दिया गया।
4. **निष्कर्ष:**
    - यह आयत एक बिना प्रमाणित दावे पर आधारित है, जो Nyaya दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।

आयत 89 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 89:**
   ”देखो ये ख़ुदा की हिदायत है अपने बन्दों से जिसको चाहे उसीकी वजह से राह पर लाए और अगर उन लोगों ने शिर्क किया होता तो उनका किया (धरा) सब अकारत हो जाता।”

2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**
    - यहाँ पर कहा गया है कि यदि किसी व्यक्ति ने शिर्क किया होता, तो उसकी मेहनत बेकार हो जाती। यह विचार Hetu के सिद्धांत के विपरीत है, क्योंकि यहाँ पर कोई तात्त्विक या प्रमाणिक कारण नहीं दिया गया है कि शिर्क क्यों मेहनत को व्यर्थ कर देता है।
    - यह एक सामान्यीकृत दावा है, जो केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जबकि Nyaya दर्शन में हर कारण का भौतिक और तात्त्विक आधार होना चाहिए।
3. **Sankhya Yoga संदर्भ:**

- सांख्य योग के अनुसार, व्यक्ति का आत्मज्ञान और उसकी यात्रा उसके कार्यों और ज्ञान पर निर्भर करती है, न कि किसी बाहरी शक्ति द्वारा उसकी मेहनत के स्वीकार या अस्वीकार पर। यह आयत इस दृष्टिकोण से मेल नहीं खाती।

4. **निष्कर्ष:**
   - यह आयत बिना तात्त्विक कारण के शिर्क के प्रभाव पर विचार करती है, जो वैज्ञानिक और तात्त्विक दृष्टिकोण से अव्यवस्थित है।

आयत ९० का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत ९०:**
   "वह लोग थे जिनको हमने (आसमानी) किताब और हुकूमत और नुबूवत अता फरमाई पस अगर ये लोग उसे भी न माने तो (कुछ परवाह नहीं) हमने तो उस पर ऐसे लोगों को मुक़र्रर कर दिया हे जो (उनकी तरह) इन्कार करने वाले नहीं।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Prameya (ज्ञान का उद्देश्य)**
   - इस आयत में यह कहा गया है कि जो लोग किताब, हुकूमत और नुबूवत को न मानते हैं, उनके लिए परवाह नहीं की जाती। यह दृष्टिकोण Prameya सिद्धांत के अनुरूप नहीं है, क्योंकि यह ज्ञान के उद्देश्य और उसके भौतिक प्रमाण के बारे में कोई विश्लेषण नहीं करता।
   - यह केवल विश्वास और धर्म पर आधारित है, जो Nyaya दर्शन के अनुसार, प्रमाणित और तात्त्विक नहीं है।
3. **Vaisheshika संदर्भ:**
   - वैशेषिक दर्शन के अनुसार, ज्ञान और तात्त्विक विवेचन का महत्व होता है। यह आयत केवल विश्वास पर आधारित है, जो वैशेषिक सिद्धांत से मेल नहीं खाती।
4. **निष्कर्ष:**
   - यह आयत बिना प्रमाण और तात्त्विक विश्लेषण के विश्वास पर आधारित है, जो Nyaya और Vaisheshika दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

समग्र निष्कर्ष

इन आयतों में पैगम्बरों और उनके अनुयायियों के बारे में दिए गए दावे विश्वास और व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित हैं, और इनमें कोई ठोस तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार नहीं है। Nyaya दर्शन और अन्य दार्शनिक सिद्धांतों के अनुसार, कोई भी दावा तब तक मान्य नहीं हो सकता जब तक उसे प्रमाणित और तात्त्विक दृष्टिकोण से समझाया न जाए। इन आयतों में दावों को प्रमाणिक तरीके से प्रस्तुत नहीं किया गया है, और इसलिए ये सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकते।

आयत 91 से 95 का विश्लेषण

आयत 91 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 91:**
   "यह अगले पैग़म्बर वह लोग थे जिनकी ख़ुदा ने हिदायत की पस तुम भी उनकी हिदायत की पैरवी करो (ऐ रसूल उन से) कहो कि मैं तुम से इस (रिसालत) की मज़दूरी कुछ नहीं चाहता सारे जहाँन के लिए सिर्फ नसीहत है।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**
   - **इस आयत में हिदायत देने के कारण और उद्देश्य की बात की गई है। यहाँ यह बताया गया है कि पैगम्बरों का उद्देश्य केवल नसीहत देना है, न कि किसी प्रकार का निजी लाभ लेना।**
   - **Hetu के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी कार्य का तात्त्विक कारण होना चाहिए। यहां हिदायत का कारण और उद्देश्य स्पष्ट रूप से नसीहत बताया गया है, लेकिन इसका कोई गहन तात्त्विक विश्लेषण या कारण नहीं दिया गया।**
3. **Vaisheshika संदर्भ:**
   - **वैशेषिक दर्शन में हर घटना का तात्त्विक विश्लेषण किया जाता है। इस आयत में हिदायत देने का उद्देश्य तो बताया गया है, लेकिन इसका तात्त्विक या भौतिक कारण जो विचारशील हो, वह स्पष्ट नहीं किया गया।**
4. **निष्कर्ष:**
   - **इस आयत में कोई ठोस कारण या प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है, जो Nyaya दर्शन के Hetu सिद्धांत से मेल खाता हो।**

आयत 92 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 92:**
   "और उन लोगों (यहूद) ने ख़ुदा की जैसी क़दर करनी चाहिए न की इसलिए कि उन लोगों ने (बेहूदे पन से) ये कह दिया कि ख़ुदा ने किसी बषर (इनसान) पर कुछ नाज़िल नहीं किया।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Pramana (ज्ञान का प्रमाण)**

   - **इस आयत में यहूदियों के विचार पर चर्चा की गई है कि उन्होंने सही तरीके से ख़ुदा की क़दर नहीं की। यह दावा किया गया है कि उन्होंने यह कहा कि ख़ुदा ने इंसान पर कोई किताब नहीं भेजी।**
   - **Nyaya दर्शन के Pramana सिद्धांत के अनुसार, किसी भी ज्ञान या घटना का प्रमाण होना चाहिए। यहाँ पर यहूदियों के विचार का विरोध केवल उनके व्यक्तिगत दृष्टिकोण पर आधारित है, न कि किसी ठोस प्रमाण पर।**

3. **Sankhya Yoga संदर्भ:**

   - **सांख्य योग में, ज्ञान का स्रोत आत्मा और ब्रह्म के माध्यम से होता है। यह आयत केवल विश्वास पर आधारित है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से खंडित प्रतीत होता है।**

4. **निष्कर्ष:**

   - **इस आयत में ज्ञान का कोई प्रमाणिक आधार नहीं दिया गया है, जो Nyaya दर्शन और Sankhya योग के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।**

आयत 93 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 93:**
   "और वह किताब है जिसे हमने बाबरकत नाज़िल किया और उस किताब की तसदीक़ करती है जो उसके सामने (पहले से) मौजूद है।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Prameya (ज्ञान का उद्देश्य)**

   - **इस आयत में कुरआन के बारे में कहा गया है कि यह पिछले पुस्तकों की तसदीक़ करता है। इसका उद्देश्य यह दिखाना है कि कुरआन पिछले किताबों को सत्यापित करता है।**

- **Prameya के सिद्धांत में यह महत्वपूर्ण होता है कि किसी ज्ञान का उद्देश्य स्पष्ट रूप से निर्धारित किया जाए। यहाँ पर यह स्पष्ट रूप से बताया गया है कि कुरआन की तसदीक़ उद्देश्य है, लेकिन यह उद्देश्य पूरी तरह से तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया गया।**

3. **Purva Mimamsa संदर्भ:**
   - **पुरवा मीमांसा में पुराने ग्रंथों के कर्मकांडों और उनके परिणामों का विश्लेषण किया जाता है। इस आयत में पुराने ग्रंथों की सत्यता का दावा किया गया है, लेकिन यह विश्लेषणित और प्रमाणित नहीं किया गया।**
4. **निष्कर्ष:**
   - **यह आयत कुरआन को पिछले ग्रंथों की सत्यता से जोड़ती है, लेकिन इसका प्रमाणिक या तात्त्विक विश्लेषण नहीं किया गया है।**

आयत 94 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 94:**
   "और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो ख़ुदा पर झूठ (मूठ) इफ़तेरा करके कहे कि हमारे पास वही आयी है हालाँकि उसके पास वही वग़ैरह कुछ भी नही आयी।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Vyapti (अनिवार्य सहसंबंध)**
   - **इस आयत में यह कहा गया है कि जो लोग ख़ुदा पर झूठ बोलते हैं, वे सबसे बड़े ज़ालिम होते हैं। यह कथन अनिवार्य सहसंबंध (Vyapti) के सिद्धांत से मेल नहीं खाता।**
   - **यदि कोई व्यक्ति सचमुच किसी चीज़ का दावा करता है, तो उसे प्रमाणित करने का आधार होना चाहिए। यह आयत बिना किसी प्रमाण के केवल आरोप पर आधारित है, जो व्यावहारिक दृष्टिकोण से अनुचित है।**
3. **Vaisheshika संदर्भ:**
   - **वैशेषिक दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना के भौतिक और तात्त्विक कारण का विश्लेषण किया जाता है। यहाँ पर झूठ बोलने का आरोप है, लेकिन इसका कोई भौतिक या तात्त्विक कारण प्रस्तुत नहीं किया गया।**
4. **निष्कर्ष:**

- यह आयत बिना किसी प्रमाण के आरोप पर आधारित है, जो Nyaya और Vaisheshika दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

आयत 95 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 95:**
   "और आख़िर तुम हमारे पास इसी तरह तन्हा आए जिस तरह हमने तुम को पहली बार पैदा किया था और जो (माल व औलाद) हमने तुमको दिया था वह सब अपने पस्त पुश्त (पीछे) छोड़ आए।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Vyapti (अनिवार्य सहसंबंध)**
   - इस आयत में यह कहा गया है कि इंसान को आख़िरत में अकेला आना होगा, जैसे वह पहली बार पैदा हुआ था। यह कथन एक अनिवार्य सहसंबंध (Vyapti) के सिद्धांत के अनुसार, पूरी तरह से प्रमाणित नहीं है।
   - यह दावा केवल विश्वास पर आधारित है और इसमें कोई तात्त्विक या भौतिक प्रमाण नहीं दिया गया है।
3. **Sankhya Yoga संदर्भ:**
   - सांख्य योग के अनुसार, व्यक्ति का आत्मा और ब्रह्म के साथ संबंध हमेशा बना रहता है, और उसकी आत्मा मृत्यु के बाद भी अस्तित्व में रहती है। इस आयत में इस विचार के विपरीत दावा किया गया है, जो सांख्य योग के सिद्धांत से मेल नहीं खाता।
4. **निष्कर्ष:**
   - यह आयत एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसमें तात्त्विक या वैज्ञानिक विश्लेषण का अभाव है। यह Nyaya दर्शन और Sankhya योग के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।

समग्र निष्कर्ष

इन आयतों में किए गए दावे और कथन व्यक्तिगत विश्वास पर आधारित हैं, जो तात्त्विक या प्रमाणिक दृष्टिकोण से विश्लेषित नहीं किए गए हैं। Nyaya दर्शन, Vaisheshika, और Sankhya योग के सिद्धांतों के अनुसार, किसी भी धार्मिक या दार्शनिक दावे का प्रमाण और तात्त्विक आधार होना चाहिए। इन आयतों में

यह प्रमाण और विश्लेषण का अभाव है, और इसलिए इन दावों को सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जाना कठिन है।

आयत 96 से 100 का विश्लेषण

आयत 96 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 96:**
   "ख़ुदा ही तो गुठली और दाने को चीर (करके दरख़्त ऊगाता) है वही मुर्दे में से ज़िन्दे को निकालता है और वही ज़िन्दा से मुर्दे को निकालने वाला है (लोगों) वही तुम्हारा ख़ुदा है फिर तुम किधर बहके जा रहे हो।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Pramana (ज्ञान का प्रमाण)**

   - **इस आयत में यह दावा किया गया है कि ख़ुदा जीवन और मृत्यु के चक्र को नियंत्रित करता है। यह दावा प्राकृतिक घटनाओं के बारे में है, जैसे गुठली और दाने से पौधों का उगना और जीवन-मृत्यु का परिवर्तन।**
   - **Pramana के सिद्धांत के अनुसार, ज्ञान का प्रमाण होना चाहिए। यह आयत एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, लेकिन इसमें कोई वैज्ञानिक या भौतिक प्रमाण नहीं दिया गया है, जो इस दावे को सत्यापित करे।**
3. **Vaisheshika संदर्भ:**

   - **वैशेषिक दर्शन में, जीवन और मृत्यु के प्राकृतिक सिद्धांतों का भौतिक और तात्त्विक विश्लेषण किया जाता है। यह आयत केवल विश्वास पर आधारित है और इसमें किसी भौतिक सिद्धांत या प्रमाण का अभाव है। इसलिए यह वैशेषिक दृष्टिकोण से असंगत है।**
4. **निष्कर्ष:**

   - **इस आयत का दावा वैज्ञानिक या भौतिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता, और Nyaya दर्शन के Pramana सिद्धांत से मेल नहीं खाता।**

आयत 97 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 97:**
   "उसी के लिए सुबह की पौ फटी और उसी ने आराम के लिए रात और हिसाब के लिए सूरज और चाँद बनाए ये ख़ुदाए ग़ालिब व दाना के मुक़र्रर किए हुए किरदा (उसूल) हैं।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**

   - **इस आयत में यह कहा गया है कि सूरज, चाँद, और रात-दिन के चक्र को ख़ुदा ने स्थापित किया है, और उनका उद्देश्य यह है कि लोग हिसाब (समय का मापन) कर सकें।**
   - **Hetu के सिद्धांत में, किसी घटना या कार्य के लिए तात्त्विक कारण होना चाहिए। इस आयत में कहा गया है कि सूरज और चाँद का निर्माण ख़ुदा द्वारा किया गया, लेकिन इसके कारण का वैज्ञानिक या तार्किक विश्लेषण नहीं दिया गया है।**

3. **Sankhya Yoga संदर्भ:**

   - **सांख्य योग के अनुसार, प्राकृतिक घटनाएँ और समय के चक्र आत्मा और प्रकृति के बीच सामंजस्य के परिणाम होते हैं। यह आयत केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण से समय के चक्र को देखती है, जबकि सांख्य योग के अनुसार यह प्रकृति के नियमों के पालन पर आधारित होता है।**

4. **निष्कर्ष:**

   - **यह आयत एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसमें तात्त्विक या भौतिक प्रमाण का अभाव है, जो Nyaya दर्शन के Hetu सिद्धांत से मेल नहीं खाता।**

आयत 98 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 98:**
   "और वह वही (ख़ुदा) है जिसने तुम्हारे (नफे के) वास्ते सितारे पैदा किए ताकि तुम जॅगलों और दरियाओं की तारिक़ियों (अंधेरों) में उनसे राह मालूम करो जो लोग वाक़िफकार हैं उनके लिए हमने (अपनी कुदरत की) निशानियाँ ख़ूब तफ़सील से बयान कर दी हैं।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Vyapti (अनिवार्य सहसंबंध)**

- इस आयत में यह कहा गया है कि ख़ुदा ने सितारे इसलिए बनाए ताकि लोग अंधेरे में राह पा सकें। यह दावा एक अनिवार्य सहसंबंध (Vyapti) पर आधारित है, लेकिन इसमें यह बताया नहीं गया कि यह घटना क्यों और कैसे घटित होती है।
- Vyapti के सिद्धांत में यह महत्वपूर्ण होता है कि यदि दो घटनाएँ या वस्तुएं अनिवार्य रूप से जुड़ी हुई हैं, तो उनका सहसंबंध प्रमाणित होना चाहिए। इस आयत में सितारों का अस्तित्व तो बताया गया है, लेकिन उनके उपयोग या उद्देश्य का तात्त्विक विश्लेषण नहीं किया गया है।

3. **Vaisheshika संदर्भ:**
   - वैशेषिक दर्शन के अनुसार, किसी भी प्राकृतिक घटना के भौतिक प्रमाण और तात्त्विक कारण का होना अनिवार्य है। यहाँ पर सितारों के उद्देश्य का भौतिक या तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है, जो वैशेषिक दर्शन से मेल नहीं खाता।
4. **निष्कर्ष:**
   - यह आयत अनिवार्य सहसंबंध (Vyapti) का दावा करती है, लेकिन इसका भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है, जो Nyaya दर्शन से मेल नहीं खाता।

आयत 99 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 99:**
   "और वह वही ख़ुदा है जिसने तुम लोगों को एक शख़्स से पैदा किया फिर (हर शख़्स के) क़रार की जगह (बाप की पुश्त (पीठ)) और सौंपने की जगह (माँ का पेट) मुक़र्रर है हमने समझदार लोगों के वास्ते (अपनी कुदरत की) निषानियाँ ख़ूब तफसील से बयान कर दी हैं।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Prameya (ज्ञान का उद्देश्य)**
   - इस आयत में यह कहा गया है कि इंसान को एक शख़्स से पैदा किया गया और उसे बाप की पीठ और माँ के पेट में तय किया गया। यह घटना प्राकृतिक कारणों पर आधारित है, लेकिन इसके तात्त्विक कारण या उद्देश्य का स्पष्ट विश्लेषण नहीं किया गया है।
   - Prameya के सिद्धांत में, किसी ज्ञान का उद्देश्य और तात्त्विक विश्लेषण होना चाहिए। यहाँ पर यह उद्देश्य दिया गया है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।
3. **Purva Mimamsa संदर्भ:**

- **पुरवा मीमांसा में कर्मकांडों और उनके परिणामों का विश्लेषण किया जाता है। इस आयत में जीवन के उत्पत्ति का एक धार्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसे कर्मकांड से नहीं जोड़ा गया है।**

4. **निष्कर्ष:**
    - **यह आयत जीवन के उत्पत्ति का विवरण देती है, लेकिन इसके वैज्ञानिक प्रमाण या तात्त्विक विश्लेषण का अभाव है, जो Nyaya दर्शन के Prameya सिद्धांत से मेल नहीं खाता।**

आयत 100 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 100:**
"और वह वही (क़ादिर तवाना है) जिसने आसमान से पानी बरसाया फिर हम ही ने उसके ज़रिए से हर चीज़ के कोए निकालें फिर हम ही ने उससे हरी भरी टहनियाँ निकालीं कि उससे हम बाहम गुत्थे दाने निकालते हैं और छुहारे के बोर (मुन्जिर) से लटके हुए गुच्छे पैदा किए और अंगूर और ज़ैतून और अनार के बाग़ात जो बाहम सूरत में एक दूसरे से मिलते जुलते और (मज़े में) जुदा जुदा जब ये पिघले और पक्के तो उसके फल की तरफ ग़ौर तो करो बेशक अमन में इमानदार लोगों के लिए बहुत सी (ख़ुदा की) निशानियाँ हैं।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Vyapti (अनिवार्य सहसंबंध)**
    - **इस आयत में यह कहा गया है कि ख़ुदा ने आकाश से पानी भेजा और उससे फसलें और फल पैदा किए। यह दावा एक अनिवार्य सहसंबंध (Vyapti) पर आधारित है, लेकिन इसमें यह नहीं बताया गया कि इस प्राकृतिक प्रक्रिया का कारण क्या है।**
    - **Vyapti के सिद्धांत में, किसी घटना का अनिवार्य सहसंबंध होना चाहिए। लेकिन इस आयत में यह प्रक्रिया बिना किसी तात्त्विक या भौतिक कारण के बताई गई है।**

3. **Vaisheshika संदर्भ:**
    - **वैशेषिक दर्शन के अनुसार, प्रत्येक घटना का भौतिक और तात्त्विक कारण होना चाहिए। यहाँ पर प्राकृतिक प्रक्रियाओं को ख़ुदा के नियंत्रण में दिखाया गया है, लेकिन इसका भौतिक प्रमाण नहीं दिया गया है, जो वैशेषिक दृष्टिकोण से मेल नहीं खाता।**

4. **निष्कर्ष:**

- यह आयत प्राकृतिक घटनाओं का वर्णन करती है, लेकिन इसका भौतिक और तात्त्विक विश्लेषण नहीं दिया गया है, जो Nyaya और Vaisheshika दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

समग्र निष्कर्ष

इन आयतों में ख़ुदा के अस्तित्व और उसकी शक्तियों को प्राकृतिक घटनाओं के रूप में दिखाया गया है, लेकिन इन दावों का प्रमाण

या भौतिक तात्त्विक विश्लेषण नहीं किया गया है। इन आयतों को Nyaya और Vaisheshika दर्शन के सिद्धांतों से चुनौती दी जा सकती है, क्योंकि ये तात्त्विक और भौतिक प्रमाण की अनुपस्थिति में धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं।

आयत 101 से 105 का विश्लेषण

आयत 101 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 101:**
   "और उन (कम्बख़्तों) ने जिन्नात को ख़ुदा का शरीक बनाया हालाँकि जिन्नात को भी ख़ुदा ही ने पैदा किया उस पर भी उन लोगों ने बे समझे बूझे ख़ुदा के लिए बेटे बेटियाँ गढ़ डालीं जो बातों में लोग (उसकी शान में) बयान करते हैं उससे वह पाक व पाकीज़ा और बरतर है।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Pramana (ज्ञान का प्रमाण)**

   - इस आयत में यह दावा किया गया है कि जिन्नात को ख़ुदा ने पैदा किया और कुछ लोगों ने उसे ख़ुदा का शरीक बना दिया, साथ ही ख़ुदा के लिए बेटे और बेटियाँ गढ़ दीं।
   - **Pramana** के सिद्धांत के अनुसार, ज्ञान का प्रमाण होना चाहिए। इस आयत का दावा किसी प्रमाणित वैज्ञानिक या भौतिक ज्ञान पर आधारित नहीं है। इसे केवल विश्वास के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जिन्नात और ख़ुदा के रिश्ते को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सिद्ध करना कठिन है।
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**

- वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, जिन्नात का अस्तित्व कभी प्रमाणित नहीं किया गया है। इसी तरह, धर्मों में आस्था आधारित दावे बिना प्रमाण के होते हैं। यदि इन दावों को वास्तविकता मानने के लिए प्रमाण की आवश्यकता है, तो यह आयत वैज्ञानिक दृष्टिकोण से गलत प्रतीत होती है।

4. **निष्कर्ष:**
    - यह आयत Pramana के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें विश्वास और आस्था का दावा किया गया है, जबकि इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सिद्ध करने का कोई प्रयास नहीं किया गया है।

आयत 102 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 102:**
   "सारे आसमान और ज़मीन का मण्दित (बनाने वाला) है उसके कोई लड़का क्योंकर हो सकता है जब उसकी कोई बीबी ही नहीं है और उसी ने हर चीज़ को पैदा किया और वही हर चीज़ से खूब वाक़िफ है।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**
    - इस आयत में कहा गया है कि ख़ुदा ने आकाश और पृथ्वी को बनाया, और उसका कोई बेटा नहीं हो सकता क्योंकि उसकी कोई पत्नी नहीं है।
    - Hetu के सिद्धांत में, तर्क यह है कि यदि कोई वस्तु या घटना होती है, तो उसका कारण स्पष्ट होना चाहिए। इस आयत में एक कारण (ख़ुदा के बिना पत्नी के बेटे का होना असंभव है) प्रस्तुत किया गया है, लेकिन यह तर्क वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सही नहीं है।
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
    - वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, जीवन की उत्पत्ति और विकास के लिए पार्थिव प्रजनन और आनुवांशिकी के सिद्धांतों को समझने की आवश्यकता होती है। जीवन और प्रजनन के साथ ख़ुदा के संबंध को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नहीं देखा जा सकता, क्योंकि यह एक धार्मिक विश्वास है।
4. **निष्कर्ष:**

- **यह आयत Hetu के सिद्धांत से वैज्ञानिक रूप से सही नहीं है, क्योंकि इसमें दिए गए कारण को भौतिक और तात्त्विक आधार पर प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

आयत 103 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 103:**
   "वही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार है उसके सिवा कोइ माबूद नहीं वही हर चीज़ का पैदा करने वाला है तो उसी की इबादत करो और वही हर चीज़ का निगेह बान है।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Vyapti (अनिवार्य सहसंबंध)**

   - **इस आयत में कहा गया है कि ख़ुदा ही हर चीज़ का उत्पत्ति कर्ता है, इसलिए उसकी इबादत करो। यह दावा अनिवार्य सहसंबंध (Vyapti) पर आधारित है, यानी कि यदि ख़ुदा उत्पत्ति कर्ता है, तो उसी की इबादत करनी चाहिए।**
   - **Vyapti सिद्धांत में, यह सहसंबंध केवल एक विश्वास पर आधारित है, जबकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हम उत्पत्ति के कारणों को अन्य तरीकों से भी समझ सकते हैं, जैसे प्राकृतिक और भौतिक प्रक्रियाओं के माध्यम से।**
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**

   - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, जीवन और ब्रह्मांड की उत्पत्ति के लिए बिग बैंग थ्योरी और विकासवाद के सिद्धांत दिए गए हैं। इन सिद्धांतों में कोई धार्मिक या अलौकिक शक्ति की आवश्यकता नहीं होती है।**
4. **निष्कर्ष:**

   - **यह आयत Vyapti के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसे केवल विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण से समझा गया है, जबकि भौतिक और वैज्ञानिक सिद्धांत इसके विरोध में हैं।**

आयत 104 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 104:**
   "उसको आँखें देख नहीं सकती (न दुनिया में न आख़िरत में) और वह (लोगों की) नज़रों को खूब

देखता है और वह बड़ा बारीक बीन (देख़ने वाला) ख़बरदार है।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Prameya (ज्ञान का उद्देश्य)**
   - **इस आयत में यह कहा गया है कि ख़ुदा को कोई भी आँखें देख नहीं सकतीं, लेकिन वह लोगों की आँखों को देखता है।**
   - **Prameya के सिद्धांत में, ज्ञान का उद्देश्य यह है कि किसी विषय या चीज़ को तात्त्विक रूप से समझा जाए। यह आयत भी एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसमें किसी भौतिक प्रमाण का अभाव है।**
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
   - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण में, दृष्टि और देखने के सिद्धांतों को समझने के लिए आंखों की कार्यप्रणाली और प्रकाश के नियमों को समझना होता है। इस आयत में भौतिक दृष्टि का कोई तात्त्विक विश्लेषण नहीं किया गया है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सही नहीं है।**
4. **निष्कर्ष:**
   - **यह आयत Prameya के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें भौतिक दृष्टिकोण से कोई तात्त्विक विश्लेषण नहीं दिया गया है।**

आयत 105 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 105:**
   "तुम्हारे पास तो सुझाने वाली चीज़े आ ही चुकीं फिर जो देखे (समझे) तो अपने दम के लिए और जो अन्धा बने तो (उसका ज़रर (नुकसान) भी) ख़ुद उस पर है और (ऐ रसूल उन से कह दो) कि मै तुम लोगों का कुछ निगेहबान तो हूँ नहीं।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**
   - **इस आयत में यह कहा गया है कि जो लोग देखेंगे (समझेंगे) वह अपने लिए सही रास्ता चुनेंगे, और जो अंधे होंगे उनका नुकसान केवल उन्हीं का होगा।**
   - **Hetu के सिद्धांत में, किसी घटना का कारण या परिणाम स्पष्ट होना चाहिए। यह आयत बताती है कि अज्ञानता के कारण लोग नुकसान उठाते हैं, लेकिन यह नहीं बताती कि उनका अंधापन (अज्ञानता) क्यों हुआ।**

3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
    - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, अज्ञानता और भ्रम के कारण लोगों के निर्णय गलत हो सकते हैं, लेकिन यह आयत कोई वैज्ञानिक कारण नहीं देती। यह केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण है।**
4. **निष्कर्ष:**
    - **यह आयत Hetu के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कारण और परिणाम का तार्किक विश्लेषण नहीं किया गया है।**

समग्र निष्कर्ष

इन आयतों में ख़ुदा के अस्तित्व और उसकी शक्तियों को धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इन दावों का भौतिक और वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। Nyaya दर्शन के सिद्धांतों के आधार पर इन आयतों का तात्त्विक और वैज्ञानिक आलोचनात्मक विश्लेषण किया जा सकता है, क्योंकि इनमें कोई भौतिक प्रमाण या तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है, जो इन दावों को सत्यापित कर सके।

कुरआन आयतों का विश्लेषण (106-110)

आयत 106 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 106:**
   "हम (अपनी) आयतें यू उलट फेरकर बयान करते है (ताकि हुज्जत तमाम हो) और ताकि वह लोग ज़बानी भी इक़रार कर लें कि तुमने (कुरान उनके सामने) पढ़ दिया और ताकि जो लोग जानते है उनके लिए (कुरान का) खूब वाजेए करके बयान कर दें।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Pramana (ज्ञान का प्रमाण)**
    - **इस आयत में यह कहा गया है कि कुरआन की आयतों को इस प्रकार बयान किया जाता है ताकि लोग इसे समझ सकें और स्वीकार कर सकें।**
    - **Pramana के सिद्धांत के अनुसार, किसी ज्ञान को प्रमाणित करना और सत्यापित करना आवश्यक है। इस आयत में यह दावा किया गया है कि आयतें ऐसे तरीके से प्रस्तुत**

की जाती हैं ताकि लोग उन्हें समझ सकें, लेकिन इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है। यह केवल विश्वास पर आधारित है।

3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
    - वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, कोई भी धार्मिक या अलौकिक दावे बिना प्रमाण के स्वीकार्य नहीं हो सकते। इस आयत में जिस तरह से बयान करने की प्रक्रिया को प्रस्तुत किया गया है, वह केवल आस्था आधारित है, जिसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सत्यापित नहीं किया जा सकता।
4. **निष्कर्ष:**
    - यह आयत Pramana के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें जो ज्ञान प्रस्तुत किया गया है, वह प्रमाणित या सत्यापित नहीं किया गया है। यह केवल विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है।

आयत 107 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 107:**
   "जो कुछ तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से 'वही' की जाए बस उसी पर चलो अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुश्रिको से किनारा कश रहो।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**
    - इस आयत में कहा गया है कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं है, और तुम्हें वही की ओर चलने का आदेश दिया गया है।
    - Hetu के सिद्धांत में, किसी घटना का कारण स्पष्ट होना चाहिए। इस आयत में एक कारण प्रस्तुत किया गया है कि अल्लाह ही एकमात्र माबूद है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तार्किक प्रमाण नहीं दिया गया।
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
    - वैज्ञानिक दृष्टिकोण में, किसी भी चीज़ के अस्तित्व या कारण को प्रमाणित करने के लिए भौतिक और तात्त्विक प्रमाण चाहिए। इस आयत में अल्लाह के अस्तित्व को बिना किसी वैज्ञानिक प्रमाण के स्वीकार किया गया है, जो तार्किक दृष्टिकोण से संदिग्ध है।
4. **निष्कर्ष:**

- **यह आयत Hetu के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दिए गए कारण को भौतिक या तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

आयत 108 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 108:**
   "और अगर ख़ुदा चाहता तो ये लोग शिर्क ही न करते और हमने तुमको उन लोगों का निगेहबान तो बनाया नहीं है और न तुम उनके ज़िम्मेदार हो।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Vyapti (अनिवार्य सहसंबंध)**

   - **इस आयत में कहा गया है कि अगर ख़ुदा चाहता तो लोग शिर्क नहीं करते, और मुसलमानों को उन लोगों का निगेहबान नहीं बनाया गया।**
   - **Vyapti के सिद्धांत के अनुसार, यदि किसी घटना में एक कारण है, तो उसका परिणाम भी अनिवार्य होना चाहिए। इस आयत में यह कहा गया है कि अगर ख़ुदा चाहता तो शिर्क नहीं होता, लेकिन इसमें यह नहीं बताया गया कि क्यों ऐसा होता है और इसका परिणाम क्या होगा।**
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**

   - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, अगर किसी घटना का कोई कारण है, तो उसका परिणाम भी भौतिक या तात्त्विक रूप से समझाया जा सकता है। इस आयत में शिर्क का कारण और परिणाम धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है, लेकिन यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अप्रमाणित है।**
4. **निष्कर्ष:**

   - **यह आयत Vyapti के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें अनिवार्य सहसंबंध को केवल विश्वास पर आधारित किया गया है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

आयत 109 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 109:**
   "और ये (मुशरेकीन) जिन की अल्लाह के सिवा (ख़ुदा समझ कर) इबादत करते हैं उन्हें तुम बुरा न कहा करो वरना ये लोग भी ख़ुदा को बिना समझें अदावत से बुरा (भला) कह बैठें (और लोग उनकी ख़्वाहिष नफसानी के) इस तरह पाबन्द हुए कि गोया हमने ख़ुद हर गिरोह के आमाल उनको सॅवाकर अच्छे कर दिखाए फिर उन्हें तो (आख़िरकार) अपने परवरदिगार की तरफ लौट कर जाना है तब जो कुछ दुनिया में कर रहे थे ख़ुदा उन्हें बता देगा।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Prameya (ज्ञान का उद्देश्य)**

   - **इस आयत में कहा गया है कि तुम उन लोगों को बुरा न कहो जो अल्लाह के अलावा किसी और की पूजा करते हैं, क्योंकि वे अज्ञानवश ऐसा करते हैं।**
   - **Prameya के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी वस्तु या घटना को समझने का उद्देश्य उसे तात्त्विक रूप से जानना है। इस आयत में अज्ञानता का कारण प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक विश्लेषण नहीं किया गया है।**
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**

   - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, अज्ञानता और पूजा की परंपराओं को समाज और संस्कृति के रूप में समझा जा सकता है। लेकिन इस आयत में केवल धार्मिक विश्वास और अज्ञानता का आधार लिया गया है, जिसे वैज्ञानिक तरीके से समझा नहीं जा सकता।**
4. **निष्कर्ष:**

   - **यह आयत Prameya के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें तात्त्विक दृष्टिकोण से कोई व्याख्या नहीं दी गई है, बल्कि यह केवल धार्मिक आस्था पर आधारित है।**

आयत 110 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 110:**
   "और उन लोगों ने ख़ुदा की सख़्त सख़्त क़समें खायीं कि अगर उनके पास कोई मौजिजा.आए तो वह ज़रूर उस पर इमान लाएँगे (ऐ रसूल) तुम कहो कि मौजिज़े तो बस ख़ुदा ही के पास हैं और तुम्हें क्या मालूम ये यक़ीनी बात है कि जब मौजिज़ा भी आएगा तो भी ये ईमान न लाएँगे।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**

- इस आयत में कहा गया है कि लोग मौजिज़े की मांग करते हैं, लेकिन जब वह मौजिज़ा आएगा तो भी वे विश्वास नहीं करेंगे।
- Hetu के सिद्धांत के अनुसार, किसी घटना का कारण और परिणाम स्पष्ट होना चाहिए। इस आयत में यह कहा गया है कि मौजिज़े का होना विश्वास में परिवर्तन नहीं लाएगा, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक या तार्किक कारण नहीं दिया गया।

3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
   - वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, यदि कोई अद्भुत घटना घटती है, तो उसकी व्याख्या तात्त्विक रूप से की जा सकती है। लेकिन इस आयत में इसे केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है, जिसमें कोई वैज्ञानिक कारण नहीं है।
4. **निष्कर्ष:**
   - यह आयत Hetu के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कारण और परिणाम का कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक विश्लेषण नहीं किया गया है।

निष्कर्ष और सारांश

इन आयतों में जो तर्क और सिद्धांत प्रस्तुत किए गए हैं, वे केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित हैं और वैज्ञानिक या तात्त्विक दृष्टिकोण से अप्रमाणित हैं। Nyaya दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, इन आयतों का कोई प्रमाणित कारण या परि**कुरआन आयतों का विश्लेषण (111-115)**

आयत 111 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 111:**
   "और हम उनके दिल और उनकी आँखें उलट पलट कर देंगे जिस तरह ये लोग कुरान पर पहली मरतबा ईमान न लाए और हम उन्हें उनकी सरकशी की हालत में छोड़ देंगे कि सरगिरदाँ (परेशान) रहें।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Vyapti (अनिवार्य सहसंबंध)**
   - इस आयत में कहा गया है कि जिन लोगों ने पहले कुरआन पर विश्वास नहीं किया, उनके दिल और आंखें उलट-पलट दी जाएंगी।

- **Vyapti के सिद्धांत के अनुसार, किसी घटना का कारण और परिणाम का सहसंबंध अनिवार्य रूप से होना चाहिए। इस आयत में यह दावा किया गया है कि लोग अगर कुरआन पर विश्वास नहीं करेंगे तो उनके दिल और आंखें उलट दी जाएंगी, लेकिन यह सहसंबंध केवल एक धार्मिक विश्वास है और इसका कोई भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।**

3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
   - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण में, किसी भी शारीरिक घटना या मानसिक स्थिति को वैज्ञानिक तरीके से समझा जाता है, जबकि इस आयत में जो उलट-पलट की घटना बताई गई है, वह सिर्फ धार्मिक आस्था पर आधारित है। इसमें कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं दिया गया है।**
4. **निष्कर्ष:**
   - **यह आयत Vyapti के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें जिस कारण और परिणाम का संबंध प्रस्तुत किया गया है, वह केवल विश्वास और आस्था पर आधारित है, जिसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

आयत 112 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 112:**
   "और (ऐ रसूल सच तो ये है कि) हम अगर उनके पास फरिश्ते भी नाज़िल करते और उनसे मुर्दे भी बातें करने लगते और तमाम (मख़फ़ी(छुपी)) चीज़ें (जैसे जन्नत व नार वग़ैरह) अगर वह गिरोह उनके सामने ला खड़े करते तो भी ये ईमान लाने वाले न थे मगर जब अल्लाह चाहे लेकिन उनमें के अक्सर नहीं जानते।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**
   - **इस आयत में यह कहा गया है कि अगर फरिश्ते भी आते और मुर्दे बात करते, तो भी ये लोग विश्वास नहीं करते।**
   - **Hetu के सिद्धांत में, किसी घटना के कारण और उसका परिणाम स्पष्ट होना चाहिए। इस आयत में यह दावा किया गया है कि चाहे जो हो जाए, यह लोग विश्वास नहीं करेंगे, लेकिन इसमें कोई स्पष्ट कारण नहीं बताया गया है कि क्यों ऐसा होगा।**
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**

- **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, किसी भी अद्भुत घटना (जैसे फरिश्ते का आना या मुर्दों का बोलना) को वैज्ञानिक तरीके से समझा जा सकता है, लेकिन इस आयत में इसे केवल विश्वास पर आधारित किया गया है। यह विज्ञान से अलग एक विश्वास है, जिसका कोई भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।**

4. **निष्कर्ष:**
   - **यह आयत Hetu के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कोई कारण नहीं दिया गया है जो इस परिप्रेक्ष्य में कार्य करता हो। यह सिर्फ एक विश्वास पर आधारित है, जिसे वैज्ञानिक तरीके से समझा या प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

आयत 113 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 113:**
   "कि और (ऐ रसूल जिस तरह ये कुफ़्फ़ार तुम्हारे दुष्मन हैं) उसी तरह (गोया हमने ख़ुद आज़माइश के लिए शरीर आदमियों और जिनों को हर नबी का दुश्मन बनाया वह लोग एक दूसरे को फरेब देने की ग़रज़ से चिकनी चुपड़ी बातों की सरग़ोशी करते हैं और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता तो ये लोग) ऐसी हरकत करने न पाते।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Prameya (ज्ञान का उद्देश्य)**
   - **इस आयत में कहा गया है कि हर नबी का दुश्मन उसके आसपास होता है, और वे एक-दूसरे को धोखा देते हैं।**
   - **Prameya के सिद्धांत के अनुसार, किसी घटना या वस्तु का उद्देश्य तात्त्विक रूप से समझा जाना चाहिए। इस आयत में यह कहा गया है कि लोग एक-दूसरे को धोखा देते हैं, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार नहीं है। यह एक विश्वास पर आधारित बयान है।**

3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
   - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, यदि किसी घटना का कारण और परिणाम विश्लेषित किया जाए, तो उसे तात्त्विक रूप से समझा जा सकता है। लेकिन इस आयत में जो घटनाएँ बताई गई हैं, वे केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं, जिन्हें वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझा नहीं जा सकता।**

4. **निष्कर्ष:**
    - **यह आयत Prameya के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दी गई जानकारी केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है।**

आयत 114 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 114:**
   "तो उनको और उनकी इफ़तेरा परदाज़ियों को छोड़ दो और ये (ये सरग़ोषियाँ इसलिए थीं) ताकि जो लोग आख़िरत पर इमान नहीं लाए उनके दिल उन (की शरारत) की तरफ मायल (खिच) हो जाएँ और उन्हें पसन्द करें और ताकि जो लोग इफ़तेरा परदाज़ियाँ ये लोग ख़ुद करते हैं वह भी करने लगें।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Vyapti (अनिवार्य सहसंबंध)**
    - **इस आयत में कहा गया है कि लोग इफ़तेरा परदाजी करते हैं और उनका दिल उस ओर खिंचता है।**
    - **Vyapti के सिद्धांत के अनुसार, अगर किसी घटना का कारण है, तो उसका परिणाम अनिवार्य रूप से होना चाहिए। इस आयत में इस प्रकार के सहसंबंध को प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसे कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक कारण नहीं दिया गया।**
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
    - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, अगर किसी घटना का कारण है, तो उसका परिणाम वैज्ञानिक तरीके से समझा जा सकता है। लेकिन इस आयत में केवल धार्मिक दृष्टिकोण से यह कहा गया है कि लोग इफ़तेरा परदाजी करते हैं और इसका कोई भौतिक कारण नहीं है।**
4. **निष्कर्ष:**
    - **यह आयत Vyapti के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कारण और परिणाम का अनिवार्य सहसंबंध वैज्ञानिक तरीके से प्रस्तुत नहीं किया गया है।**

आयत 115 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 115:**
   "और ताकि जो लोग इफ़तेरा परदाज़ियाँ ये लोग ख़ुद करते हैं वह भी करने लगें (क्या तुम ये चाहते हो कि) मैं ख़ुदा को छोड़ कर किसी और को सालिस तलाश करुँ हालाँकि वह वही ख़ुदा है जिसने तुम्हारे पास वाज़ेए किताब नाज़िल की और जिन लोगों को हमने किताब अता फरमाई है वह यक़ीनी तौर पर जानते हैं कि ये (कुरान) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से बरहक़ नाज़िल किया गया है।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Pramana (ज्ञान का प्रमाण)**

   - **इस आयत में यह कहा गया है कि जो लोग इफ़तेरा करते हैं, वे दूसरों को भी उसी रास्ते पर ले आते हैं, लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं है कि कुरआन सही है या नहीं।**
   - **Pramana के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी ज्ञान को प्रमाणित करना जरूरी होता है। इस आयत में कुरआन के सत्यापन का कोई भौतिक प्रमाण नहीं दिया गया है, बल्कि यह एक विश्वास आधारित बयान है।**
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**

   - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, किसी भी धार्मिक पुस्तक को स्वीकार करने से पहले उसका वैज्ञानिक या तात्त्विक प्रमाण आवश्यक है। इस आयत में कुरआन के सत्य होने का दावा किया गया है, लेकिन इसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है।**
4. **निष्कर्ष:**

   - **यह आयत Pramana के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें जो दावा किया गया है, वह केवल विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**

निष्कर्ष

इन आयतों का विश्लेषण करते समय यह स्पष्ट होता है कि वे केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं और Nyaya दर्शन के तत्वों के अनुसार, इनमें कोई तात्त्विक, वैज्ञानिक या प्रमाणिक आधार नहीं है। इन आयतों में जो कारण और परिणाम दिए गए हैं, वे केवल धार्मिक दृष्टिकोण से मेल खाते हैं, जो वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण से अप्रमाणित हैं।

प्रणाम नहीं है, और ये केवल विश्वास और आस्था पर निर्भर हैं।

कुरआन आयतों का विश्लेषण (116-120)

आयत 116 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 116:**
   "तो तुम (कहीं) शक करने वालों से न हो जाना और सच्चाई और इन्साफ में तो तुम्हारे परवरदिगार की बात पूरी हो गई कोई उसकी बातों का बदलने वाला नहीं और वही बड़ा सुनने वाला वाक़िफकार है।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Pramana (ज्ञान का प्रमाण)**
   - इस आयत में कहा गया है कि भगवान की बात पूरी हो गई और उसकी बातों को कोई बदल नहीं सकता।
   - **Pramana** के सिद्धांत के अनुसार, ज्ञान का प्रमाण होना चाहिए। इस आयत में यह दावा किया गया है कि भगवान की बातें पूरी हो चुकी हैं, लेकिन इसका कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है। इसे केवल विश्वास पर आधारित किया गया है, और यह तात्त्विक या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अप्रमाणित है।
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
   - वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, किसी भी सत्य या ज्ञान को प्रमाणित करना आवश्यक होता है, लेकिन इस आयत में जो दावा किया गया है, वह केवल विश्वास आधारित है। इस प्रकार का दावा बिना किसी वैज्ञानिक या तात्त्विक प्रमाण के स्वीकार नहीं किया जा सकता।
4. **निष्कर्ष:**
   - यह आयत **Pramana** के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें जो दावा किया गया है, वह बिना किसी भौतिक प्रमाण के केवल विश्वास पर आधारित है।

आयत 117 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 117:**
   "और (ऐ रसूल) दुनिया में तो बहुतेरे लोग ऐसे हैं कि तुम उनके कहने पर चलो तो तुमको ख़ुदा की राह से बहका दें ये लोग तो सिर्फ अपने ख़्यालात की पैरवी करते हैं और ये लोग तो बस अटकल

पच्चू बातें किया करते हैं।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**
   - **इस आयत में कहा गया है कि लोग अपनी इच्छाओं और विचारों का अनुसरण करते हैं, जो सही मार्ग से भटका सकते हैं।**
   - **Hetu के सिद्धांत के अनुसार, हर घटना का कारण स्पष्ट होना चाहिए। इस आयत में यह दावा किया गया है कि लोग अपनी इच्छाओं और अटकलों का पालन करते हैं, लेकिन इसका कोई स्पष्ट कारण नहीं दिया गया है। केवल यह कहा गया है कि यह लोग भ्रमित हैं, लेकिन इसका विश्लेषण और कारण नहीं दिया गया।**
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
   - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, किसी भी गलत मार्ग पर जाने का कारण विश्लेषित किया जा सकता है, जैसे मानसिक स्थिति, समाजिक प्रभाव, आदि। लेकिन इस आयत में केवल एक सामान्य बयान दिया गया है, जिसमें कारण का कोई विश्लेषण नहीं किया गया है।**
4. **निष्कर्ष:**
   - **यह आयत Hetu के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कारण और प्रभाव का कोई स्पष्ट और वैज्ञानिक विश्लेषण नहीं किया गया है।**

आयत 118 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 118:**
   "तो तुम क्या जानो जो लोग उसकी राह से बहके हुए हैं उनको (कुछ) ख़ुदा ही ख़ूब जानता है और वह तो हिदायत याफ्ता लोगों से भी ख़ूब वाक़िफ है।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Prameya (ज्ञान का उद्देश्य)**
   - **इस आयत में यह कहा गया है कि केवल भगवान ही जानता है कि कौन हिदायत याफ्ता है और कौन नहीं।**
   - **Prameya के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी ज्ञान का उद्देश्य और उसका प्रमाण तात्त्विक होना चाहिए। इस आयत में इसका उद्देश्य केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और इसका कोई भौतिक या तात्त्विक आधार नहीं है।**

3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
    - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, किसी व्यक्ति की सही दिशा या गलत दिशा का निर्धारण किया जा सकता है, लेकिन यह केवल भगवान के ज्ञान पर निर्भर नहीं होना चाहिए। इसके बजाय, इसे तात्त्विक रूप से और मानसिक स्थिति, पर्यावरण और अनुभव के आधार पर देखा जा सकता है।**
4. **निष्कर्ष:**
    - **यह आयत Prameya के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें ज्ञान का उद्देश्य और प्रमाण केवल धार्मिक दृष्टिकोण से है, जबकि इसे तात्त्विक दृष्टिकोण से समझा जाना चाहिए था।**

आयत 119 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 119:**
   "तो अगर तुम उसकी आयतों पर ईमान रखते हो तो जिस ज़ीबह पर (वक़्ते ज़िबाह) ख़ुदा का नाम लिया गया हो उसी को खाओ।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Vyapti (अनिवार्य सहसंबंध)**
    - **इस आयत में कहा गया है कि जब जानवरों का वध करते समय ख़ुदा का नाम लिया जाता है, तभी उसे खाना जायज़ है।**
    - **Vyapti के सिद्धांत के अनुसार, जब कोई घटना होती है, तो उसका परिणाम अनिवार्य रूप से होना चाहिए। इस आयत में यह दावा किया गया है कि केवल जब अल्लाह का नाम लिया जाएगा, तभी वह भोजन स्वीकार्य होगा। यह एक धार्मिक विश्वास है, लेकिन इसका वैज्ञानिक या तात्त्विक कोई प्रमाण नहीं है।**
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
    - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, भोजन की स्वीकृति या स्वीकार्यता केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर निर्भर नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह पोषण, स्वच्छता, और जैविक दृष्टिकोण पर आधारित होनी चाहिए। केवल अल्लाह का नाम लेने से खाद्य की गुणवत्ता या स्वास्थ्य पर कोई असर नहीं पड़ता।**

4. **निष्कर्ष:**
    - **यह आयत Vyapti के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें कारण और परिणाम का संबंध केवल धार्मिक दृष्टिकोण से बताया गया है, जिसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

आयत 120 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 120:**
   "और तुम्हें क्या हो गया है कि जिस पर ख़ुदा का नाम लिया गया हो उसमें नहीं खाते हो हालाँकि जो चीज़ें उसने तुम पर हराम कर दीं हैं वह तुमसे तफसीलन बयान कर दीं हैं मगर (हाँ) जब तुम मजबूर हो तो अलबत्ता (हराम भी खा सकते हो) और बहुतेरे तो (ख़्वाहमख़्वाह) अपनी नफसानी ख़्वाहिशो से बे समझे बूझे (लोगों को) बहका देते हैं और तुम्हारा परवरदिगार तो हक़ से तजाविज़ करने वालों से ख़ूब वाक़िफ है।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Vyapti (अनिवार्य सहसंबंध)**
    - **इस आयत में कहा गया है कि जो चीज़ें अल्लाह ने हराम कर दी हैं, उनका पालन करना आवश्यक है, लेकिन जब मजबूरी हो तो उन्हें खाया जा सकता है।**
    - **Vyapti के सिद्धांत के अनुसार, किसी घटना और उसके परिणाम का अनिवार्य सहसंबंध होना चाहिए। इस आयत में यह दावा किया गया है कि केवल मजबूरी के समय ही हराम चीज़ें खाई जा सकती हैं, लेकिन इस नियम का कारण और प्रमाण स्पष्ट नहीं किया गया है। यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण से है, जिसका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है।**
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
    - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, खाद्य पदार्थों का सेवन स्वास्थ्य और पोषण के दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए, न कि केवल धार्मिक कारणों से। जब किसी पदार्थ की वैज्ञानिक दृष्टि से कोई हानि नहीं होती है, तो उसे खाने की स्वीकृति दी जानी चाहिए।**
4. **निष्कर्ष:**

- यह आयत Vyapti के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें दिए गए कारण और परिणाम का कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार नहीं है, बल्कि यह केवल धार्मिक आस्था पर आधारित है।

निष्कर्ष

इन आयतों का विश्लेषण करते समय यह देखा जाता है कि वे केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं और Nyaya दर्शन के तत्वों के अनुसार इनमें कोई तात्त्विक, वैज्ञानिक या प्रमाणिक आधार नहीं है। इन आयतों में जो कारण और परिणाम दिए गए हैं, वे केवल धार्मिक दृष्टिकोण से मेल खाते हैं, जिसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

कुरआन आयतों का विश्लेषण (121-125)

आयत 121 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 121:**
   "ज़ाहिरी और बातिनी गुनाह (दोनों) को (बिल्कुल) छोड़ दो जो लोग गुनाह करते हैं उन्हें अपने आमाल का अनक़रीब ही बदला दिया जाएगा।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**
   - इस आयत में कहा गया है कि लोग गुनाह करते हैं तो उन्हें अपने कर्मों का फल मिलेगा।
   - Hetu के सिद्धांत के अनुसार, हर घटना का एक स्पष्ट और उचित कारण होना चाहिए। इस आयत में कोई स्पष्ट कारण नहीं बताया गया कि क्यों गुनाह करने वाले लोगों को सजा मिलेगी। यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, बिना किसी तात्त्विक कारण या तर्क के।
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
   - वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, किसी भी अपराध या गुनाह का परिणाम समाज पर आधारित होता है, जैसे कानूनों द्वारा निर्धारित दंड। यह दृष्टिकोण तात्त्विक, न्यायपूर्ण और समाजशास्त्रीय

सिद्धांतों पर आधारित होता है, जबकि इस आयत में यह केवल ईश्वरीय दंड के बारे में कहा गया है, जो तात्त्विक आधार से अनुपस्थित है।

4. **निष्कर्ष:**
   - **यह आयत Hetu के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें गुनाह के परिणाम का कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक कारण नहीं दिया गया है, यह केवल विश्वास पर आधारित है।**

आयत 122 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 122:**
   "और जिस (ज़बीहे) पर ख़ुदा का नाम न लिया गया उसमें से मत खाओ (क्योंकि) ये बेशक बदचलनी है और शयातीन तो अपने हवा ख़वाहों के दिल में वसवसा डाला ही करते हैं ताकि वह तुमसे (बेकार) झगड़े किया करें और अगर (कहीं) तुमने उनका कहना मान लिया तो (समझ रखो कि) बेशुबहा तुम भी मुशरिक हो।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Vyapti (अनिवार्य सहसंबंध)**
   - **इस आयत में कहा गया है कि जिस पर ख़ुदा का नाम नहीं लिया गया हो, वह खाना बुरा है और शैतान के प्रभाव में होता है।**
   - **Vyapti के सिद्धांत के अनुसार, किसी घटना का परिणाम अनिवार्य रूप से होना चाहिए। इस आयत में यह दावा किया गया है कि शैतान के प्रभाव से खाने का परिणाम बदचलनी है, लेकिन इसका कोई भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है। यह केवल विश्वास आधारित है, जबकि खाद्य सामग्री की स्थिति का निर्धारण वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए।**
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
   - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, किसी भी भोजन के स्वास्थ्य पर असर डालने वाले तत्व जैसे बैक्टीरिया, रसायन आदि होते हैं, न कि केवल यह कि उस पर भगवान का नाम लिया गया हो या नहीं। धार्मिक विश्वास के बजाय खाद्य सुरक्षा और पोषण विज्ञान पर ध्यान दिया जाना चाहिए।**
4. **निष्कर्ष:**

- **यह आयत Vyapti के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसका दावा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता। भोजन की स्थिति का निर्धारण केवल धार्मिक दृष्टिकोण से नहीं किया जा सकता।**

आयत 123 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 123:**
   "क्या जो शख़्स (पहले) मुर्दा था फिर हमने उसको ज़िन्दा किया और उसके लिए एक नूर बनाया जिसके ज़रिए वह लोगों में (बेतकल्लुफ़) चलता फिरता है उस शख़्स का सामना हो सकता है जिसकी ये हालत है कि (हर तरफ से) अँधेरे में (फँसा हुआ है) कि वहाँ से किसी तरह निकल नहीं सकता (जिस तरह मोमिनों के वास्ते ईमान आरास्ता किया गया) उसी तरह काफिरों के वास्ते उनके आमाल (बद) आरास्ता कर दिए गए हैं।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Prameya (ज्ञान का उद्देश्य)**

   - **इस आयत में कहा गया है कि ईश्वर ने किसी को मृत से जीवित किया और उसे एक प्रकाश (नूर) दिया, ताकि वह अंधकार से बाहर निकल सके।**
   - **Prameya के सिद्धांत के अनुसार, किसी ज्ञान का उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए। यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से एक प्रतीकात्मक बयान करती है, लेकिन इसके पीछे कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है। जीवन और मृत्यु का सिद्धांत जीवविज्ञान पर आधारित होता है, न कि केवल ईश्वर के आदेश पर।**

3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**

   - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, जीवन का निर्धारण जैविक और शारीरिक प्रक्रियाओं द्वारा होता है, न कि किसी भगवान के प्रकाश से। जीवन और मृत्यु के प्रक्रियाओं को तात्त्विक और भौतिक सिद्धांतों से समझा जा सकता है, न कि धार्मिक विश्वास से।**

4. **निष्कर्ष:**

   - **यह आयत Prameya के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें जो ज्ञान का उद्देश्य बताया गया है, वह केवल धार्मिक दृष्टिकोण से है, जिसका वैज्ञानिक और तात्त्विक आधार नहीं है।**

आयत 124 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 124:**
   "और जिस तरह मक्के में है उसी तरह हमने हर बस्ती में उनके कुसूरवारों को सरदार बनाया ताकि उनमें मक्कारी किया करें और वह लोग जो कुछ करते हैं अपने ही हक़ में (बुरा) करते हैं और समझते (तक) नहीं।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**
   - **इस आयत में कहा गया है कि समुदायों के प्रमुख (सरदार) को ईश्वर ने इसलिए नियुक्त किया ताकि वे अपनी मक्कारी करें, और उनके कर्मों का प्रभाव खुद पर ही पड़े।**
   - **Hetu के सिद्धांत के अनुसार, इस आयत में कहा गया है कि ये सरदार अपनी मक्कारी करते हैं, लेकिन इसका स्पष्ट और तात्त्विक कारण नहीं बताया गया है। यह केवल धार्मिक और नैतिक दृष्टिकोण से है, जबकि किसी भी घटना का कारण वैज्ञानिक रूप से समझा जाना चाहिए।**
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
   - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, समाज के नेतृत्व में भ्रष्टाचार और मक्कारी का कारण समाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक कारकों द्वारा उत्पन्न होता है, न कि केवल ईश्वर द्वारा निर्धारित कर्मों से। इसमें तात्त्विक कारणों का विश्लेषण जरूरी है, जो इस आयत में अनुपस्थित है।**
4. **निष्कर्ष:**
   - **यह आयत Hetu के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें जो कारण बताया गया है, वह केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, जिसका कोई तात्त्विक और वैज्ञानिक आधार नहीं है।**

आयत 125 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 125:**
   "और जब उनके पास कोई निशानी (नबी की तसदीक़ के लिए) आई है तो कहते हैं जब तक हमको ख़ुद वैसी चीज़ (वही वग़ैरह) न दी जाएगी जो पैग़म्बराने ख़ुदा को दी गई है उस वक़्त तक तो हम ईमान न लाएँगे और ख़ुदा जहाँ (जिस दिल में) अपनी पैग़म्बरी क़रार देता है उसकी (काबलियत व सलाहियत) को ख़ूब जानता है जो लोग (उस जुर्म के) मुजरिम हैं उनको अनक़रीब उनकी मक्कारी की

सज़ा में ख़ुदा के यहाँ बड़ी ज़िल्लत और सख़्त अज़ाब होगा।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Pramana (ज्ञान का प्रमाण)**
    - **इस आयत में कहा गया है कि लोग तब तक विश्वास नहीं करेंगे जब तक उन्हें वही चमत्कार नहीं मिल जाता जो पहले के पैगम्बरों को दिया गया था।**
    - **Pramana के सिद्धांत के अनुसार, ज्ञान का प्रमाण अनुभव या तात्त्विक आधार पर होना चाहिए, जबकि इस आयत में कहा गया है कि लोग केवल चमत्कारों के आधार पर विश्वास करेंगे। यह दृष्टिकोण केवल विश्वास पर आधारित है, बिना किसी तात्त्विक या वैज्ञानिक प्रमाण के।**
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
    - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, विश्वास और ज्ञान केवल चमत्कारों पर आधारित नहीं हो सकते। इसे तात्त्विक, साक्ष्य आधारित और अनुभवजन्य दृष्टिकोण से प्रमाणित किया जाना चाहिए।**
4. **निष्कर्ष:**
    - **यह आयत Pramana के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें ज्ञान का प्रमाण केवल चमत्कारों पर आधारित है, जबकि तात्त्विक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह पर्याप्त नहीं है।**

निष्कर्ष

इन आयतों का विश्लेषण करते समय यह देखा गया कि वे केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं और Nyaya दर्शन के तत्वों के अनुसार इनमें कोई तात्त्विक, वैज्ञानिक या प्रमाणिक आधार नहीं है। इन आयतों में जो कारण और परिणाम दिए गए हैं, वे केवल धार्मिक दृष्टिकोण से मेल खाते हैं, जिसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

कुरआन आयतों का विश्लेषण (126-130)

आयत 126 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 126:**
   "तो ख़ुदा जिस शख्स़ को राह रास्त दिखाना चाहता है उसके सीने को इस्लाम (की दौलियत) के वास्ते (साफ़ और) कुशादा (चौड़ा) कर देता है और जिसको गुमराही की हालत में छोड़ना चाहता है उनके सीने को तंग दुश्वार ग़ुबार कर देता है गोया (कुबूल इमान) उसके लिए आसमान पर चढ़ना है जो लोग इमान नहीं लाते ख़ुदा उन पर बुराई को उसी तरह मुसल्लत कर देता है।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**

   - **इस आयत में कहा गया है कि जिन लोगों को ईश्वर हिदायत देना चाहता है, उनके दिल को इस्लाम के लिए खुला कर देता है, और जिनसे वह हदायत वापस लेना चाहता है, उनके दिल को तंग कर देता है।**
   - **Hetu के सिद्धांत के अनुसार, हर घटना का कारण तात्त्विक और वैज्ञानिक होना चाहिए। यहाँ पर ईश्वर के इरादे से दिलों की तंगगी और खुलने का दावा किया गया है, जो केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, न कि किसी भौतिक या तात्त्विक कारण से।**
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**

   - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, दिल और दिमाग की स्थिति का निर्धारण जैविक और मानसिक कारकों द्वारा होता है, जैसे शिक्षा, समाज, और अनुभव। इसे तात्त्विक रूप से एक मानसिक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, न कि केवल ईश्वर की इच्छा से।**
4. **निष्कर्ष:**

   - **यह आयत Hetu के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें व्यक्त किए गए कारण वैज्ञानिक और तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किए जा सकते। यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।**

आयत 127 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 127:**
   "और (ऐ रसूल) ये (इस्लाम) तुम्हारे परवरदिगार का (बनाया हुआ) सीधा रास्ता है इबरत हासिल करने वालों के वास्ते हमने अपने आयात तफसीलन बयान कर दिए हैं।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Pramana (ज्ञान का प्रमाण)**

- इस आयत में कहा गया है कि इस्लाम को ईश्वर ने एक सीधा रास्ता बनाया है और यह ईमान वालों के लिए है।
- **Pramana** के सिद्धांत के अनुसार, किसी भी ज्ञान का प्रमाण अनुभव, तर्क या साक्ष्य पर आधारित होना चाहिए। यहाँ पर कहा गया है कि इस्लाम एक सीधा रास्ता है, लेकिन इसका कोई भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं दिया गया है। यह केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है।

3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**

    - वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, "सीधा रास्ता" किसी सामाजिक, नैतिक, या दार्शनिक सिद्धांत का परिणाम हो सकता है, जो सभी के लिए एक जैसा हो। हालांकि, इस आयत में धर्म का मार्गदर्शन केवल विश्वास पर आधारित है, न कि किसी वैज्ञानिक प्रमाण या तात्त्विक सिद्धांत से।

4. **निष्कर्ष:**

    - यह आयत **Pramana** के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसका दावा केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

आयत 128 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 128:**
   "उनके वास्ते उनके परवरदिगार के यहाँ अमन व चैन का घर (बेहष्त) है और दुनिया में जो कारगुज़ारियाँ उन्होने की थीं उसके ऐवज़ ख़ुदा उन का सरपरस्त होगा।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Prameya (ज्ञान का उद्देश्य)**

    - इस आयत में कहा गया है कि ईश्वर के यहाँ वे लोग अमन और चैन की जगह पर जाएंगे और उनके अच्छे कर्मों का पुरस्कार मिलेगा।
    - **Prameya** के सिद्धांत के अनुसार, ज्ञान का उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए। यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से एक भविष्यवाणी करती है, लेकिन इसका कोई तात्त्विक या भौतिक उद्देश्य नहीं है, क्योंकि यह केवल विश्वास पर आधारित है।

3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**

- वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, अच्छे कर्मों का फल समाजिक और व्यक्तिगत जीवन में देखा जाता है, लेकिन धार्मिक दृष्टिकोण में यह केवल ईश्वर की इच्छा पर निर्भर करता है। इसके बावजूद, यह समाज और व्यक्तिगत प्रगति के आधार पर कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं करता।

4. **निष्कर्ष:**
   - यह आयत Prameya के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसके उद्देश्य का कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार नहीं है, यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।

आयत 129 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 129:**
   "और (ऐ रसूल वह दिन याद दिलाओ) जिस दिन ख़ुदा सब लोगों को जमा करेगा और शयातीन से फरमाएगा, ऐ गिरोह जिन्नात तुमने तो बहुतेरे आदमियों को (बहका बहका कर) अपनी जमाअत बड़ी कर ली (और) आदमियों से जो लोग (उन शयातीन के दुनिया में) दोस्त थे कहेंगे ऐ हमारे पालने वाले (दुनिया में) हमने एक दूसरे से फायदा हासिल किया और अपने किए की सज़ा पाने को, जो वक़्त तू ने हमारे लिए मुअय्युन किया था अब हम अपने उस वक़्त (क़यामत) में पहुँच गए ख़ुदा उसके जवाब में, फरमाएगा तुम सब का ठिकाना जहन्नुम है और उसमें हमेशा रहोगे मगर जिसे ख़ुदा चाहे (नजात दे) बेशक तेरा परवरदिगार हिकमत वाला वाक़िफकार है।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Vyapti (अनिवार्य सहसंबंध)**
   - इस आयत में कहा गया है कि जिन्नात और इंसान एक-दूसरे से प्रभावित होते हैं, और इस कारण उनका परिणाम अंतिम दिन में कयामत में भुगतना पड़ेगा।
   - Vyapti के सिद्धांत के अनुसार, किसी घटना का परिणाम अनिवार्य रूप से होना चाहिए। इस आयत में यह दावा किया गया है कि शयातीन और इंसान के बीच एक अनिवार्य सहसंबंध है, लेकिन इसका कोई भौतिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है। यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है।
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
   - वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, किसी भी प्रभाव का परिणाम प्राकृतिक और सामाजिक कारकों द्वारा निर्धारित होता है, न कि केवल शयातीन के प्रभाव से। यह दृष्टिकोण तात्त्विक और भौतिक सिद्धांतों पर आधारित होता है, जबकि यह आयत धार्मिक विश्वासों से मेल खाती है।

4. **निष्कर्ष:**
    - **यह आयत Vyapti के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें जो सहसंबंध दर्शाया गया है, वह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता। यह केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है।**

आयत 130 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 130:**
   "और इसी तरह हम बाज़ ज़ालिमों को बाज़ का उनके करतूतों की बदौलत सरपरस्त बनाएँगे।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**
    - **इस आयत में कहा गया है कि कुछ ज़ालिमों को उनके कर्मों के कारण दूसरे ज़ालिमों का सरपरस्त बनाया जाएगा।**
    - **Hetu के सिद्धांत के अनुसार, किसी घटना का कारण तात्त्विक और वैज्ञानिक होना चाहिए। यह आयत केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, न कि किसी तात्त्विक कारण पर।**
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
    - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, समाज में भ्रष्टाचार और अत्याचार के कारण विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक कारक होते हैं, न कि केवल ईश्वर की इच्छा पर आधारित होते हैं।**
4. **निष्कर्ष:**
    - **यह आयत Hetu के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसका दावा तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

निष्कर्ष

इन आयतों में प्रस्तुत विचार केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं और Nyaya दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार इनमें कोई तात्त्विक, वैज्ञानिक या प्रमाणिक आधार नहीं है। इन आयतों में दिए गए कारण और

परिणाम को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता, जो इनका विश्लेषण करते समय Nyaya Darshan के तत्वों से मेल नहीं खाते।

कुरआन आयतों का विश्लेषण (131-135)

आयत 131 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 131:**
   "फिर हम पूछेंगे कि क्यों, ऐ गिरोह जिन व इन्स, क्या तुम्हारे पास तुम ही में के पैग़म्बर नहीं आए जो तुमसे हमारी आयतें बयान करें और तुम्हें तुम्हारे उस रोज़ (क़यामत) के पेश आने से डराएँ? वह सब अर्ज़ करेंगे (बेशक आए थे) हम ख़ुद अपने ऊपर आप अपनी गवाही देते हैं (वाकई) उनको दुनिया की (चन्द रोज़) ज़िन्दगी ने उन्हें अँधेरे में डाल रखा और उन लोगों ने अपने ख़िलाफ़ आप गवाही दीं।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Vyapti (अनिवार्य सहसंबंध)**
   - **इस आयत में यह कहा गया है कि लोग अपने कर्मों के परिणाम के बारे में खुद गवाही देंगे, क्योंकि उन्होंने अपनी जिंदगी के दौरान धार्मिक संदेशों को नकारा। यहाँ पर कर्मों के परिणाम का अनिवार्य सहसंबंध बताया गया है।**
   - **Vyapti के सिद्धांत के अनुसार, किसी घटना का परिणाम अनिवार्य रूप से एक निश्चित कारण से जुड़ा होता है। यह आयत बताती है कि क़यामत के दिन लोग अपने कर्मों का परिणाम स्वीकार करेंगे, जो केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और इसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
   - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, कर्मों का परिणाम केवल सामाजिक, मानसिक, और शारीरिक कारकों पर निर्भर करता है, जो व्यक्ति की स्थिति और जीवन शैली पर आधारित होते हैं, न कि केवल धार्मिक विश्वासों पर। यहाँ पर कर्मों का परिणाम क़यामत से जोड़ा गया है, जो केवल एक विश्वास है और इसके लिए कोई भौतिक या तात्विक प्रमाण नहीं है।**
4. **निष्कर्ष:**
   - **यह आयत Vyapti के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसका दावा एक धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसका कोई वैज्ञानिक या भौतिक प्रमाण नहीं है।**

आयत 132 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 132:**
   "बेशक ये सब के सब काफिर थे और ये (पैग़म्बरों का भेजना सिर्फ) उस वजह से है कि तुम्हारा परवरदिगार कभी बस्तियों को ज़ुल्म ज़बरदस्ती से वहाँ के बाशिन्दों के ग़फलत की हालत में हलाक नहीं किया करता।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**

   - **इस आयत में कहा गया है कि पैग़म्बरों को भेजने का कारण यह है कि ईश्वर कभी बस्तियों को ग़फलत में नष्ट नहीं करता। यहाँ पर कारण और परिणाम का संबंध बताया गया है।**
   - **Hetu के सिद्धांत के अनुसार, किसी घटना का कारण और उसका परिणाम स्पष्ट और तात्त्विक होना चाहिए। हालांकि इस आयत में जो कारण बताया गया है, वह केवल धार्मिक दृष्टिकोण से संबंधित है और इसका कोई वैज्ञानिक या भौतिक आधार नहीं है।**

3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**

   - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, समाज और संस्कृति में बदलाव उत्पन्न करने के लिए कई सामाजिक और राजनीतिक कारक होते हैं, न कि केवल धार्मिक संदेश या ईश्वर की इच्छा। इस आयत में ग़फलत और नष्ट करने का कारण केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसका कोई तात्त्विक या भौतिक प्रमाण नहीं है।**

4. **निष्कर्ष:**

   - **यह आयत Hetu के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसका कारण भौतिक या तात्त्विक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता। यह केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है।**

आयत 133 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 133:**
   "और जिसने जैसा (भला या बुरा) किया है उसी के मुवाफ़िक हर एक के दरजात हैं और जो कुछ वह लोग करते हैं तुम्हारा परवरदिगार उससे बेख़बर नहीं।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Prameya (ज्ञान का उद्देश्य)**

- **इस आयत में यह कहा गया है कि हर व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार उसका परिणाम मिलेगा, और भगवान उससे पूरी तरह से परिचित हैं।**
- **Prameya के सिद्धांत के अनुसार, ज्ञान का उद्देश्य स्पष्ट और तात्त्विक होना चाहिए। यहाँ पर कर्मों का परिणाम और ईश्वर की निगरानी का दावा किया गया है, लेकिन इसका कोई भौतिक या तात्त्विक उद्देश्य नहीं दिया गया है।**

3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**
   - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, किसी व्यक्ति के कर्मों का परिणाम उसकी सामाजिक और मानसिक स्थितियों पर निर्भर करता है, न कि केवल ईश्वर के ज्ञान और इच्छा पर। इस आयत में दावा किया गया है कि ईश्वर हर व्यक्ति के कर्मों से अवगत है, लेकिन यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण है, जिसका कोई तात्त्विक या भौतिक प्रमाण नहीं है।**
4. **निष्कर्ष:**
   - **यह आयत Prameya के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसके उद्देश्य का कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार नहीं है। यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।**

आयत 134 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 134:**
   "अगर चाहे तो तुम सबके सबको (दुनिया से उड़ा) ले लाए और तुम्हारे बाद जिसको चाहे तुम्हार जानशीन बनाए जिस तरह आख़िर तुम्हें दूसरे लोगों की औलाद से पैदा किया है।"
2. **Nyaya Darshan तत्व: Vyapti (अनिवार्य सहसंबंध)**
   - **इस आयत में कहा गया है कि अगर ईश्वर चाहे तो वह सबको समाप्त कर सकता है और नए लोगों को बना सकता है। यह स्थिति एक अनिवार्य सहसंबंध के रूप में व्यक्त की गई है, जो ईश्वर की इच्छा पर निर्भर करती है।**
   - **Vyapti के सिद्धांत के अनुसार, किसी घटना का परिणाम और कारण एक निश्चित और वैज्ञानिक सहसंबंध में होना चाहिए। यहाँ पर यह दावा केवल धार्मिक दृष्टिकोण से किया गया है और इसका कोई तात्त्विक या भौतिक प्रमाण नहीं है।**
3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**

- **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, मानव जीवन और अस्तित्व प्राकृतिक चयन, जैविक विकास, और अन्य सामाजिक-आर्थिक कारकों से प्रभावित होते हैं, न कि केवल ईश्वर की इच्छा से। इस आयत में जो सिद्धांत प्रस्तुत किया गया है, वह केवल धार्मिक विश्वास है और इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।**

4. **निष्कर्ष:**

   - **यह आयत Vyapti के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसमें जो सहसंबंध दर्शाया गया है, वह भौतिक या तात्त्विक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता। यह केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है।**

आयत 135 का विश्लेषण

1. **कुरआन आयत 135:**
   "बेशक जिस चीज़ का तुमसे वायदा किया जाता है वह ज़रूर (एक न एक दिन) आने वाली है।"

2. **Nyaya Darshan तत्व: Hetu (कारण)**

   - **इस आयत में कहा गया है कि जो वादा किया गया है, वह निश्चित रूप से पूरा होगा। यह वादा क़यामत और धार्मिक न्याय से संबंधित है, जो केवल ईश्वर की इच्छा पर आधारित है।**
   - **Hetu के सिद्धांत के अनुसार, किसी घटना का कारण और परिणाम तात्त्विक रूप से प्रमाणित होना चाहिए। इस आयत में बताया गया है कि वादा पूरी तरह से ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है, जिसका कोई भौतिक या तात्त्विक आधार नहीं है।**

3. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:**

   - **वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, भविष्य की घटनाएँ प्राकृतिक और सामाजिक प्रक्रियाओं के कारण होती हैं, न कि केवल धार्मिक विश्वासों और ईश्वर की इच्छा से। यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से मेल खाती है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।**

4. **निष्कर्ष:**

   - **यह आयत Hetu के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि इसका कारण केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका कोई तात्त्विक या भौतिक प्रमाण नहीं है।**

निष्कर्ष

इन आयतों में प्रस्तुत विचार धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं, जो Nyaya दर्शन के सिद्धांतों के अनुरूप नहीं हैं। इन आयतों के दावों का कोई तात्त्विक या भौतिक आधार नहीं है, जो इन्हें वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित किया जा सके। Vyapti, Hetu, और Prameya के सिद्धांतों से यह आयतें मेल नहीं खातीं, क्योंकि इनमें जो कारण और परिणाम दिए गए हैं, वे केवल धार्मिक दृष्टिकोण से संबंधित हैं और इनका कोई प्रमाणिक आधार नहीं है।

इस आयत का वैज्ञानिक, तार्किक, और मानवतावादी दृष्टिकोण से विश्लेषण करने के लिए, हम इसे विशेष रूप से न्याय दर्शनों के विभिन्न सिद्धांतों के माध्यम से जाँचेंगे। यह आयत धार्मिक विचारधाराओं, कुर्बानी प्रथाओं, और शुद्धता से संबंधित विभिन्न हिदायतों पर आधारित है, जिनमें तर्कसंगतता, वैज्ञानिक आधार, और मानवाधिकारों का उल्लंघन हो सकता है।

आयत 136 का विश्लेषण:

आयत: "तुम उसे (ख़ुदा को) थकाने में सक्षम नहीं हो सकते। (ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ मेरी क़ौम, तुम जो चाहो करो, मैं (अपने काम) कर रहा हूँ, फिर तुम्हें यह मालूम होगा कि आखिरत (स्वर्ग) किसके लिए है। ज़ालिम लोग कभी कामयाब नहीं होंगे।"

न्याय दर्शन तत्व: प्रमाण (सही ज्ञान) और हेतु (कारण)

प्रमाण (सही ज्ञान):

न्याय दर्शन के अनुसार, सही ज्ञान वह ज्ञान होता है जो सत्य और प्रमाणित हो। इस आयत में "तुम उसे थकाने में सक्षम नहीं हो सकते" का कथन केवल विश्वास और विश्वास की बात है। यह किसी प्रकार के ठोस प्रमाण या सत्य पर आधारित नहीं है। बिना वैज्ञानिक और तार्किक प्रमाण के किसी विषय पर निष्कर्ष की ओर बढ़ना सटीक नहीं होता है।

यह आयत लोगों को यह समझाने की कोशिश करती है कि कुछ ताकतें ऐसी हैं जिनसे कोई बच नहीं सकता, जबकि यदि हम इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो यह नकारात्मक विश्वास को फैलाती है कि इंसान को हर चीज़ में हार माननी चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण में, ब्रह्माण्ड में हर क्रिया के पीछे एक कारण होता है, और इसके लिए कोई अंतिम शक्ति नहीं होती।

हेतु (कारण):

आयत में यह कहा गया है कि जो लोग "जालिम" हैं, वे "कामयाब" नहीं हो सकते। इस कथन में एक स्पष्ट कारण नहीं दिया गया है कि क्यों जालिम लोग कभी सफल नहीं हो सकते। अगर जालिम व्यक्ति के संदर्भ में सफलता की बात की जा रही है, तो यह तर्क वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सही नहीं है। जालिम व्यक्ति (दूसरों के अधिकारों का उल्लंघन करने वाला) अक्सर अपने गलत कृत्यों के बावजूद सफलता प्राप्त कर सकते हैं, जैसे दुनिया के विभिन्न राजनेता, व्यापारी या अपराधी जो अपने नकारात्मक कार्यों के बावजूद समृद्ध होते हैं।

यह आयत इस प्रकार के कारणों की अवहेलना करती है और केवल एक सामान्य विश्वास को प्रचारित करती है, जो जीवन के वास्तविक सत्य और वैज्ञानिक विचारों से मेल नहीं खाता।

निष्कर्ष:

यह आयत केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका कोई ठोस प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया है। इसके द्वारा व्यक्त किया गया विचार यह कहता है कि जालिम लोग कभी सफल नहीं हो सकते, जबकि जीवन में बहुत सी ऐसी मिसालें हैं जो इसके विपरीत हैं। इससे यह साबित होता है कि यह आयत वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण से गलत है और मानवता के लिए सही संदेश नहीं देती।

अब हम अगले आयत की ओर बढ़ते हैं।

आयत 137 का विश्लेषण:

आयत: "और ये लोग ख़ुदा की पैदा की हुई खेती और चैपायों में से हिस्सा क़रार देते हैं और अपने ख़्याल के मुवाफिक कहते हैं कि ये तो ख़ुदा का (हिस्सा) है और ये हमारे शरीकों का (यानि जिनको हमने ख़ुदा का शरीक बनाया) फिर जो ख़ास उनके शरीकों का है वह तो ख़ुदा तक नहीं पहुँचने का और जो हिस्सा ख़ुदा का है वो उसके शरीकों तक पहुँच जाएगा, ये क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं।"

न्याय दर्शन तत्व: प्रमेय (ज्ञान का विषय) और हेतु (कारण)

प्रमेय (ज्ञान का विषय):

इस आयत में 'हिस्से' और 'भाग' के वितरण का वर्णन किया गया है। यह ज्ञान का विषय (प्रमेय) है, जो इस्लामी विश्वास और धार्मिक अवधारणाओं पर आधारित है। आयत में यह कहा जा रहा है कि लोग इस प्रकार के भागों का वर्गीकरण करते हैं, जिसमें कुछ हिस्से ख़ुदा के होते हैं और कुछ उनके शरीकों के होते हैं।

इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो यह बोध वस्तुनिष्ठ नहीं है क्योंकि वास्तविकता में किसी भी प्राकृतिक संसाधन या उत्पादन का कोई धार्मिक विभाजन नहीं होता है।

आधुनिक विज्ञान यह मानता है कि संसाधनों का वितरण मानवीय सामाजिक और राजनीतिक निर्णयों पर निर्भर करता है, न कि किसी दिव्य शक्ति के आशीर्वाद या क़ानून के तहत। धर्म से संबंधित इस प्रकार का वर्गीकरण मानव समाज की संरचनाओं पर आधारित हो सकता है, लेकिन इसे वैज्ञानिक आधार से नहीं समझा जा सकता।

हेतु (कारण):

आयत में यह कथित तर्क है कि जिन हिस्सों का संबंध शरीकों से है, वे ख़ुदा तक नहीं पहुँच सकते, जबकि ख़ुदा के हिस्से का संबंध शरीकों तक पहुँच सकता है। यह तर्क निराधार है क्योंकि यह धार्मिक विश्वासों के आधार पर भेदभाव करने का प्रयास करता है। जीवन के प्राकृतिक संसाधनों में कोई स्पष्ट धार्मिक कारण नहीं होता है कि वह किसी के पास पहुंचे या न पहुंचे। ये तरह-तरह के धार्मिक व्याख्यान और मिथक हैं, जो बिना किसी ठोस और वैध कारण के अस्तित्व में आते हैं।

वास्तविक जीवन में, संसाधनों का वितरण समाजिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय कारणों से होता है, न कि किसी ईश्वर या धार्मिक आदेश से। इस आयत का कथन असंगत है क्योंकि यह किसी प्राकृतिक कारण को नकारता है और केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।

निष्कर्ष:

यह आयत धार्मिक विचारों पर आधारित है और इससे कोई वैज्ञानिक प्रमाण या तर्क नहीं मिलता। इसे वैश्विक मानवता और समानता के संदर्भ में देखा जाए तो यह गलत संदेश देता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति या समाज के लिए प्राकृतिक संसाधनों के वितरण में भेदभाव करता है। यह आयत मानवीय दृष्टिकोण से गलत है और इसका संदेश सही नहीं माना जा सकता।

अब हम अगले आयत की ओर बढ़ते हैं।

आयत 138 का विश्लेषण:

आयत: "ताकि उन्हें (बदी) हलाकत में डाल दें और उनके सच्चे दीन को उन पर मिला जुला दें और अगर ख़ुदा चाहता तो लोग ऐसा काम न करते तो तुम (ऐ रसूल) और उनकी इफ़तेरा परदाज़ियों को (ख़ुदा पर) छोड़ दो और ये लोग अपने ख़्याल के मुवाफिक कहने लगे कि ये चैपाए और ये खेती अछूती है (138)"

न्याय दर्शन तत्व: प्रमेय (ज्ञान का विषय) और व्याप्ति (नियत समवाय)

प्रमेय (ज्ञान का विषय):

यह आयत धार्मिक और सांस्कृतिक विश्वासों के बारे में बात करती है। इसमें "अछूतेपन" की अवधारणा है, जिसमें कुछ वस्तुएं (जैसे चैपाए और खेती) को धर्म द्वारा विशेष रूप से पवित्र या निषिद्ध घोषित किया गया है। यह अवधारणा धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, लेकिन वास्तविकता में किसी भी वस्तु को 'अछूत' या 'पवित्र' मानने का कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।

विज्ञान और आधुनिक समाज में, ऐसी कोई अवधारणा नहीं है जो कहे कि किसी विशेष वस्तु को छूना या न छूना किसी विशेष धार्मिक आदेश या नियम के अधीन होता है। यह तर्क सिर्फ सांस्कृतिक और धार्मिक विश्वासों पर आधारित होता है, जो वैश्विक दृष्टिकोण से विज्ञान और मानवाधिकारों के संदर्भ में गलत है। यह धार्मिक विविधता को स्वीकार नहीं करता और सामाजिक भेदभाव की नींव रखता है।

व्याप्ति (नियत समवाय):

यहां पर "अछूत" और "पवित्र" के बीच संबंध को देखा जा सकता है, जो कि एक गलत और अव्यावहारिक धारणा है। यह आयत बताती है कि लोग अपने विश्वास के अनुसार कुछ चीजों को पवित्र और कुछ को निषिद्ध मानते हैं। इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। उदाहरण के लिए, जिस तरह से मांसाहारी खाने को कुछ समुदायों में 'निषिद्ध' माना जाता है, वैसे ही कोई वस्तु विशेष को अछूत मानने का कोई तथ्यात्मक कारण नहीं है।

व्याप्ति सिद्धांत के अनुसार, अगर कोई विचार हमेशा सत्य नहीं हो सकता है, तो वह पूरी तरह से गलत होता है। यहां, यह सिद्धांत इस बात पर खड़ा नहीं हो सकता कि "अछूत" या "पवित्र" होने का कोई वस्तुनिष्ठ प्रमाण नहीं है। यह सिर्फ एक सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक मतभेद का परिणाम है, जो तर्कसंगत नहीं है।

निष्कर्ष:

यह आयत एक अंधविश्वास को बढ़ावा देती है और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अव्यावहारिक है। यह आयत न केवल धार्मिक भेदभाव को बढ़ावा देती है, बल्कि सामाजिक समानता और समान अधिकारों के सिद्धांतों के खिलाफ भी है। आधुनिक समाज में, हमें विश्वासों के नाम पर भेदभाव और अंधविश्वास से बचना चाहिए, क्योंकि ये मानवता के मूल्यों के खिलाफ होते हैं।

अब हम अगले आयत की ओर बढ़ते हैं।

आयत 139 का विश्लेषण:

आयत: "और ये लोग अपने ख़्याल के मुवाफिक कहते हैं कि ये चैपाए और ये खेती अछूती है (138) उनको सिवा उसके जिसे हम चाहें कोई नहीं खा सकता और (उनका ये भी ख़्याल है) कि कुछ चारपाए ऐसे हैं जिनकी पीठ पर सवारी लादना हराम किया गया और कुछ चारपाए ऐसे हैं जिन पर (ज़िबह के वक़्त) ख़ुदा का नाम तक नहीं लेते और फिर यह ढकोसले (ख़ुदा की तरफ मनसूब करते) हैं ये सब ख़ुदा पर इफ़तेरा व बोहतान है ख़ुदा उनके इफ़तेरा परदाज़ियों को बहुत जल्द सज़ा देगा (139)"

न्याय दर्शन तत्व: हेतु (कारण) और प्रमेय (ज्ञान का विषय)

हेतु (कारण):

इस आयत में बताया गया है कि लोग कुछ विशेष जानवरों को "हराम" मानते हैं, जैसे कुछ जानवरों पर सवारी लादना, या जिनपर "खुदा का नाम" नहीं लिया जाता। यह मान्यता बिना किसी वैज्ञानिक या तर्कसंगत कारण के आधारित है। एकमात्र कारण जो दिया गया है वह धार्मिक विश्वास है।

न्याय दर्शन के अनुसार, हर कार्य का एक उचित और तार्किक कारण होना चाहिए। यदि कोई कार्य बिना ठोस कारण के किया जाता है, तो वह केवल अंधविश्वास होता है। यह आयत बिना किसी प्रमाण या तार्किक आधार के धार्मिक रिवाजों को बढ़ावा देती है। उदाहरण स्वरूप, यह विचार कि किसी जानवर पर "खुदा का नाम" नहीं लेने से वह हराम हो जाता है, केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।

प्रमेय (ज्ञान का विषय):

यह आयत दिखाती है कि लोग अपनी धार्मिक मान्यताओं के आधार पर किसी वस्तु या कार्य को निषिद्ध (हराम) मानते हैं, जो समाज में भेदभाव और अंधविश्वास को बढ़ावा देता है। यह आयत भी उसी प्रकार की धारणा को फैलाती है कि अगर किसी जानवर पर "खुदा का नाम" नहीं लिया गया, तो वह हराम है, जबकि यह तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से गलत है।

इसके विपरीत, विज्ञान और तर्क का यह सिद्धांत है कि किसी जानवर या वस्तु को 'हराम' या 'पवित्र' घोषित करना एक सामाजिक और धार्मिक मानसिकता का परिणाम है, जो मानवाधिकारों और समानता के सिद्धांतों के खिलाफ जाता है।

निष्कर्ष:

यह आयत धार्मिक अंधविश्वास और सामाजिक भेदभाव को बढ़ावा देती है। यह कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत प्रमाण नहीं देती कि किसी विशेष जानवर या कार्य को हराम मानने का कारण क्या है। इसके अलावा, यह तर्कसंगतता के सिद्धांतों के खिलाफ जाती है और समाज में असमानता और भेदभाव को बढ़ावा देती है।

इसलिए, यह आयत वैश्विक दृष्टिकोण से गलत है और मानवता के लिए हानिकारक है। हमें ऐसे धार्मिक विश्वासों से बचना चाहिए जो वैज्ञानिक और तर्कसंगत रूप से गलत हों और जो मानवता के समान अधिकारों और स्वतंत्रता के खिलाफ हों।

अब हम अगले आयत पर चर्चा करेंगे।

आयत 140 का विश्लेषण:

आयत: "और कुफ़्फ़ार ये भी कहते हैं कि जो बच्चा (वक़्त ज़बाह) उन जानवरों के पेट में है (जिन्हें हमने बुतों के नाम कर छोड़ा और ज़िन्दा पैदा होता तो) सिर्फ हमारे मर्दों के लिए हलाल है और हमारी औरतों पर हराम है और अगर वह मरा हुआ हो तो सब के सब उसमें शरीक हैं ख़ुदा अनक़रीब उनको बातें बनाने की सज़ा देगा बेशक वह हिकमत वाला बड़ा वाक़िफकार है (140)"

न्याय दर्शन तत्व: हेतु (कारण) और प्रमेय (ज्ञान का विषय)

हेतु (कारण):

इस आयत में एक खास धार्मिक परंपरा का उल्लेख किया गया है, जिसमें कुछ लोग यह मानते थे कि जिन जानवरों के पेट में बच्चा होता है, वह मर्दों के लिए हलाल (वैध) होता है, जबकि औरतों के लिए हराम (अवैध) होता है। यह धारणा किसी ठोस वैज्ञानिक कारण या तर्क पर आधारित नहीं है। यह पूरी तरह से एक धार्मिक विश्वास है जो बिना किसी कारण के बनाया गया है, और यह तर्क और न्याय के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

न्याय दर्शन में, "हेतु" का मतलब है, किसी कार्य के पीछे का वास्तविक कारण। यदि कोई कार्य बिना तार्किक और ठोस कारण के किया जाता है, तो उसे निराधार माना जाता है। यहाँ, इस परंपरा का कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है। यह सिर्फ धार्मिक विश्वासों पर आधारित एक भ्रामक धारणा है।

प्रमेय (ज्ञान का विषय):

यह आयत एक विशेष धार्मिक अवधारणा को फैलाती है जिसमें यह कहा गया है कि अगर एक जानवर का बच्चा जीवित पैदा होता है, तो वह मर्दों के लिए वैध (हलाल) होता है, लेकिन महिलाओं के लिए अवैध (हराम) होता है। यह एक भेदभावपूर्ण और अवैज्ञानिक दृष्टिकोण है। कोई ठोस तर्क या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है कि एक मादा जानवर के पेट में बच्चा होने से उस जानवर का मांस क्यों और किस आधार पर महिलाओं के लिए हराम हो जाता है और मर्दों के लिए हलाल।

यह ज्ञान का विषय (प्रमेय) समाज में असमानता और भेदभाव फैलाने वाला है, क्योंकि यह दोनों लिंगों के बीच भेदभाव करता है, और यह आधुनिक तर्क, समानता और न्याय के सिद्धांतों के खिलाफ है।

निष्कर्ष:

यह आयत धार्मिक अंधविश्वास और लिंग आधारित भेदभाव को बढ़ावा देती है। इसमें किसी भी प्रकार का तर्कसंगत या वैज्ञानिक आधार नहीं दिया गया है। इसका संदेश समाज में असमानता को बढ़ावा देने वाला है और यह आधुनिक तर्क और मानवाधिकारों के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता। इस प्रकार, यह आयत वैश्विक दृष्टिकोण से गलत है और समाज में समानता और मानवाधिकारों के सिद्धांतों के खिलाफ जाती है।

इसलिए, हमें इस प्रकार की अंधविश्वासपूर्ण परंपराओं से बचने की आवश्यकता है जो किसी ठोस और तर्कसंगत आधार पर आधारित नहीं हैं और जो मानवता के लिए हानिकारक हो सकती हैं।

अब हम अगली आयत पर चर्चा करेंगे।

आयत 141-145 का विश्लेषण:

आयत 141:

"बेशक जिन लोगों ने अपनी औलाद को बे समझे बूझे बेवकूफी से मार डाला और जो रोज़ी ख़ुदा ने उन्हें दी थी उसे ख़ुदा पर इफ़तेरा (बोहतान) बाँध कर अपने ऊपर हराम कर डाला और वह सख़्त घाटे में है ये यक़ीनन राहे हक़ से भटक गऐ और ये हिदायत पाने वाले थे भी नहीं"

न्याय दर्शन तत्व: हेतु (कारण) और प्रमेय (ज्ञान का विषय)

हेतु (कारण):

इस आयत में कहा गया है कि लोग अपनी औलाद को मार देते हैं और ख़ुदा की दी हुई रोज़ी को इफ़तेरा (बोहतान) बांध कर अपने ऊपर हराम कर लेते हैं। यह बिना किसी तर्क और स्पष्ट कारण के किया जाता है। न्याय दर्शन में, कारण (हेतु) के बिना कोई भी कार्य तार्किक रूप से सही नहीं माना जाता। इस आयत में कोई ठोस तर्क नहीं दिया गया कि क्यों किसी को अपनी औलाद को मारने या रोज़ी को हराम करने की आवश्यकता है। यह एक विश्वास है, जो बिना किसी वैज्ञानिक या तर्कसंगत प्रमाण के किया गया है।

प्रमेय (ज्ञान का विषय):

यह आयत बताती है कि ये लोग ख़ुदा के आदेश के खिलाफ जाकर अपनी औलाद को मार डालते हैं और उसकी दी हुई रोज़ी को हराम कर देते हैं। परंतु इस पर कोई स्पष्ट दार्शनिक या वैज्ञानिक आधार नहीं है। यदि इस विचार को हम प्रमेय के रूप में देखें, तो यह सिद्धांत न केवल तर्कहीन है, बल्कि यह मानवता के मूलभूत अधिकारों का उल्लंघन करता है। न्याय दर्शन के अनुसार, प्रमेय वो ज्ञान का विषय होता है जो तथ्यों पर आधारित होता है, जबकि यहाँ पर विचार किए गए सिद्धांत बिना किसी ठोस आधार के प्रस्तुत किए गए हैं।

निष्कर्ष:

यह आयत मानव जीवन और संसाधनों के संदर्भ में तर्कहीन विश्वासों का प्रचार करती है। इसे किसी भी वैज्ञानिक या तर्कसंगत दृष्टिकोण से सही नहीं ठहराया जा सकता। इसके कारण यह मानवता के मूल्यों और अधिकारों के खिलाफ है।

आयत 142:

"और वह तो वही ख़ुदा है जिसने बहुतेरे बाग़ पैदा किए (जिनमें मुख़्तलिफ दरख़्त हैं - कुछ तो अंगूर की तरह टट्टियों पर) चढ़ाए हुए और (कुछ) बे चढ़ाए हुए और खजूर के दरख़्त और खेती जिसमें फल मुख़्तलिफ़ किस्म के हैं और ज़ैतून और अनार बाज़ तो सूरत रंग मज़े में, मिलते जुलते और (बाज़) बेमेल (लोगों) जब ये चीज़े फलें तो उनका फल खाओ और उन चीज़ों के काटने के दिन ख़ुदा का हक़ (ज़कात) दे दो और ख़बरदार फज़ूल ख़र्ची न करो - क्यों कि वह (ख़ुदा) फुज़ूल ख़र्चे से हरगिज़ उलफत नहीं रखता"

न्याय दर्शन तत्व: प्रमाण (साक्ष्य) और हेतु (कारण)

प्रमाण (साक्ष्य):

इस आयत में कहा गया है कि जो ख़ुदा ने फल और बाग़ पैदा किए हैं, उनसे लाभ उठाओ, लेकिन ज़कात देना न भूलो। यह आयत आस्थापूर्वक यह सुझाव देती है कि बाग़ों से प्राप्त फल का उपभोग करो और ज़कात दो, लेकिन व्यर्थ खर्च से बचो। यहाँ पर प्रमाण की आवश्यकता होती है। क्या यह आदेश वैज्ञानिक रूप से सही है? क्या यह हक़ीकत में हम पर लागू होता है? क्या यह सिर्फ धार्मिक विश्वास है या इसके पीछे कोई साक्ष्य है जो यह सिद्ध करता है कि ज़कात देना और फिजूलखर्ची से बचना एक बेहतर तरीका है?

हेतु (कारण):

इस आयत में तर्क है कि ज़कात देना और फिजूल खर्च से बचना सही है, लेकिन इस तर्क के पीछे कोई प्रमाण या ठोस कारण नहीं दिया गया है। यह धार्मिक विश्वास पर आधारित है। न्याय दर्शन में, यदि कोई तर्क बिना प्रमाण के होता है, तो उसे खारिज किया जा सकता है, क्योंकि तर्क को प्रमाण के बिना स्वीकार करना गलत है। किसी व्यावहारिक दृष्टिकोण से ज़कात और बचत के लाभ को दिखाने के लिए ठोस तर्क की आवश्यकता है, जो इस आयत में गायब है।

निष्कर्ष:

यह आयत एक धार्मिक आदेश देती है जो ज़कात और फिजूल खर्ची से बचने की बात करता है, लेकिन इस आदेश को किसी प्रमाण या तर्क के आधार पर नहीं प्रस्तुत किया गया है। यह सिर्फ एक विश्वास आधारित सिद्धांत है।

आयत 143:

"और चारपायों में से कुछ तो बोझ उठाने वाले (बड़े बड़े) और कुछ ज़मीन से लगे हुए (छोटे छोटे) पैदा किए ख़ुदा ने जो तुम्हें रोज़ी दी है उस में से खाओ और शैतान के क़दम ब क़दम न चलो (143)"

न्याय दर्शन तत्व: प्रमाण (साक्ष्य) और व्याप्ति (अविचल सम्बंध)

प्रमाण (साक्ष्य):

यह आयत कहती है कि जो जानवर ख़ुदा ने पैदा किए हैं, उनसे खाओ, और शैतान के रास्ते पर मत चलो। हालांकि यह आदेश है, लेकिन इसमें कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत प्रमाण नहीं दिया गया है कि क्यों इन जानवरों को खाना चाहिए या शैतान के रास्ते से बचना चाहिए।

व्याप्ति (अविचल सम्बंध):

इस आयत में कहा गया है कि शैतान के कदमों से न चलो, लेकिन इस आदेश में कोई स्पष्ट अविचल सम्बंध नहीं दिखता। शैतान के कदमों का क्या मतलब है? क्या यह शारीरिक रूप से है या मानसिक और नैतिक दृष्टिकोण से है? इस अविचल सम्बंध की कोई व्याख्या नहीं दी गई, जिससे यह आयत सटीक रूप से समझी जा सके।

निष्कर्ष:

यह आयत एक धार्मिक आदेश देती है, लेकिन इसके पीछे कोई स्पष्ट वैज्ञानिक या तर्कसंगत प्रमाण नहीं है। यह विश्वास पर आधारित है और इसका कोई सटीक तर्क नहीं दिया गया है।

आयत 144-145 का विश्लेषण:

आयत 144:

"क्यों कि वह तो यक़ीनन तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है (ख़ुदा ने नर मादा मिलाकर) आठ (किस्म के) जोड़े पैदा किए हैं - भेड़ से (नर मादा) दो और बकरी से (नर मादा) दो..."

न्याय दर्शन तत्व: हेतु (कारण) और प्रमेय (ज्ञान का विषय)

हेतु (कारण):

यह आयत बताती है कि ख़ुदा ने आठ प्रकार के नर और मादा जोड़े पैदा किए हैं, जिनमें भेड़ और बकरी शामिल हैं। यह इस बात को संदर्भित करती है कि यह जोड़े विशेष रूप से ख़ुदा के आदेश से उत्पन्न हुए हैं। तर्क में यह सवाल उठता है कि क्या केवल ख़ुदा की इच्छा से ही यह उत्पत्ति हुई है? क्या इस बात का कोई वैज्ञानिक प्रमाण है कि ऐसा जन्म होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है या यह ख़ुदा के आदेश का नतीजा है? इस आयत में कोई ठोस कारण (हेतु) प्रस्तुत नहीं किया गया कि क्यों यह जन्म प्रक्रिया इस तरह से होनी चाहिए और इसके पीछे का तर्क क्या है।

प्रमेय (ज्ञान का विषय):

आयत में यह भी बताया गया है कि ख़ुदा ने नर-मादा के जोड़े पैदा किए हैं, लेकिन यह बिना किसी प्रमाण या तर्क के है। इस पर यदि हम प्रमेय का दृष्टिकोण अपनाएं तो यह समझ में आता है कि इस आयत में दिए गए सिद्धांत का कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत प्रमाण नहीं है। ज़ैविक दृष्टिकोण से देखा जाए तो नर और मादा

का जन्म प्राकृतिक रूप से हो सकता है, और इसे केवल धार्मिक आदेश से जोड़ना वैज्ञानिक दृष्टिकोण से एक तर्कहीन विचार है।

निष्कर्ष:

यह आयत ख़ुदा की इच्छा और आदेश को प्राथमिकता देती है, लेकिन इसके पीछे कोई ठोस तर्क या प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है, जो इसे वैज्ञानिक या तर्कसंगत रूप से साबित कर सके। इस तरह की विश्वास आधारित विचारधारा तार्किक दृष्टिकोण से सही नहीं मानी जा सकती है।

आयत 145:

"अगर तुम सच्चे हो तो ज़रा समझ के मुझे बताओ और ऊँट के (नर मादा) दो और गाय के (नर मादा) दो (ऐ रसूल तुम उनसे) पूछो कि ख़ुदा ने उन दोनों (ऊँट गाय के) नरों को हराम किया या दोनों मदनियों को या उस बच्चे को जो दोनों मादनियों के पेट अपने अन्दर लिये हुए है…"

न्याय दर्शन तत्व: हेतु (कारण) और प्रमाण (साक्ष्य)

हेतु (कारण):

यह आयत पूछती है कि क्या ख़ुदा ने किसी विशेष जानवर के नर या मादा को हराम किया है। यह सवाल उठाता है कि यह निर्णय किस आधार पर लिया गया है, और क्या इसका कोई स्पष्ट कारण (हेतु) है। तर्क के दृष्टिकोण से, यदि किसी जानवर के नर या मादा को हराम किया गया है, तो इसका क्या कारण है? क्या यह केवल ख़ुदा के आदेश पर आधारित है, या इसके पीछे कोई नैतिक, स्वास्थ्य या वैज्ञानिक कारण है? आयत में इसका कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दिया गया, और यह केवल धार्मिक आदेश पर निर्भर है।

प्रमाण (साक्ष्य):

यह आयत धर्म और विश्वास पर आधारित है, लेकिन इसमें कोई साक्ष्य या प्रमाण नहीं है जो यह साबित करे कि किसी विशेष जानवर को हराम करने का धार्मिक आदेश सटीक और वैध है। प्रमाण के दृष्टिकोण से देखा जाए तो हमें इस आदेश के समर्थन में कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं मिलता। इसे केवल विश्वास के रूप में लिया गया है, जो तर्क के आधार पर समझा नहीं जा सकता।

निष्कर्ष:

यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से पूछताछ करती है कि कौन सा जानवर हराम है, लेकिन इस सवाल का कोई ठोस तर्क या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं दिया गया है। यह विश्वास आधारित विचार है, और इसके पीछे कोई तर्कसंगत कारण या प्रमाण नहीं है। न्याय दर्शन के अनुसार, इस तरह के आदेशों को बिना प्रमाण के स्वीकार नहीं किया जा सकता।

सारांश:

आयत 144-145 धार्मिक आदेशों को प्रस्तुत करती हैं, जिसमें नर-मादा के जोड़े और विशेष जानवरों को हराम करने का ज़िक्र है। हालांकि, इन आदेशों के पीछे कोई ठोस वैज्ञानिक या तर्कसंगत कारण नहीं दिया गया है, और यह केवल विश्वास पर आधारित हैं। न्याय दर्शन के अनुसार, बिना प्रमाण और तर्क के ऐसे आदेशों को सही ठहराना सही नहीं है।

आयत 144-145:

"और वह तो वही ख़ुदा है जिसने नर-मादा मिलाकर आठ जोड़े पैदा किए हैं - भेड़ से दो और बकरी से दो...क्या जिस वक्त ख़ुदा ने तुमको उसका हुक्म दिया था तुम उस वक़्त मौजूद थे फिर जो ख़ुदा पर झूठ बोताहन बाधें उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा ताकि लोगों के वे समझे बूझे गुमराह करें..."

न्याय दर्शन तत्व: प्रमाण (साक्ष्य) और हेतु (कारण)

प्रमाण (साक्ष्य):

यह आयत कहती है कि शारीरिक रूप से मादाओं और नरों का चयन ख़ुदा ने किया है, लेकिन क्या इसका वैज्ञानिक प्रमाण है कि क्या केवल ख़ुदा के आदेश से ही यह जोड़े सही होते हैं? क्या इस प्रकार के बायोलॉजिकल आधार के पीछे कोई स्पष्ट प्रमाण है जो इस सिद्धांत को साबित करता हो?

हेतु (कारण):

आयत में पूछा गया है कि क्या तुम उस वक्त मौजूद थे जब ख़ुदा ने यह हुक्म दिया था? इसका कारण यह है कि जब कुछ आदेश बिना कारण के होते हैं, तो लोग उन आदेशों का पालन करने से पीछे हटते हैं। यह सवाल बिना किसी ठोस कारण के किया गया है।

निष्कर्ष:

यह आयत बिना किसी ठोस वैज्ञानिक या तर्कसंगत प्रमाण के धार्मिक आदेश देती है और इसके कारण और प्रमाण की कोई स्पष्टता नहीं है।

सारांश:

ये आयतें बिना किसी तर्कसंगत और वैज्ञानिक प्रमाण के धार्मिक आदेश देती हैं। इनका उद्देश्य व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन के लिए धार्मिक दिशा-निर्देश प्रदान करना है, लेकिन इन आदेशों के पीछे कोई ठोस कारण या प्रमाण नहीं है, जो इन्हें तार्किक या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सही ठहराए।

नीचे प्रत्येक आयत (अयात) का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया है ताकि यह साबित किया जा सके कि ये आयतें सार्वभौमिक रूप से गलत और अस्वीकृत हैं:

आयत 146 (कुरान)

आयत का अनुवाद:
"ऐ रसूल! तुम कहो कि जो कुरान मेरे पास है, उसमें कोई चीज़ किसी खाने वाले पर हराम नहीं है सिवाय इसके कि वह मुर्दा हो, या बहता हुआ ख़ून, या सूअर का गोश्त हो। ये (चीजें) नापाक और हराम हैं या वह जानवर जिसे ख़ुदा के अलावा किसी और का नाम लिया गया हो। फिर जो शख़्स मजबूरी में खाए और नाफरमानी न करे, तो उसका परवरदिगार बड़ा बख़्शने वाला है।"

आलोचना:

1. **सूअर का मांस और स्वास्थ्य**:
    - **सूअर का मांस स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है क्योंकि इसमें परजीवी और बैक्टीरिया होते हैं जो इंसान के शरीर में संक्रमण फैला सकते हैं। हालांकि, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सूअर का मांस सही तरीके से पकाया जाए तो यह किसी भी अन्य मांस की तरह सुरक्षित हो सकता है। पूरी तरह से सूअर के मांस को हराम ठहराना विज्ञान के साक्ष्य से मेल नहीं खाता, क्योंकि यह मांस खाद्य सुरक्षा के उपायों के तहत खाया जा सकता है।**

2. **मृत जानवरों का मांस**:
   - **मृत जानवरों का मांस स्वास्थ्य के लिए जोखिमपूर्ण हो सकता है, लेकिन यह भी वैज्ञानिक रूप से यह दिखाया गया है कि कुछ मृत जानवरों का मांस सही प्रक्रिया से पुनः संसाधित किया जा सकता है। इसका प्रत्येक संदर्भ में निषेध नहीं किया जा सकता।**
3. **मजबूरी में खाने का सिद्धांत**:
   - **आयत में मजबूरी में खाने की अनुमति दी जाती है, लेकिन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह तर्क किया जा सकता है कि व्यक्ति को जीवन के किसी भी पहलू में मजबूरी में निर्णय लेने के बजाय, वैकल्पिक उपायों पर विचार करना चाहिए।**

आयत 147 (कुरान)

आयत का अनुवादः
"हमने यहूदियों पर तमाम नाख़ूनदार जानवर हराम कर दिए थे और गाय और बकरी की चरबी भी उन पर हराम कर दी थी, सिवाय उन चरबियों के जो उनकी पीठ या आतों पर हो, या हड्डी से जुड़ी हो। यह हमने उन्हें उनकी सरक़षी की सज़ा दी थी, और इसमें कोई शक नहीं कि हम सच्चे हैं।"

आलोचनाः

1. **चरबी का निषेध**:
   - **बकरी और गाय की चरबी को निषिद्ध करना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से असंगत हो सकता है क्योंकि एक निर्धारित मात्रा में चरबी शरीर के लिए आवश्यक होती है। चरबी में विटामिन और ओमेगा-3 फैटी एसिड होते हैं जो मानव शरीर के लिए फायदेमंद होते हैं। चरबी का निषेध स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से पूरी तरह से तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि यह असंतुलित आहार की स्थिति उत्पन्न कर सकता है।**
2. **भेदभावपूर्ण नियम**:
   - **यहूदियों पर विशेष रूप से चरबी को हराम करना भेदभावपूर्ण लगता है क्योंकि यह केवल एक समुदाय को लक्षित करता है, जबकि अन्य समुदायों के लिए यह निषेध लागू नहीं किया गया। यह सार्वभौमिक समानता के सिद्धांत से मेल नहीं खाता।**

आयत 148 (कुरान)

आयत का अनुवाद:
"अगर वे तुम्हें झुठलाएं तो तुम कहो कि तुम्हारा परवरदिगार बड़ी रहमत वाला है, लेकिन उसका अज़ाब गुनाहगारों से टलता नहीं है।"

आलोचना:

1. **गुनाहगारों के लिए सजा**:
    - **इस आयत में गुनाहगारों के लिए दंड का सिद्धांत है, लेकिन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह तर्क किया जा सकता है कि सभी अपराधों के लिए शारीरिक या मानसिक दंड की आवश्यकता नहीं होती। समाज में पुनर्वास और सुधार के सिद्धांतों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, ताकि व्यक्ति के दोष को सुधारा जा सके, न कि केवल दंडित किया जाए।**
2. **न्याय और दया का संतुलन**:
    - **केवल दंड और सजा का सिद्धांत समाज में न्याय की भावना को प्रभावित कर सकता है। आधुनिक समाज में पुनर्वास और क्षमा का महत्व ज्यादा है। दंड के बजाय सुधारात्मक उपायों को प्राथमिकता देना मानवता के लिए बेहतर हो सकता है।**

आयत 149 (कुरान)

आयत का अनुवाद:
"मुशरेकीन कहेंगे कि अगर ख़ुदा चाहता तो न हम लोग शिर्क करते और न हमारे बाप दादा, और न हम कोई चीज़ अपने ऊपर हराम करते।"

आलोचना:

1. **स्वतंत्र इच्छा का उल्लंघन**:
    - **आयत यह संकेत करती है कि यदि कोई व्यक्ति शिर्क करता है तो वह ईश्वर की इच्छा के खिलाफ जाता है, लेकिन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह स्पष्ट है कि मानव मस्तिष्क स्वतंत्र रूप से विचार करने और निर्णय लेने में सक्षम होता है। स्वतंत्र इच्छा को अस्वीकार करना और**

यह कहना कि किसी को ईश्वर के आदेशों के अनुसार कार्य करना चाहिए, यह व्यक्तित्व और मानसिक स्वतंत्रता का उल्लंघन है।

2. **समाज में धार्मिक स्वतंत्रता**:
   - **प्रत्येक व्यक्ति को अपनी धार्मिक विश्वासों में स्वतंत्रता होनी चाहिए। यह आयत केवल एक विशेष धर्म या विश्वास को मानने के लिए व्यक्तियों को मजबूर करती है, जबकि आधुनिक मानवाधिकारों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और विविधता को सम्मान दिया जाता है।**

आयत 150 (कुरान)

आयत का अनुवाद:
"तुम कहो कि तुम्हारे पास कोई दलील नहीं है, ख़ुदा तक पहुँचाने वाली दलील ख़ुदा ही के लिए ख़ास है।"

आलोचना:

1. **दलील और प्रमाण की आवश्यकता**:
   - **इस आयत में यह कहा गया है कि केवल ख़ुदा की दलील है, लेकिन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह तर्क करना मुश्किल है कि किसी भी धर्म या विश्वास को बिना प्रमाण के स्वीकार किया जाए। किसी भी सिद्धांत की पुष्टि के लिए तर्क, प्रमाण और जांच आवश्यक होती है। बिना प्रमाण के विश्वास को स्वीकार करना वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अस्वीकृत किया जा सकता है।**
2. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्क**:
   - **जब तक किसी सिद्धांत का वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है, तब तक उसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता। इस आयत में दलील के बिना विश्वास की बात की गई है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अस्वीकार्य है।**

निष्कर्ष:

इन सभी आयतों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करने के बाद यह स्पष्ट होता है कि इनमें दी गई बातें सार्वभौमिक रूप से सही नहीं मानी जा सकतीं। आधुनिक विज्ञान, तर्क और मानवाधिकारों के सिद्धांतों के

अनुसार, इन आयतों में प्रस्तुत विचारों में कई त्रुटियाँ हैं, जो वैश्विक मानवीय मूल्य और वैज्ञानिक तथ्यों के खिलाफ जाती हैं।

आयत 151 से 155 तक का आलोचनात्मक विश्लेषण:

आयत 151 का अनुवाद: "फिर अगर वही चाहता तो तुम सबकी हिदायत करता। (ऐ रसूल) तुम कह दो कि अपने गवाहों को लाकर हाजिर करो जो ये गवाही दें कि ये चीज़ें (जिन्हें तुम हराम मानते हो) ख़ुदा ही ने हराम कर दी हैं। फिर अगर (बिलग़रज़) वह गवाही दे भी दे तो (ऐ रसूल) कहीं तुम उनके साथ गवाही न देना और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और दूसरों को अपने परवरदिगार का हम सर बनाते हैं उनकी नफ़सियानी ख़्वाहिशो पर न चलना।"

आलोचना:

1. **हिदायत का सिद्धांत**:
   - **आयत में यह कहा गया है कि अगर ईश्वर चाहता तो सभी को हिदायत दे देता। यह बात वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण से सही नहीं है, क्योंकि मानव का मस्तिष्क स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने में सक्षम है। हर व्यक्ति का विकास और विश्वास उसकी शिक्षा, अनुभव और स्वतंत्र विचार प्रक्रिया से प्रभावित होता है, न कि केवल ईश्वर की इच्छा से। इस तरह का विचार व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा और तर्कशक्ति के सिद्धांत के खिलाफ जाता है।**
2. **गवाही की बात**:
   - **यह आयत गवाहों की बात करती है, लेकिन विज्ञान और न्यायशास्त्र में गवाही पर आधारित फैसले बहुत जटिल होते हैं और केवल बयानों या कथनों से सत्यता का निर्धारण नहीं किया जा सकता। तर्क, प्रमाण और पुख्ता सबूतों की आवश्यकता होती है। गवाही देने को सत्य मानना एक असमर्थ तरीका हो सकता है जब तक उसे प्रमाणों और तथ्यपूर्ण विश्लेषण से समर्थित नहीं किया जाता।**

आयत 152 का अनुवाद: "(ऐ रसूल) तुम उनसे कहो कि (बेबस) आओ, जो चीज़ें ख़ुदा ने तुम पर हराम की हैं, वह मैं तुम्हें पढ़कर सुनाऊँ। वह यह कि किसी चीज़ को ख़ुदा का शिरीक़ न बनाओ और माँ-बाप के साथ नेक सुलूक़ करो और मुफ़लिसी के ख़ौफ से अपनी औलाद को मार न डालना (क्योंकि) उनको और तुमको रिज़क देने वाले तो हम हैं और बदकारियों के क़रीब भी न जाओ चाहे वह ज़ाहिर हो या पोशीदा और किसी जान वाले को जिस के क़त्ल को ख़ुदा ने हराम किया है, न मार डालना मगर (किसी) हक़ के ऐवज़ में।"

आलोचना:

1. **माँ-बाप के साथ सुलूक**:
    - **इस आयत में माँ-बाप के साथ अच्छे सुलूक करने की बात की गई है, लेकिन यह सार्वभौमिक रूप से सही है, क्योंकि हर समाज में परिवार की अहमियत है। हालांकि, यह भी सही है कि कुछ स्थितियों में बच्चों को अपने माता-पिता से संरक्षण या स्वतंत्रता चाहिए हो सकती है, विशेषकर तब जब माता-पिता का व्यवहार अभद्र हो। यह आयत बच्चों की स्वतंत्रता और अधिकारों के प्रति संवेदनशील नहीं है।**
2. **बच्चों को मारने की निषेधता**:
    - **आयत में यह कहा गया है कि मुफ़लिसी के ख़ौफ से बच्चों को न मारें। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह सिद्ध किया गया है कि गरीबी का प्रभाव बच्चों पर पड़ता है, लेकिन गरीबी से बचाव के लिए बच्चों को मारने का कोई तर्क नहीं है। इसके बजाय, गरीबी और माता-पिता की मानसिक स्थिति को सुधारने के उपायों पर ध्यान देना चाहिए।**

आयत 153 का अनुवाद: "और तुमसे कहो कि (बेबस) आओ जो चीज़ें ख़ुदा ने तुम पर हराम की हैं, वह मैं तुम्हें पढ़कर सुनाऊँ। वह यह कि किसी चीज़ को ख़ुदा का शिरीक़ न बनाओ और माँ-बाप के साथ नेक सुलूक़ करो और मुफ़लिसी के ख़ौफ से अपनी औलाद को मार न डालना (क्योंकि) उनको और तुमको रिज़क देने वाले तो हम हैं और बदकारियों के क़रीब भी न जाओ चाहे वह ज़ाहिर हो या पोशीदा।"

आलोचना:

1. **इन्साफ़ से काम करना**:
    - **आयत में यह कहा गया है कि जब तुम बात करो तो इन्साफ़ से करो, चाहे वह व्यक्ति तुम्हारा प्रिय क्यों न हो। यह सिद्धांत सही है क्योंकि समाज में न्याय और समानता को बढ़ावा देना चाहिए। लेकिन यह भी महत्वपूर्ण है कि इन्साफ़ को किसी भी एकतरफा दृष्टिकोण से न किया जाए। वैज्ञानिक और समाजशास्त्र में इन्साफ़ को परिभाषित करते वक्त सभी पक्षों की स्थिति और तर्कों को महत्व दिया जाता है।**
2. **यतीम के माल का संरक्षण**:

- यतीम के माल के संरक्षण की बात सही है, लेकिन यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इस बात को पुष्ट नहीं करता कि हर यतीम के साथ एक जैसे तरीके से पेश आना चाहिए। हर बच्चे की व्यक्तिगत स्थिति और आवश्यकताएं अलग हो सकती हैं, और उन्हें उचित देखभाल और शिक्षा देने के उपायों पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

आयत 154 का अनुवाद: "तो उसी पर चले जाओ और दूसरे रास्ते पर न चलो कि वह तुमको ख़ुदा के रास्ते से भटकाकर तितिर बितिर कर देगें। यह वह बातें हैं जिनका ख़ुदा ने तुमको हुक्म दिया है ताकि तुम परहेज़गार बनो।"

आलोचना:

1. **दूसरे रास्तों से भटकाव**:
   - **इस आयत में कहा गया है कि केवल एक मार्ग पर चलना चाहिए। यह वैज्ञानिक और मानवाधिकारों के दृष्टिकोण से अस्वीकृत है क्योंकि हर व्यक्ति का जीवन और विश्वास व्यक्तिगत होता है। समाज में विविधता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का सम्मान किया जाना चाहिए। किसी एक विशेष विचारधारा या मार्ग को पूरी दुनिया पर थोपना अनैतिक और असंवेदनशील है।**
2. **स्वतंत्र विचार**:
   - **आयत में यह कहा गया है कि एक ही मार्ग पर चलो, लेकिन यह मानवता की स्वतंत्रता के खिलाफ है। समाज में विभिन्न धर्म, विश्वास और जीवन के तरीके होते हैं जिन्हें समझा और सम्मानित किया जाना चाहिए। स्वतंत्रता और विचारों का आदान-प्रदान हर व्यक्ति का अधिकार है।**

आयत 155 का अनुवाद: "फिर हमने जो नेक़ी करें, उस पर अपनी नेअमत पूरी करने के वास्ते मूसा को किताब (तौरात) अता फरमाई और उसमें हर चीज़ की तफ़सील (बयान कर दी) थी और लोगों के लिए हिदायत व रहमत है ताकि वह लोग अपने परवरदिगार के सामने हाज़िर होने का यकीन करें।"

आलोचना:

1. **आध्यात्मिक ग्रंथों का उपयोग**:

- **इस आयत में तौरत के बारे में कहा गया है कि वह हर चीज़ की तफ़सील और हिदायत प्रदान करती है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह सही नहीं है कि एक धार्मिक ग्रंथ सभी समस्याओं का समाधान दे सकता है, क्योंकि आधुनिक समय में विज्ञान और तर्क की मदद से समस्याओं को हल किया जाता है। धर्म और विज्ञान के बीच स्पष्ट अंतर होना चाहिए।**

निष्कर्ष:

इन आयतों का आलोचनात्मक विश्लेषण वैज्ञानिक, तर्कशास्त्र और मानवाधिकारों के सिद्धांतों के आधार पर किया गया है। इन आयतों में दी गई बातें केवल धार्मिक दृष्टिकोण से सही हो सकती हैं, लेकिन आधुनिक समाज, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सार्वभौमिक मानवाधिकारों के संदर्भ में इनकी वैधता असमर्थित है।

आयत 156 से 160 तक का आलोचनात्मक विश्लेषण:

आयत 156 का अनुवाद: "और ये किताब (कुरान) जिसको हमने (अब नाज़िल किया है) क्या है-बरक़त वाली किताब है, तो तुम लोग उसी की पैरवी करो (और ख़ुदा से) डरते रहो ताकि तुम पर रहम किया जाए।"

आलोचना:

1. **कुरान के बारे में दावा**:
   - **इस आयत में कुरान को एक "बरक़त वाली किताब" के रूप में प्रस्तुत किया गया है। हालांकि, यह दावा सार्वभौमिक रूप से वैज्ञानिक या तार्किक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं है। किसी भी ग्रंथ को "बरक़त वाली" कहना मात्र एक धार्मिक विश्वास है और इसका कोई ठोस वैज्ञानिक आधार नहीं है। किसी धार्मिक ग्रंथ की विशेषता को सार्वभौमिक रूप से सत्य साबित करने के लिए कठोर प्रमाण और विश्लेषण की आवश्यकता होती है।**
2. **पैरवी करने का निर्देश**:
   - **"पैरवी करो" का निर्देश व्यक्तित्व की स्वतंत्रता के खिलाफ हो सकता है। आधुनिक दृष्टिकोण में, हर व्यक्ति को अपने विश्वासों, विचारों और तर्क के आधार पर निर्णय लेने का अधिकार है। एक पुस्तक या धर्म के आधार पर किसी व्यक्ति को एक निश्चित मार्ग पर चलने की अनिवार्यता थोपना उसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के खिलाफ है।**

आयत 157 का अनुवाद: "और ऐ मुशरेकीन, ये किताब हमने इसलिए नाज़िल की कि तुम कहीं यह कह बैठो कि हमसे पहले किताब ख़ुदा तो बस सिर्फ दो ही गिरोहों (यहूद व नसारा) पर नाज़िल हुयी थी अगरचे हम तो उनके पढ़ने (पढ़ाने) से बेखबर थे।"

आलोचना:

1. **धर्मों की तुलना**:
   - **आयत यह बताती है कि कुरान को इसलिए नाज़िल किया गया क्योंकि यहूदियों और ईसाइयों के बाद अन्य समुदायों को भी एक सही मार्ग दिखाने की आवश्यकता थी। लेकिन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह बात सही नहीं है कि किसी विशेष धर्म के अनुयायी अन्य धर्मों की जानकारी से पूरी तरह से अनजान हो सकते हैं। मानव इतिहास में धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता की लंबी परंपरा रही है, और किसी एक ग्रंथ को सत्य मानने का विचार विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों के विचारों और तर्कों से असहमत है।**
2. **धार्मिक संकीर्णता**:
   - **यह विचार कि केवल एक धर्म या एक ग्रंथ ने सत्यता और मार्गदर्शन का दावा किया है, वह धार्मिक संकीर्णता को बढ़ावा देता है। इससे समाज में विविधता और सहिष्णुता को नुकसान हो सकता है।**

आयत 158 का अनुवाद: "या ये कहने लगो कि अगर हम पर किताबे ख़ुदा नाज़िल होती तो हम उन लोगों से कहीं बढ़कर राहे रास्त पर होते तो (देखो) अब तो यक़ीनन तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास एक रौषन दलील है (किताबे ख़ुदा) और हिदायत और रहमत आ चुकी तो जो शख़्स ख़ुदा के आयात को झुठलाए और उससे मुँह फेरे उनसे बढ़ कर ज़ालिम कौन है।"

आलोचना:

1. **ईश्वर द्वारा दलील देना**:

   - **आयत में यह कहा गया है कि जो लोग ईश्वर के संदेश को नकारते हैं, वे सबसे बड़े ज़ालिम हैं। लेकिन क्या किसी व्यक्ति को बिना उसकी सटीक समझ और तर्क के बिना दोषी ठहराना उचित है? आधुनिक विज्ञान और तर्क यह मानते हैं कि किसी के विश्वास का निर्णय उस व्यक्ति की सोच, अनुभव, और तर्क पर आधारित होना चाहिए, न कि एकतरफा रूप से उसे गलत ठहराकर।**

2. **तर्क और स्वतंत्रता**:
   - **यदि किसी व्यक्ति के पास विचार करने और तर्क करने की स्वतंत्रता नहीं है, तो उसे किसी धार्मिक ग्रंथ को स्वीकार करने के लिए दबाव डालना उस व्यक्ति की स्वतंत्रता और तर्कशीलता के खिलाफ होगा। केवल ईश्वर की ओर से भेजी गई किताब को सही मानने की बात स्वीकार करना, बौद्धिक स्वतंत्रता और सार्वभौमिक मानवाधिकारों के खिलाफ है।**

आयत 159 का अनुवाद: "बेशक जिन लोगों ने आपने दीन में तफरक़ा डाला और कई फरीक़ बन गए थे, उनसे कुछ सरोकार नहीं। उनका मामला तो सिर्फ ख़ुदा के हवाले है। फिर जो कुछ वह दुनिया में नेक या बद किया करते थे, वह उन्हें बता देगा।"

आलोचना:

1. **धर्म में विभाजन**:
   - **इस आयत में धर्म के विभाजन और मतभेदों की निंदा की गई है, लेकिन यह सिद्धांत भी सही नहीं है कि धर्मों और विश्वासों के बीच कोई भेदभाव न किया जाए। समाज में विविधता, विभिन्न विश्वास और दृष्टिकोण एक सामान्य बात है और किसी एक मत के लिए दूसरे मत को गलत ठहराना बौद्धिक और सामाजिक दृष्टिकोण से नकारात्मक हो सकता है।**
2. **विभिन्न धर्मों का आदान-प्रदान**:
   - **आयत में इस तरह से कहा गया है कि विभिन्न धार्मिक समूहों का "मामला केवल ख़ुदा के हवाले" है, लेकिन यह मानवीय दृष्टिकोण और संवाद के महत्व को नकारता है। विभिन्न धर्मों के बीच संवाद और विचारों का आदान-प्रदान समाज की समृद्धि के लिए आवश्यक है।**

निष्कर्ष:

इन आयतों का आलोचनात्मक विश्लेषण यह सिद्ध करता है कि धर्म और विश्वास के प्रति तर्कशक्ति और स्वतंत्रता का आदान-प्रदान महत्वपूर्ण है। कुरान को केवल "बरक़त वाली किताब" मानने का दृष्टिकोण, केवल एक धर्म के सत्य होने का विचार, और तर्क और स्वतंत्रता को नकारना आधुनिक समय में तर्क और

विज्ञान के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता। समाज में विविधता, सहिष्णुता, और स्वतंत्र विचारों का आदान-प्रदान अधिक महत्वपूर्ण है।

आयत 161 से 166 तक का आलोचनात्मक विश्लेषण:

आयत 161 का अनुवाद: "जो शख़्स नेकी करेगा तो उसको दस गुना सवाब अता होगा और जो शख़्स बदी करेगा तो उसकी सज़ा उसको बस उतनी ही दी जाएगी और वह लोग (किसी तरह) सताए न जाएगें।"

आलोचना:

1. **सवाब और सज़ा की अवधारणा**:
    - **आयत में यह कहा गया है कि अच्छे कर्मों का दस गुना सवाब मिलेगा और बुरे कर्मों की सज़ा उतनी ही दी जाएगी, जो एक निश्चित और निहित विचार है। लेकिन यह विचार सार्वभौमिक रूप से सही नहीं माना जा सकता। उदाहरण के तौर पर, किसी समाज में जो व्यक्ति एक अपराध करता है, उसे सिर्फ उस अपराध की सज़ा देना न्यायिक रूप से उचित हो सकता है, लेकिन यह कहना कि कर्मों का मूल्यांकन केवल गुणात्मक रूप से ही किया जाए, व्यक्ति की जटिल मानसिकता और परिस्थिति को नहीं समझता। मनोविज्ञान और नैतिकता यह मानती है कि किसी व्यक्ति के कर्मों को उसके व्यक्तिगत अनुभव, मानसिक स्थिति, और परिस्थितियों के आधार पर विश्लेषित किया जाना चाहिए, न कि केवल एक निर्धारित मानक के आधार पर।**
2. **दंड का निहित सिद्धांत**:
    - **यह विचार कि "बुरे कर्मों के लिए उतनी ही सज़ा दी जाएगी," न्याय के सिद्धांतों के तहत समस्याजनक हो सकता है। समाज में कई प्रकार के अपराध होते हैं, जिनके लिए केवल कड़ी सज़ा पर्याप्त नहीं होती। ऐसे में एक व्यक्ति के कर्मों के आधार पर उसे सीधे सज़ा देना न केवल न्यायिक दृष्टि से अनुचित हो सकता है, बल्कि मानवाधिकारों का भी उल्लंघन हो सकता है, जहां व्यक्ति की तर्कशक्ति, परिस्थिति, और मानसिकता को नजरअंदाज किया जाता है।**

आयत 162 का अनुवाद: "ऐ रसूल, तुम उनसे कहो कि मुझे तो मेरे परवरदिगार ने सीधी राह यानि एक मज़बूत दीन इबराहीम के मज़हब की हिदायत फरमाई है, बातिल से कतरा के चलते थे और मुषरेकीन से न थे।"

आलोचना:

1. **सिरफ एक "सीधी राह" का दावा**:
    - **आयत में यह कहा गया है कि एक "सीधी राह" है, जिसे मानना जरूरी है, लेकिन क्या केवल एक विशेष मार्ग को सही ठहराना सभी के लिए उपयुक्त है? दुनिया भर में कई तरह के विश्वास और धर्म हैं, और यह दृष्टिकोण अन्य विश्वासों को नकारने जैसा प्रतीत होता है। इसका तात्पर्य है कि केवल एक रास्ता है और बाकि सब गलत हैं, जो समावेशिता और धार्मिक सहिष्णुता के सिद्धांतों के खिलाफ है। आधुनिक सोच यह मानती है कि व्यक्ति को अपनी आध्यात्मिक यात्रा के लिए स्वतंत्रता होनी चाहिए।**
2. **धार्मिक विविधता का खंडन**:
    - **इस आयत का संदेश अन्य धार्मिक दृष्टिकोणों के प्रति असहमति पैदा कर सकता है। धर्मों की विविधता और विभिन्न विश्वासों का आदान-प्रदान सहिष्णुता और समानता के सिद्धांतों के विपरीत हो सकता है।**

आयत 163 का अनुवाद: "ऐ रसूल, तुम उनसे कहो कि मेरी नमाज़, मेरी इबादत, मेरा जीना, मेरा मरना सब ख़ुदा ही के वास्ते है, जो सारे जहाँ का परवरदिगार है।"

आलोचना:

1. **व्यक्तिगत स्वतंत्रता का उल्लंघन**:
    - **यह आयत किसी व्यक्ति के जीवन के हर पहलू को केवल एक धार्मिक उद्देश्य के तहत सीमित करती है, जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय के अधिकार का उल्लंघन हो सकता है। हर व्यक्ति को अपने जीवन और कर्मों के निर्णय लेने का अधिकार है, जो उसकी आस्था और तर्क पर आधारित हो। इस आयत के संदर्भ में यह विचार एक व्यक्ति को पूरी तरह से एक ही धार्मिक मार्ग पर चलने के लिए बाध्य करने का संकेत देता है, जबकि स्वतंत्र विचार और निर्णय का अधिकार हर इंसान का मूल अधिकार है।**

आयत 164 का अनुवाद: "और उसका कोई षरीक़ नहीं और मुझे इसी का हुक्म दिया गया है और मैं सबसे पहले इस्लाम लाने वाला हूँ।"

आलोचनाः

1. **धार्मिक संकीर्णता**:
   - **आयत में यह कहा गया है कि कोई भी "षरीक़" नहीं हो सकता, जो इस्लाम की सच्चाई को निराकार और निरपेक्ष रूप से स्वीकार करने का दबाव बनाता है। यह धार्मिक संकीर्णता को बढ़ावा देता है, और अन्य धार्मिक विश्वासों को नकारता है। आधुनिक समाज में यह मान्यता है कि हर व्यक्ति को अपने विश्वासों को चुनने और सम्मानित करने का अधिकार होना चाहिए, बिना किसी धार्मिक दवाब के।**

आयत 165 का अनुवादः "तुम पूछो तो कि क्या मैं ख़ुदा के सिवा किसी और को परवरदिगार तलाष करूँ हालाँकि वह तमाम चीज़ो का मालिक है और जो शख़्स कोई बुरा काम करता है उसका (वबाल) उसी पर है और कोई शख़्स किसी दूसरे के गुनाह का बोझ नहीं उठाने का फिर तुम सबको अपने परवरदिगार के हुज़ूर में लौट कर जाना है तब तुम लोग जिन बातों में बाहम झगड़ते थे वह सब तुम्हें बता देगा।"

आलोचनाः

1. **व्यक्तिगत जिम्मेदारी**:
   - **यह आयत कहती है कि किसी के कर्मों का फल उसी पर होगा, लेकिन इसके साथ यह भी कहा गया है कि दूसरे के कर्मों का बोझ नहीं उठाना होगा। हालांकि, यह विचार व्यक्तिगत जिम्मेदारी को मान्यता देता है, लेकिन समाज के संदर्भ में यह विचार कभी-कभी अनुपयुक्त हो सकता है। उदाहरण के तौर पर, सामूहिक जिम्मेदारी और समाज में साझा कल्याण के सिद्धांतों को नकारना, एक व्यापक और समृद्ध समाज की कल्पना से परे हो सकता है।**

आयत 166 का अनुवादः "और वही तो वह (ख़ुदा) है जिसने तुम्हें ज़मीन में (अपना) नायब बनाया और तुममें से बाज़ के बाज़ पर दर्जे बुलन्द किये ताकि वो (नेअमत) तुम्हें दी है उसी पर तुम्हारा इमतेहान करें उसमें तो षक ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार बहुत जल्द अज़ाब करने वाला है और इसमें भी शक नहीं कि वह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।"

आलोचनाः

1. **परीक्षण और परीक्षण का विचार**:

- ○ **यह आयत कहती है कि ईश्वर ने मानवता को विभिन्न स्तरों और अधिकारों में विभाजित किया है, ताकि वह अपने आशीर्वाद से उनका परीक्षण कर सके। हालांकि, यह विचार ”भगवान का परीक्षण” करने के बारे में एक स्पष्ट और आधिकारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, लेकिन यह व्यक्तिगत और सामाजिक अधिकारों के सिद्धांतों के खिलाफ हो सकता है। हर व्यक्ति को अपनी पहचान, अधिकार और न्यायपूर्ण अवसरों का समान वितरण होना चाहिए, न कि केवल एक स्वीकृत ”परीक्षण” के आधार पर।**

निष्कर्ष:

इन आयतों का आलोचनात्मक विश्लेषण यह साबित करता है कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समानता, और मानवाधिकारों का सम्मान महत्वपूर्ण है। धर्म का पालन व्यक्तिगत विश्वास और तर्क पर आधारित होना चाहिए, न कि किसी एक विशिष्ट मार्ग पर थोपने के रूप में। समाज में विविधता, सहिष्णुता, और न्यायपूर्ण अवसरों का वितरण एक समृद्ध और शांति प्रिय समाज के निर्माण में योगदान करता है।